वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जनवरी 2018

अंदर पढ़े...

- डेरा सच्चा सौदा विवादों के घेरे में
- चमत्कार से इलाज
- गौरी लंकेश को स्मरण करते हुए
- भारतीय सभ्यता के दौर में शिक्षा
- एवं अन्य स्थाई सतम्भ

20/-

ਆ ਉਡੀਏ, ਭਰੀਏ ਅੰਬਰੀਂ ਪਰਵਾਜ਼, ਪਰਖੀਏ ਪਰਾਂ ਨੂੰ, ਕਰੀਏ ਆਗਾਜ਼। ਗਿਆਨ, ਚੇਤਨਾ ਰਹੇ ਪਸਰਦੀ, ਮਿਟੇ ਹਨੇਰਾ, ਨਵਾਂ ਸਾਲ ਦਏ ਆਵਾਜ਼

हिन्दू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िए

अदम गोंडवी

'हिंदू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िए
अपनी कुर्सी के लिए जज़्बात को मत छेड़िए

हममें कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है
दफ़्न है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िए

गलतियाँ बाबर की थीं, जुम्मन का घर फिर क्यों जले
ऐसे नाजुक वक्त में, हालात को मत छेड़िए

हैं कहाँ हिटलर, हलाकू, जार या चंगेज़ खाँ
मिट गए सब, कौम की औकात को मत छेड़िये

छेड़िए इक जंग, मिल-जुल कर गरीबी के खिलाफ
दोस्त मेरे मज़हबी नग़मात को मत छेड़िए

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
अनुपम राजपुरा - 94683-89373
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

संकेतिका

विशेष लेख : **पृष्ठ संख्या**

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक, दिनांक **14-01-2018**, दिन रविवार को यमुनानगर में प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

आर.पी.गांधी - 93154 46140
सुखदेव - - 98963 64428

-नोट-

किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

बाबाओं का मायाजाल....

अभी राम रहीम, फलाहारी बाबा आदि की करतूतों से पर्दाफाश हो ही रहा था कि दिल्ली में वीरेंद्र देव दीक्षित के कारनामें मीडिया की सुर्खियां बनने लगे। विगत साल में अनेक बाबे अपनी करतूतों की वजह से चर्चित रहे, परंतु इनके कारनामें लगातार बढ़ते जा रहे हैं। स्थानीय स्तर पर काम करने वाले अनेक बाबाओं की लिस्ट को अगर जोड़ दिया जाए तो बेहद लम्बी हो जाती है। स्थानीय स्तर के बाबाओं के कारनामें नेशनल मीडिया में नहीं आते। तर्कशील सोसायटी इन सब का पता चलने पर अपने साधनों से पर्दाफाश करती रहती है।

बाबाओं का मायाजाल बिना रजनीतिज्ञों के वरदहस्त के नहीं पनप सकता। जैसे ही कोई बाबा अपनी ताकत को बढ़ाने लगता है, राजनीतिज्ञ इनकी शरण में जाने शुरू हो जाते हैं। पहले स्थानीय नेता और फिर राष्ट्रीय नेता इन सब की जी हजूरी में लग जाते हैं। बाबाओं की ताकत बढ़ने से ही विभिन्न किस्म के कुकृत्य बढ़ने लगते हैं।, जिसमें सबसे जयादा महिलाएं शिकार बनती हैं। जो समाज अपनी लड़कीं को पड़ौस में किसी लड़के से बात करने तक की इजाजत नहीं देता, अंधविश्वास से ग्रस्त होकर खुशी-खुशी उनको आश्रमों/डेरों की समर्पित कर देता है। आज देश के सभी बड़े डेरों/आश्रमों में साध्वियों के रूप में लाखों लड़कियों रह रही हैं। सामाजिक और राजनैतिक पार्टियों के साथ ही सरकार को संज्ञान लेना चाहिए कि सभी डेरों /आश्रमों पर खूफिया एजेंसियों की नज़र रखी जाए।

बाबागिरी के खिलाफ सख्त कानून बनाने की भी आवश्यकता है जिसके तहत हर किस्म के तांत्रिक, ओझा, ज्येतिषी व नाम दान देने वाले बाबाओं पर अंकुश लगाया जा सके। महाराष्ट्र में बने अंधविश्वास विरोधी कानून की तरह ही सभी राज्यों में ऐसे कानून बनाने की जरूरत है, जिसमें भोली-भाली जनता को गुमराह करने वालों पर शिकंजा कसा जाए। महाराष्ट्र में अंधविश्वाश विरोधी कानून बनने से लगभग पांच सौ बाबाओं पर केस बन चुके हैं। कईयों को जेल की हवा भी खानी पड़ी है।

बाबाओं द्वारा सबसे बड़ा काण्ड लोगों की सम्पतियां हड़पने का होता है और फिर महिलाओं का शोषण। इस विषय को इस कानून में जरूर शामिल किया जाना चाहिए ताकि ये तथाकथित बाबे भोली-भाली जनता की सम्पत्तियां न हड़प सकें।

तर्कशील सोसायटी और देश के अन्य राज्यों में विभिन्न नामों से कार्यरत रैशनलिस्ट संस्थाएं अपने स्तर पर बेहद प्रयास कर रही हैं कि लोगों में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार हो और लोग सरकारी सहयोग से समाज हित में अपने दायित्व को निभा सकें।

गतांक से आगे.....

धरती की कहानी

डा. प्रदीप

हरे भरे जंगल रेगिस्तान में बदल रहे हैं, लंदन, न्यूयार्क, ढाका तथा मुंबई समुद्र में डूब रहे हैं–अगर जंगल खत्म हो गए तो क्या होगा? आप कहेंगे कि जंगल के जीव खत्म हो जाएंगे। बात सिर्फ इतनी नहीं है, स्वयं इंसान का अस्तित्व भी खत्म हो जाएगा। इंसान यह बात जानता है, मगर वह खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। बड़ी–बड़ी कम्पनियां, उनकी सुरक्षा में तैनात सरकारें व अफसर जिनके हाथों में नीतियां बनाना तथा उन्हें लागू करवाना है, सब कुछ जानते हुए भी अंजान बने हुए हैं। न सिर्फ बड़े पैमाने पर जंगल काटे जा रहे हैं, बल्कि मेरे वायुमंडल को इतना ज्यादा गंदा कर दिया गया है कि हर स्थान जहरीला बन रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि बहुत से ऐसे स्थान जहां पहले बारिश होती थी, जब बारिश की कमी से जूझ रहे हैं। मेरे तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके चलते रेगिस्तान फैल रहे हैं, यानि कल तक जहां जंगल खड़े थे, खेती हो रही थी, वहां भी जमीन रेत के टीलों में बदल रही है। इसका यह दुष्परिणाम भारत में भी दिख रहा है, जहां रेगिस्तान राजस्थान की सीमाओं को लांघता हुआ पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश में फैल रहा है।

संसाधनों के नाजायज दोहन व वातावरण के जहरीले होने की वजह से हो रही तापमान की वृद्धि का दूसरा खतरनाक परिणाम ध्रुवों व पहाड़ों की बर्फ का पिघलना। वैज्ञानिकों का मानना है कि ध्रुव व पहाड़ों की बर्फ पिघलने की अगर मौजूदा रफ्तार बनी रही तो अगले 40–50 सालों में सारा साल बहने वाली नदियां बरसाती नदियों में तबदील हो जाएंगी, क्योंकि जिन पहाड़ों से ये नदियां सारा साल पानी लेकर आती हैं, जब उनकी सारी बर्फ पिघल जाएगी, तो स्वाभाविक है कि इनमें पानी केवल बरसात के मौसम में आएगा। इसी प्रकार ध्रुवों पर बर्फ पिघलने के बेहद खतरनाक परिणाम सामने आएंगे। जिन ध्रुवों पर इस वक्त लाखों वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में बर्फ की मोटी तहें जमा है, उसके पिघलने से यह सारा पानी समुद्र में चला जाएगा। इसके चलते समुद्र का जलस्तर इतना बढ़ जाएगा कि समुद्र के किनारे बसे अनेक बड़े-बड़े शहर जैसे लंदन, न्यूयार्क, ढाका, मुंबई डूब जाएंगे। समुद्रों महासागरों में स्थित अनेक द्वीपों का नामोनिशान तक नहीं रहेगा।

चंद लालची कम्पनियों की लूट का नुक्सान पूरी मानवता को उठाना पड़ेगा। कई करोड़ लोग बेघर हो जाएंगे। गंगा–यमुना जैसी नदियां जो करोड़ों लोगों के लिए सिंचाई तथा पीने का पानी उपलब्ध करवाती हैं, जब बरसाती नदियों में बदल जाएंगी, तो हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल में सूखे व अकाल के हालात पैदा हो जाएंगे।

तापमान में वृद्धि के चलते हर देश में फसलों के उत्पादन में जबरदस्त कमी आ जाएगी। वर्तमान समय में ही दुनिया की आधी आबादी को भरपेट खाना नहीं मिलता तो सोचिए उस वकत कया हालत होगी।

और यह सब चंद व्यक्तियों के लोभ, लालच व लूट की प्रवृत्ति के चलते हो रहा है। काश, इंसान वक्त रहते इस बात को समझ ले, ताकि उसके साथ–साथ इस जमीन पर पूरे प्राणी जगत का विनाश होने से बच जाए।

जब मैं इंसान के बारे में बताने ही लगी हूं तो कुछ और बातें भी साथ–साथ करती चलूं। इंसान का जन्म लगभग 10 लाख साल पहले हुआ। गांव–बस्ती बनाकर तो उसने सिर्फ 10 हजार साल पहले रहना शुरू किया। उससे पहले 200 करोड़ साल विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु तथा पेड़-पौधे अस्तित्व में रहे। हर प्राणी को मेरी मिट्टी, पानी और हवा से हर चीज बिना किसी भेदभाव के मिलती है। लेकिन इंसान ने इसमें भयंकर भेदभाव पैदा कर दिया। चंद लोगों ने मेरे गर्भ में छिपे तमाम संसाधनों जमीन, जंगल आदि पर अधिकार जताना शुरू कर दिया। कोई उनसे पूछे कि जमीन के नीचे जो सोना, चांदी, तेल, गैस मौजूद है, उसका मालिक कोई व्यक्ति या कम्पनी कैसे हो सकती है? जमीन के टुकड़े का मालिक कोई एक व्यक्ति कैसे हो सकता है, जबकि जमीन तो इंसान को प्रकृति की तरफ से उपहार है। मेरा जो भी है-जंगल, जमीन, खनिज पदार्थ, पानी सब कुछ तमाम प्राणियों के इस्तेमाल के लिए है, फिर ये सब किसी व्यक्ति की निजी सम्पति कैसे हो सकते है? लेकिन चंद लोगों ने अपनी ताकत का इस्तेमाल करते हुए व धोखाध ड़ी से इन सब चीजों पर अपना अधिकार जताना शुरू कर दिया।

मैं इसी आशा में जी रही हूं कि कभी तो इंसान को यह

बात समझ में आएगी और तब इन तमाम संसाधनों का इस्तेमाल चंद लोगों के मुनाफे के लिए न होकर पूरी मानवता के इस्तेमाल के लिए होगा।

लगता है कि अपनी कहानी कहते-कहते मैं इंसान की कहानी सुनाने लगी हैं। चलो वापिस अपनी कहानी पर लिए चलती हूं।

वायु मंडल, थल मंडल और जल मंडल-धार्मिक पुस्तकों में आपने पढ़ा होगा कि धरती के ऊपर स्वर्ग और नीचे पाताल लोक है। पाताल लोक का रास्ता समुद्र से होकर जाता है और स्वर्ग में देवता निवास करते हैं, वगैरह-वगैरह।

विज्ञान के वर्तमान युग में यह सब बातें मजेदार कहानियों से ज्यादा महत्व नहीं रखतीं। क्योंकि इंसान ने ऊपर नीचे हर जगह दूर-दूर तक खुद घूमकर या अपने यंत्रों की मदद से अच्छी तरह से देख लिया है। उसे न तो कहीं स्वर्ग दिखाई पड़ा और न ही कहीं पाताल लोक।

उसे जो दिखाई पड़ा, वह मैं बताती हूं।

थल मंडल-अगर आप मेरे किसी हिस्से में छेद करना करना शुरू करें और उस छेद को गहरा करते चलें तो क्या होगा? चूंकि मैं गोल हूं इसलिए सामान्य बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए इसका उत्तर हो सकता है कि यह छेद मेरे दूसरी तरफ चला जाएगा। अभी तक का जो वैज्ञानिक विकास हुआ है, उसके अनुसार आज यह काम कर पाना असंभव है, क्योंकि मेरा व्यास लगभग 12000 किलोमीटर है। यानि मेरे एक तरफ से मेरे केंद्र से होती हुई एक रेखा खींची जाए तो एक तरफ से दूसरी तरफ की दूरी 12000 किलोमीटर है। आपको मेरे अंदर छेद करने के लिए 12000 किलोमीटर लंबी सुरंग खोदनी पड़ेगी, लेकिन इंसान तो अभी तक मात्र चंद किलोमीटर गहराई तक ही जा पाया। इसलिए मेरे आर-पार छेद करना आज संभव नहीं है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह मेरी गहराइयों से अपरिचित है। मेरी बाहरी सतह से लेकर मेरे केंद्र तक की 6000 किलोमीटर की गहराइयों से क्या-क्या चीजें हैं, वे इंसान से छुपी नहीं हैं। ऐसा वह अपने अत्याधुनिक व संवेदनशील यंत्रों की मदद से कर पाया। इस ज्ञान के आधार पर मेरी पूरी संरचना को तीन हिस्सों में बांटा गया है।

1. क्रस्ट या भूपर्पटी 2. मैंटल 3. कोर

1. क्रस्ट या भूपर्पटी : यह मेरी सबसे बाहर की पट्टी है, जिसकी मोटाई 15 से 45 किलोमीटर की है। यह ठोस चट्टानों, रेत व बालू से बनी है। अपके सभी तेल के कुएं, आपके सभी पानी के कुएं, आपकी सभी खदाने जिनसे आप सोना, लोहा, कोयला, चांदी, तांबा प्राप्त करते हैं, इसी पट्टी में स्थित हैं।

वास्तव में जब मैं सूरज से अलग हुई थी, तब मेरा यह भाग भी उतना ही गर्म और गैसीय था, जितना कि सूरज, लेकिन धीरे-धीरे यह भाग ठंडा हो गया और फिर इतना ठंडा हो गया कि ठोस चट्टानों में तबदील हो गया। ऐसी पुरानी चट्टान जिसके बारे में वैज्ञानिक जान पाए हैं, 370 करोड़ साल पुरानी है, जो दक्षिण अफ्रीका में स्थित है। इस हिस्से के ठंडा पड़ने से वर्तमान महाद्वीपों की स्थिति बनी है। इसके बारे में मैं पहले बता चुकी हूं।

2. मैंटल : यह भूपर्पटी के अंदर का भाग है, जो लगभग 3000 किलोमीटर गहरा है। यह भाग बेहद गर्म है, जिसका तापमान लगभग 4 हजार डिग्री सेंटीग्रेड है। आप समझ सकते हैं इतने ज्यादा तापमान पर चीजें या तो गैस बन जाती हैं या तरल। स्वभाविक है यह भाग तरल लावे से बना है। जहां कहीं मेरी बाहरी पट्टी कमजोर होती है तो अंदर का लावा उस कमजोर पट्टी को फोड़कर बाहर आ जाता है। चूंकि अंदर लावा अत्यधिक दबाव में होता है, इसलिए यह बाहरी पट्टी को पूरी ताकत से फोड़ देता है और लावा तथा धुएं के बादल पूरी ताकत के साथ बाहर आ जाते हैं, जिसे आप ज्वालामुखी के नाम से जानते हैं।

3. कोर : यह मेरा सबसे अंदर वाला हिस्सा है। मैंटल से केंद्र तक लगभग 3000 किलोमीटर गहरा। यह मैंटल से भी ज्यादा गर्म है। यहां दबाव और भी ज्यादा है। यहां का तापमान 4 हजार सेंटीग्रेड से भी ज्यादा है।

अब आप भी जान गए हैं कि मेरी सतह से लेकर केंद्र तक कहां, क्या स्थित है। इसलिए सोचिए कि पाताल कहां है?

चट्टान, मिट्टी व बालू : आपने चट्टानें देखी होंगी, बेहद सख्त और मजबूत। भारत में कई स्थानों पर एक ही चट्टान को काटकर मंदिर बनाए गए हैं। आपने अजंता-ऐलोरा की गुफाओं के बारे में अवश्य सुना होगा। ये गुफाएं बेहतरीन कलाकारी का नमूना हैं। जहां एक ही चट्टान को तराश कर गुफा, मंदिर व मूर्तियां बनाई गई हैं।

आपने खेतों की मिट्टी भी अवश्य देखी होगी। नरम, मुलायम जिसे जैसे चाहो जिस मर्जी आकार में ढाल लो और फिर नदी/समुद्र किनारे की बालू रेत भी देखी होगी। मुट्ठी में पकड़ो तो भी हाथ से निकल जाए।

चट्टान, मिट्टी व बालू रेत-तीनों एक-दूसरे से बेहद भिन्न दिखाई देते हैं, लेकिन तीनों की रासायनिक संरचना एक ही है। चट्टानें ही टूट-टूट कर और हवा, पानी और

धूप की मार झेलते हुए मिट्टी और बालू रेत में बदल जाती है।

ये तीनों चीजें जिस रासायनिक पदार्थ से बनी है, उसका नाम है सिलीकॉन। मेरी संरचना में सबसे अधिक जो तत्त्व है, वह सिलीकॉन ही है। मेरे स्थल मंडल में ऐसे कुल तत्त्वों की संख्या 100 से ज्यादा है। 9 तत्त्व बहुतायत में मिलते हैं। इनके नाम हैं-1. सिलीकॉन 2. ऑक्सीजन 3. एल्युमीनियम 4. कार्बन 5. लोहा 6. कैल्शियम 7. सोडियमम 8 पोटाशियम 9. मैग्नीशियम

जलमंडल : 5 महासागरों तथा अनेक सागरों वाला मेरा जल मंडल लाखों जीव जंतुओं तथा वनस्पतियों का घर है। जितने प्रकार के जीव जंतु सूखे स्थल में रहते हैं। उससे ज्यादा किस्म के जीव सागरों-महासागरों में रहते हैं मेरी तमाम जल राशि का एक छोटा हिस्सा ही मीठे पानी का है। 97 प्रतिशत से ज्यादा जल खारा है। दुनिया का सबसे ऊंचा पहाड़ हिमालय पर्वत में माऊंट एवरेस्ट है, लेकिन यह पहाड़ भी समुद्र के अंदर डूब जाएगा। ऐसी गहरी जगह भी प्रशांत महासागर में है।

कल्पना कीजिए मेरे तमाम गड्डों, गहराइयों को पाट दिया जाए और पूरी जगह समतल बना दी जाए तो मेरी पूरी सतह 3 किलोमीटर गहरे पानी में डूब जाएगी। इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मेरे सागरों और महासागरों में कितना पानी है।

मेरे समुद्रों के अंदर गैस, तेल तथा अन्य खनिज पदार्थों व धातुओं के बेशुमार खजाने मौजूद हैं। उत्तरी ध्रुव के तेल पर कब्जा जमाने के लिए अभी से अमरीका, रूस और कनाडा में होड़ शुरू हो गई है और वे बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं कि तापमान में और ज्यादा वृद्धि हो, ताकि उत्तरी ध्रुव की बची-खुची बर्फ भी पिघल जाए, ताकि वे वहां खुदाई का काम शुरू कर सकें। इस प्रयास में रूस ने तो उत्तरी ध्रुव पर स्थित आर्कटिक महासागर के गहरे तल पर अपना झंडा गाड़ कर उस पर कब्जा भी जाहिर कर दिया।

कई बार तो मुझे इंसान पर हंसी आती है। इतने बड़े ब्राह्मण्ड में मेरा पिता सूरज एक छोटा सा तारा है। मैं सूरज से एक लाख गुणा छोटी हूं और मेरी जमीन पर दो अदने इंसान अगर इस बात पर लड़ें कि बड़ा कौन है तो आप ही बताईये क्या यह हंसने वाली बात नहीं है?. ...अरे, मैं फिर इंसान पर जा पहुंची! क्या करूं, इंसान है ही ऐसा। बुद्धिमान भी सबसे ज्यादा और मूर्खता में भी इसने कमी नहीं छोड़ी। चलो छोड़ो, मैं अपनी कहानी पर लौटती हूं।

मेरे समुद्रों का एक अलग ही संसार है। वहां के पेड़-पौधे, जीव-जंतु सभी सूखे स्थलों पर रहने वाले जीवों से अलग समुद्र में एक किलोमीटर से ज्यादा गहराई पर जहां हमेशा घुप अंधेरा रहता है, कहते हैं इतनी गहराई पर सूर्य की किरणें भी नहीं पहुंच पाती। इस घनघोर अंधेरे में हजारों किस्म की मछलियां रहती हैं और इन मछलियों की विशेषता ये है कि वे रोशनी छोड़ती हैं। अलग-अलग किस्म की रोशनियां। आपको ऐसा लगेगा कि आप किसी गांव को रात के अंधेरे में देख रहे हैं।

समुद्र के पानी में कई प्रकार के खनिज लवण घुले मिले हुए होते हैं, जिनमें सर्वाधिक मात्रा में साधारण नमक की है। वही, जिसे आप हर रोज खाने में इस्तेमाल करते हैं। पानी में आक्सीजन की मात्रा भी रहती है। अगर यह आक्सीजन न होती तो समुद्र के अंदर रहने वाले जीव जिंदा नहीं रह पाते, क्योंकि आक्सीजन जिसे प्राणवायु भी कहते हैं, मेरे जीवों के जिंदा रहने के लिए बहुत जरूरी है।

वायुमंडल : अब मैं तुम्हें वायुमंडल के बारे में बताती हूं जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि वायु के बिना मुझ पर जीवन संभव न होता। वायुमंडल कुछ और नहीं, बल्कि मेरे चारों तरफ वायु का रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन घेरा है, जोकि कंबल की तरह मुझे अपने में लपेटे हुए है। यह वायुमंडल न सिर्फ जीवों को सांस लेने के लिए आक्सीजन देता है, बल्कि मुझ पर जीवन के अनुकूल तापमान भी बनाए रखता है।

इस वायुमंडल में कई प्रकार की गैसें पाई जाती हैं, जिनमें मुख्यतः नाईट्रोजन 78.3 प्रतिशत, आक्सीजन 21 प्रतिशत, कार्बन डाईक्साइड 03 प्रतिशत तथा कुछ और गैसें भी हैं, परन्तु उनकी मात्रा न के बराबर है। हवाओं का यह आवरण मेरे चारों तरफ लगभग 2000 किलोमीटर की ऊंचाई तक है, फिर अंतरिक्ष तथा वायुमंडल को बांटने वाली कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं है। मेरी सतह से ऊपर की ओर जाते-जाते वायुमंडल अंतरिक्ष में विलीन हो जाता है।

मेरे पिता सूर्य के प्रकाश के बिना तो मैं जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती। पर क्या आप जानते हैं कि सूर्य के प्रकाश में बहुत खतरनाक अल्ट्रावॉयलेट यानि पराबैंगनी नामक किरणें भी होती हैं? जोकि मुझे भी मेरे साथी ग्रहों की तरह जीवन शून्य बना सकती हैं। अरे,

घबराये मत इन खतरनाक किरणों से बचाने की जिम्मेवारी भी मेरा वायुमंडल बखूबी निभा रहा है।

मेरे वायुमंडल की पांच विभिन्न परतें हैं, जिनके नाम हैं –

1. ट्रोपोसफीयर
2. स्ट्रेटोसफीयर
3. मीसोंसफीयर
4. थर्मोसफीयर
5. एक्सोसफीयर

मेरी सतह से लगभग 12 किलोमीटर की ऊंचाई तक वायुमंडल की ट्रोपोसफीयर नामक परत है। इसी परत में लगभग वायुमंडल की गैसों का 75 प्रतिशत पाया जाता है और हां यही एकमात्र परत है, जिसमें कोई जीव कुदरती तौर पर जीवित रह सकता है।

इससे अगली परत स्ट्रेटोसफीयर के नाम से जानी जाती है। इसमें एक और पतली परंतु अति महत्वपूर्ण परत पाई जाती है, जिसे ओजोन परत कहते हैं यही वह परत है, जो सूरज से आने वाली खतरनाक किरणों को सोख कर गैर हानिकारक किरणों को सतह तक आने देती है।

परंतु मनुष्य अपनी स्वार्थपूर्ति तथा मुनाफों के अकल्पनीय विस्तार के लिए आज इसी ओजोन परत का बैरी बन बैठा है। अपने कारनामों से इस परत को वो नुक्सान पहुंचा रहा है।

स्ट्रेटोसफीयर ट्रोपोसफीयर की अपेक्षा वायुमंडलीय हलचलों के हिसाब से शांत है। इसीलिए अधिकांश हवाई जहाज इसी परत में सफर करते हैं।

इसके बाद अगली परत है मीसोंसफीयर हालांकि इसका गैसीय घनत्व बहुत कम होता है, परन्तु अधिकांश उल्का पिंड इसी परत में आकर वायु से घर्षण के कारण भस्म हो जाते हैं, इन्हेंही हम अक्सर टूटता तारा कहते हैं।

मेरे वायुमंडल में इसके बाद थर्मोसफीयर नामक परत है। इस परत की खास बात यह है कि इसकी एक और परत है, जिसे ऑयनोसफीयर कहते हैं। आपने रेडियो पर गाने या समाचार तो अवश्य सुने होंगे। यह सारा प्रसारण आप इसी ऑयनोसफीयर परत के कारण पहुंचता है।

इस प्रकार मेरे वायुमंडल की सबसे बाहरी परत है एक्सोसफीयर जिसमें बहुत हल्की गैसें होती हैं, जो धीरे-धीरे अनंत अंतरिक्ष में विलीन हो जाती हैं।

वायुमंडल की विभिन्न-विभिन्न ऊंचाइयों पर तापमान की रेंज भी अलग-अलग है। यह तापमान की रेंज तथा गैसों का विभिन्न-विभिन्न ऊंचाइयों पर विभिन्न-विभिनन संयोजन ही मेरे वायुमंडल को अलग परतों वाला बनाता है। इस प्रकार जलमंडल, थलमंडल तथा वायुमंडल इन सब के सहयोग से मुझ पर जीवन की परिस्थितियां बनी तथा जीवन की उत्पत्ति हुई।

जीवन के लिए आवश्यक शर्तें : आप सभी जानते हैं कि दुनिया में दो प्रकार की चीजें हैं। पहली निर्जीव और दूसरी सजीव। इनमें फर्क यह होता है कि सजीव वस्तुएं पुनरुत्पादन यानि अपने जैसे नए जीव पैदा करती हैं, जबकि निर्जीव वस्तुओं में यह गुण नहीं होता। यह इन दोनों में सबसे बुनियादी फर्क है। जीवन के अन्य लक्षण हैं-जीव सांस लेते हैं, खाना खाते हैं बेकार पदार्थों का उत्सर्जन करते हैं, उनके जीवन के दौरान उनका विकास होता है, यानि वे फलते-फूलते हैं आदि-आदि।

पुराने जमाने में जब इंसान के पास ज्यादा ज्ञान नहीं था, वह मानता था कि भगवान किसी निर्जीव वस्तु में प्राण फूंकते हैं। यह प्राण आत्मा के रूप में शरीर में रहता है। अगर आत्मा शरीर से निकल जाए तो सजीव चीज मर जाती है। जीवन है ही इतनी जटिल चीज के बिना विज्ञान की उच्च्य स्तर की समझदारी के इसे समझा नहीं जा सकता।

लेकिन वर्तमान समय में इंसान जीवन के अनेक रहस्यों को सुलझा चुका है। कुछ महीने पहले प्रयोगशाला में वह एक नए किस्म का जीव पैदा करने में भी सक्षम हो गया। यह वक्त विज्ञान की बातों के विस्तार में जाने का नहीं है, इसलिए संक्षेप में इतना कहकर आगे बढ़ूंगी कि सजीव पदार्थों में भी वही तत्व होते हैं, जो निर्जीव पदार्थों में। कार्बन, आक्सीजन, फास्फोरस, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, कैल्शियम, सोडियम, पोटाशियम, कलोरीन, सल्फर आदि तत्व प्रकृति में प्रचूर मात्रा में मिलते हैं। सजीव प्राणी चाहे वो पेड़ पौधे हों या जीव जंतु, इन्हीं तत्वों से बने हैं। सजीव प्राणियों में ये तत्व विशेष रासायनिक के रूप में रहते हैं और इस विशेषता से ण्क नई विशेषता पैदा होती है। प्रकृति में उपस्थित तत्वों को लेकर ये विशेष रसायन अपने जैसे रसायन पैदा कर लेते हैं। यहीं से जीवन की शुरूआत होती है।

मेरे जन्म के कुछ सौ करोड़ साल पहले तक मेरे ऊपर जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। बहुत समय बाद

यानि लगभग 250 करोड़ साल बाद (मेरा जन्म लगभग 500 करोड़ साल पहले हुआ था) जीवन के शुरुआती चिन्ह बनने शुरू हुए। इसके लिए जो चीजें बहुत जरूरी थी, वे इस प्रकार हैं –

1. सूरज की रोशनी और गर्मी–न ज्यादा गर्मी और न ज्यादा सर्दी, ऐसा तापमान जीवन के बने रहने के लिए सर्वाधिक अनुकूल है। अगर रोशनी नहीं है, तो भी ठंउ व अंधेरे में जीवन के पैदा होने की संभावना नहीं रहती।

2. पानी–सूरज की उपयुक्त रोशनी व गर्मी के बाद ये सबसे महत्वपूर्ण चीज है। मेरे ऊपर पहले पानी में बेहद सूक्ष्म जीवों के रूप में जीवन की उत्पत्ति हुई थी। पानी दो तत्वों से मिलकर बना है। दो हिस्से हाइड्रोजन और एक हिस्सा आक्सीजन मिलकर पानी बनता है।

3. आक्सीजन–इसे प्राण वायु भी कहते हैं। इसी से इसके महत्व के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है। अगर हवा में आक्सीजन न रहे तो मनुष्य एक मिनट के लिए भी जिंदा नहीं रह सकेगा।

आरंभिक किस्म के जीवों से कई किस्म के पौधों का जन्म हुआ। पौधे ऐसे जीवित प्राणी हैं, जो पानी व सूरज की मदद से अपना भोजन खुद पैदा कर सकते हैं। जीव जंतुओं में यह क्षमता नहीं होती। वे पौधे खाकर या अन्य जीव जंतुओं को खाकर अपना पेट भरते हैं।

इस प्रकार मेरे ऊपर जीवन प्रक्रिया शुरू हो गई है। आरंभिक किस्म के जीवों से ज्यादा जटिल किस्म के जीव बने, उसके बाद उससे जटिल जीव। मानव सबसे आखिर में पैदा हुआ। अगर मेरे जन्म से लेकर अभी तक के समय को 24 घंटों में बांट दिया जाए तो इंसान का जन्म मेरे ऊपर मात्र एक घंटे पहले हुआ है।

क्या मेरे अलावा किसी और भी ग्रह पर जीवन है?

यह सवाल हमेशा से ही इंसान की जिज्ञासा का विषय बना रहा है। पुराने जमाने में कहते थे कि चंद्रमा पर एक बुढ़िया बैठी चरखा कात रही है। वैज्ञानिकों को वह बुढ़िया कहीं दिखाई नहीं दी। दरअसल चांद पर हवा ही नहीं है और बिना हवा कोई इंसान कैसे जिंदा रह सकता है। इसलिए यह बात महज किस्से कहानियों की बात थी। 30–40 साल पहले उड़न तश्तरियों के खूब चर्चे चलते थे। लोग इस तरह की बात करते थे कि इन उड़न तश्तरियों में दूसरे ग्रह के प्राणी आते हैं। कईलोगों ने तो इन प्राणियों को देखने के दावे भी किए। बाद में अमरीका की खुफिया एजेंसियों ने स्पष्ट किया कि ये उड़न तश्तरियां असल में उनके टोही विमान थे, जो दूसरे देशों की जासूसी करने के लिए छोड़े जाते थे और लोग शक न करें इसलिए उनके साथ दूसरे ग्रहों के प्राणियों के रहस्य का लबादा डाल दिया गया। इस प्रकार ये बात भी झूठी साबित हुई।

वैज्ञानिकों को लंबे समय तक उम्मीद रही कि शायद मंगल पर किसी तरह का जीवन हो सकता है। क्योंकिवह भी मेरी तरह एक ऐसा ग्रह है, जहां न ज्यादा गर्मी है न ज्यादा सर्दी। लेकिन अभी तक जो भी जानकारी वहां से प्राप्त हुई है, उसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि वहां वर्तमान में किस किस्म का जीवन है। वैज्ञानिकों को वहां पानी की मौजूदगी के निशान अवश्य मिले हैं। हो सकता है आने वाले कुछ सालों में वहां वर्तमान या अतीत के किसी समय में पनपे जीवन के कुछ चिन्ह मिल जाएं, लेकिन ये प्राणी निश्चित तौर पर उन प्राणियों से विकसित अवस्था में नहीं होंगे जो मेरे ऊपर लगभग 250 करोड़ साल पहले मौजूद थे। ये प्राणी एक कोशिकीय सूक्ष्म किस्म के जीव थे। मंगल ग्रह पर बड़े प्राणी या बड़े–बड़े पेड़ पौधों के होने की संभावना नहीं है। सौर मंडल के किसी अन्य ग्रह–उपग्रह पर जीवन की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि वे या तो बेहद ठंडे हैं या बेहद गर्म। लेकिन इसका अर्थ ये नहीं है कि ब्राह्माण्ड में मेरे अलावा कहीं जीवन नहीं। करोड़ों–अरबों तारों के ग्रह–उपग्रह हैं। ऐसा कैसे हो सकता है कि उनमें से किसी पर भी ऐसी परिस्थितियां न हों कि उस पर जीवन पनप सके। इस चीज की प्रबल संभावना है कि कहीं दूर इसी आकाश गंगा में किसी दूसरी आकाश गंगा में निश्चित तौर पर कोई ऐसा तारा होगा और उसके ग्रह अथवा उपग्रह पर ऐसी परिस्थितियां होंगी, जिन्होंने जीवन पैदा किया होगा। जरूरी नहीं वहां इंसान या स्तनपायी या रीढ़ की हड्डी वाले जीवों जैसे जीव हों या फिर हमारे पेड़ों जैसे पेड़ हों। हो सकता है कि वहां अभी भी बेहद सूक्ष्म जीव हों या यह भी हो सकता है कि वहां इंसान से भी ज्यादा बुद्धिमान प्राणी का अस्तित्व हो।

फिलहाल यह सब संभावनाएं और अनुमान हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

विभिन्न धार्मिक मत–यहूदी व इसाई धर्म के अनुसार लगभग 6 हजार साल पहले ईश्वर ने इस धरती को पैदा किया। ईश्वर ने 6 दिन यानि सोमवार से लेकर शनिवार तक पृथ्वी, समुद्र, थल मंडल, पानी के जीव, थलीय जीव पेड़ पौधे तथा इंसान को पैदा किया। फिर 7वें दिन उसने

विश्राम किया। इस्लाम भी मेरे जन्म के विषय में लगभग ऐसी ही बात करता है। हिन्दू धर्म के अनुसार विष्णु भगवान क्षीर सागर में शेषनाग पर विराजमान हैं। विष्णु भगवान की नाभि से ब्रह्मा का जन्म हुआ। ब्रह्मा ने फिर इस सृष्टि को रचा। यह काम लाखों वर्ष पहले हुआ। सिख धर्म के अनुसार भगवान ने लाखों सूरज, लाखों तारे और लाखों धरतियां बनाई। उसका कोई पार नहीं पा सका।

सैंकड़ों सालों तक लोग धर्म ग्रंथों की इन्हीं बातों पर विश्वास करते रहे। उनका विश्वास इतना दृढ़ था कि इससे विपरीत बात कहने वाले लोगों को वे घृणा और शंका की नजर से देखते थे और अक्सर उन्हें ईश्वर की निंदा के जुर्म में मौत की सजा सुना दी जाती थी।

जब कापरनिक्स नामक वैज्ञानिक ने यह कहा कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केंद्र में नहीं है, बल्कि पृथ्वी खुद सूरज के चारों ओर चक्कर लगाती है, तो चर्च ने कापरनिक्स का विरोध किया और कापरनिक्स की जान को खतरा पैदा हो गया। इसी तरह गैलीलियो को यह कहने के लिए माफी मांगनी पड़ी थी कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है न कि सूरज पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। आप उन बहादुर वैज्ञानिकों के बारे में सोचिए, जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए सच्चाई और तर्क के रास्ते को नहीं छोड़ा। यही कारण है कि आज तीसरी-चौथी कक्षा का बच्चा भी यह पढ़ता है कि धरती गोल है और सूरज के चारों ओर घूमती है।

सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण-सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण प्राकृतिक घटनाएं हैं, लेकिन पुराने जमाने के लोग इसके बारे में बहुत अजीब-अजीब सी बातें सोचते थे। चूंकि वे विचार आज तक चले आ रहे हैं। इसलिए उन अजीबों गरीब बातों को मानने वाले लोगों की आज भी कमी नहीं हैं।

हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र शहर में सूर्य ग्रहण पर बड़ा भारी मेला लगता है। जब भी सूर्य ग्रहण लगता है। कुरुक्षेत्र में लाखों लोग इक्ट्ठे होते हैं। वे पूजा-पाठ करते हैं, दान करते हैं और सरोवरों में स्नान करते हैं। वे मानते हैं कि ग्रहण के समय खाने-पीने की सभी चीजें अपवित्र हो जाती हैं।

हिंदु धर्म के अनुसार राहु और केतु दो राक्षस हैं (इन्हें नवग्रहों में दर्जा प्राप्त है) ये राक्षस कभी-कभार क्रोधित होकर सूरज को अपने मुंह में डाल लेते हैं। इसकी वजह से सूरज हमें दिखना बंद हो जाता है या आंशिक रूप से दिखता है। इसी प्रकार अगर राहू-केतु चंद्रमा को अपने मुंह में डाल लेते हैं, तो सूरज जैसी हालत चंद्रमा की हो जाती है और उसे चंद्र ग्रहण कहा जाता है।

लेकिन वैज्ञानिकों ने बहुत पहले से ही सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के असली कारणो को जान लिया, यह तो आप जानते ही हैं चंद्रमा मेरे चारों ओर घूमता है और मैं सूरज के चारों ओर। इस कारण घूमते-घूमते अक्सर ऐसा हो जाता है कि सूरज, चंद्रमा और मैं एक सीध में आ जाते हैं ऐसी स्थिति आ जाती है कि चंद्रमा सूरज व मेरे बीच आ जाता है। ऐसी स्थिति में सूरज से आने वाली किरणें चंद्रमा से टकरा जाती हैं और वो मेरे तक नहीं पहुंच पाती। जैसे बादल सूरज को ढक लेते हैं या पेड़ के पत्ते सूरज को ढक लेते हैं। इसी प्रकार चंद्रमा सूरज को ढक लेता है। जैसे पत्तों की छाया आपके ऊपर पड़ती है ऐसे ही चंद्रमा की छाया मेरे ऊपर पड़ती है। चूंकि चंद्रमा आकार में तुलनात्मक तौर पर छोटा है। इसलिए उसकी छाया मुझे पूरी तरह ढक नहीं पाती। यही कारण है कि जिस वक्त किसी एक जगह सूर्य ग्रहण लगा होता है, उसी वक्त किसी दूसरे देश में आपको पूरा सूर्य दिखाई दे रहा होताहै। वहां सूर्य ग्रहण नहीं होता।

थोड़ी देर बाद चंद्रमा सूरज के सामने से हट जाता है और पुनः आपको पूरा सूरज दिखना शुरू हो जाता है।

अब आप कल्पना कीजिए कि आप अंतरिक्ष में हैं। अंतरिक्ष में हमेशा कोई न कोई जगह ऐसी रहेगी जहां आपके और सूरज के बीच चंद्रमा होगा, ऐसी जगह आपको सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। अगर आप चंद्रमा की परछाई के साथ-साथ चलते रहेंगे, तो आपको हमेशा सूर्य ग्रहण दिखाई देता रहेगा।

इसी प्रकार जब चंद्रमा और सूरज के बीच में आ जाती हूं तो चंद्रमा पर मेरी छाया पड़ने लगती है। इसलिए आपको चंद्रमा दिखाई देना बंद कर देता है। इसे आप चंद्र ग्रहण बोलते हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि आपको राहू-केतु का डर दिखाकर कुछ लोग कैसे अंधेरे में रखते हैं। सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण डरने का विषय नहीं है, बल्कि प्रकृति की दूसरी अनेक घटनाओं की तरह उसे देखने, उसका आनंद उठाने का विषय है।

.......समाप्त

★★★

मिथ्या-विश्वास

कर्नल इंगरसोल

मिथ्या-विश्वास किसे कहते हैं ?

प्रमाण के बावजूद अथवा बिना किसी प्रमाण के विश्वास करना। एक रहस्य को दूसरे रहस्य से समझाना। यह विश्वास करना कि संसार में जो कुछ होता है, वह यों ही अकस्मात होता है। कार्य और कारण के वास्तविक संबंध की अवहेलना करना। यह मानना कि प्रकृति किसी विचार, उद्देश्य अथवा योजना के अनुसार कार्य करती है। यह मानना कि चेतन से जड़ की उत्पत्ति हुई है और उसी का उस पर अधिकार है। पदार्थ से पृथक शक्ति में अथवा शक्तिरहित पदार्थ में विश्वास करना। चमत्कारों, मंत्रों, जादू-टोनों, स्वप्नों और भविष्यवाणियों में विश्वास करना प्रकृति से परे किसी शक्ति में विश्वास करना।

मिथ्या-विश्वास की नींव में अज्ञान है। उसकी दीवारें अंध-श्रद्धा से बनी हैं और उसका गुंबद व्यर्थ आशा से। मिथ्या-विश्वास अज्ञान की संतान और दुख-दर्द की मां है।

लगभग हर मस्तिष्क को मिथ्या-विश्वास कुछ न कुछ मेघाच्छन्न अवश्य किए रहता है।

एक स्त्री के हाथ से बरतन साफ करने का कपड़ा (जूना) गिर जाता हैं। वह बोल उठती है-कोई आ रहा है।

अधिकांश लोग स्वीकार करेंगे कि कपड़े के गिरने और अतिथियों के आने में संबंध नहीं। जो कपड़ा गिरा है, वह किसी अनुपस्थित व्यक्ति के मन में यह इच्छा पैदा नहीं कर सकता कि उसे यात्रा करनी चाहिए और विशेष रूप से उसी घर में आना चाहिए, जिस घर में कपड़ा गिरा है। कपड़े के गिरने और घटना में किसी प्रकार का संबंध नहीं।

आदमी अपनी बाईं ओर नए चंद्रमा को देखता है और कह उठता है-यह अपशकुन है।

चंद्रमा को दाईं या बाईं ओर देखना अथवा न देखना चंद्रमा पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकता और उसके दिखाई देने अथवा न दिखाई देने का पृथ्वी की किसी चीज पर कोई असर नहीं पड़ सकता। निश्चय से बाईं ओर दिखाई देने का किसी चीज पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। यदि चंद्रमा दाईं ओर दिखाई दिया होता, तो भी प्रकृति की सभी वस्तुएं जैसी की तैसी ही रहतीं। हम चंद्रमा के बाईं ओर दिखाई देने का देखने वाले पर कोई बुरा प्रभाव पड़ता नहीं देखते।

एक लड़की फूल के पत्तों को गिनती है-एक, वह आता है, दो, वह ठहरता है, तीन, वह चाहता है, चार, वह विवाह करता है, पांच, वह चला जाता है।

निश्चय से फूल के उगने और उसके पत्तों की संख्या को इस लड़की के विवाह से कुछ लेना-देना नहीं और न कोई ऐसी प्रेरक शक्ति ही हो सकती है, जिसने उस लड़की से वही पुष्प-विशेष चुनवाया। इसी प्रकार किसी सेब के बीजों की गिनती से किसी भी तरह यह निर्णय नहीं निकाला जा सकता कि किसी व्यक्ति का भविष्य सुख-पूर्ण होगा अथवा दुख-पूर्ण।

हजारों लोग अच्छे-बुरे दिनों में, संख्याओं में, चिन्हों में तथा नगीनों में विश्वास करते हैं।

बहुत से लोग शुक्र को एक खराब दिन समझते हैं-यात्रा आरंभ करने के लिए, शादी करने के लिए अथवा किसी काम में रुपया लगाने के लिए। इसका जो कारण बताया जाता है कि वह इतना ही कि शुक्र खराब दिन है।

यदि शुक्र के दिन समुद्र यात्रा की जाए तो किसी दूसरे दिन यात्रा करने की अपेक्षा उसका समुद्री हवाओं अथवा लहरों पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। शुक्र के दिन को खराब दिन मानने का एकमात्र कारण यही है कि वह खराब दिन माना जाता है।

इसी प्रकार बहुत से लोग यह जानते हैं कि तेरह जनों का एक साथ मिलकर खाना खतरनाक है। यदि तेरह संख्या खतरनाक है, तो छब्बीस दुगुनी खतरनाक होनी चाहिए और बावन चौगुनी।

कहा जाता है कि तेरह में से एक आदमी साल के अंदर अवश्य मर जाएगा। तेरह और प्रत्येक आदमी के हाज में अथवा तेरह और प्रत्येक आदमी के रोग में क्या संबंध है? यदि हम संख्या का ही ख्याल करें, तो तेरह की बजाए यदि चौदह आदमी एक साथ खाएं तो इस बात की अधिक संभावना है कि उनमें से एक-एक साल में मर जाए।

यदि नमक की बोतल गिर पड़े तो बहुत खराब है, किंतु यदि सिरके की बोतल ढुलक जाए, तो कुछ हर्ज नहीं। नमक इतना निष्ठुर और सिरका इतना क्षमाशील क्यों है?

यदि सिनेमा-गृह में प्रवेश करने वाला पहला आदमी आंखों का बैहंगा है, तो दर्शकों की संख्या कम रहेगी और तमाशा असफल रहेगा। किसी आदमी की आंख का जनवरी-फरवरी होना, सिनेमा जाने वाले लोगों की इच्छा में परिवर्तन कैसे ले आता है अथवा सिनेमा जाने वालों की संख्या बैहंगी आंख वालों को ही सर्वप्रथम कैसे भेज देती है? जहां तक हम देख सकते हैं इस तथाकथित कार्य-कारण में किसी प्रकार का संबंध नहीं।

एक खास किस्म का नगीना अंगूठी में लगा रहने से आदमी के दुर्भाग्य का कारण होता है और दूसरा खास किस्म का आदमी के सौभाग्य का। ये पत्थर किस प्रकार आदमी के भविष्य को प्रभावित करते हैं और इनके कारण किस प्रकार आदमी के प्रयत्न विफल हो जा सकते हैं, कोई नहीं बता सकता।

इस प्रकार हजारों शकुन और अपशकुन हैं, भाग्य और दुर्भाग्य की बातें हैं, किंतु जो बुद्धिमान हैं, जो विचारमान हैं, वे जानते हैं कि ये सभी बेहूदा मिथ्या-विश्वास के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

अब हम दूसरी बात लें-

शताब्दियों तक यह विश्वास किया जाता रहा है कि सूर्य-ग्रहण और चंद्र-ग्रहण बीमारी और अकाल के अग्र-सूचक हैं और पुच्छल-तारे राजाओं की मृत्यु, जातियों के विनाश और युद्ध या प्रेम की पूर्व सूचना दे देते हैं। आकाश के दृश्य-विशेष हमारे पूर्वजों के मन में भय का संचार कर देते थे। वे अपने घुटनों के बल झुककर प्रार्थनाओं और बलिदानों के द्वारा उन खतरों से बचने का भरसक प्रयत्न करते थे। जब वे आंखें बंद करके दैवी सहायता के लिए प्रार्थना करते थे, तो उनके चेहरे भय से सफेद हो जाते थे। पादरी, जो परमात्मा से उतने ही कम या अधिक परिचित थे, जितने कि वे अब हैं, जानते थे कि सूर्य-ग्रहण और चंद्र-ग्रहण का असली अर्थ क्या हैं वे जानते थे कि परमात्मा की क्षमाशीलता समाप्त-प्रायः है। वे जानते थे कि अब परमात्मा अपनी क्रोध की तलवार को तेज कर रहा है और यदि लोग उससे अपनी रक्षा करना चाहते हैं तो उसका केवल एक ही उपाय है कि वे पादरी की आज्ञाओं का पालन करें, माला जपें और अपनी दक्षिणा को दुगुना कर दें।

भूकंपों और झंझावातों ने पादरियों की पेटियों को भर दिया। विपत्तियों के बीच जो परम कंजूस था, उसने भी अपने बटुवे को खोला। सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहणों के अंधकार में चोरों और डाकुओं ने अपनी लूट में भगवान को हिस्सेदार बनाया। गरीब, ईमानदार तथा भोली लड़कियों को, जब याद आया कि वे प्रार्थना करना भूल गई थीं, तो भगवान के हृदय को कठोर होने से बचाने के लिए अपनी थोड़ी-सी कमाई भी दे डाली।

अब हम जानते हैं कि आकाश के इन चिन्हों को भी जातियों और व्यक्तियों के भविष्य से कुछ लेना-देना नहीं। उन्हें जिस प्रकार दीमक की बांबी, शहद की मक्खियों के छत्तों और कीड़े-मकौड़ों के अंडों से कुछ लेना-देना नहीं। उसी प्रकार उन्हें आदमियों से भी कुछ लेना-देना नहीं। अब हम

जानते हैं कि यदि पृथ्वी पर एक भी आदमी न होता, तो भी आकाश के वे चिन्ह, ग्रहण और पुच्छल-तारे और गिरने वाले तारों का यही बरताव होता। अब हम जानते हैं कि ग्रहण लगने का निश्चित समय पहले से जाना जा सकता है।

कुछ ही समय पहले यह विश्वास था कि कुछ बेजान वस्तुएं रोगियों के रोग दूर करने का काम करती हैं-धर्मात्माओं की हड्डियां, गंदे रहने वाले महात्माओं के गंदे कपड़ों से फाड़े गए चीथड़े, शहीदों के बाल, ईसा को जिस सूली पर चढ़ाया गया था उस सूली के जीर्ण-शीर्ण लकड़ी के टुकड़े और जंग लगे हुए लोहे के मेंखे, महात्माओं के दांत और नाखून और दूसरी हजार पवित्र चीजें।

एक पेटी को जिसमें हड्डियां, चीथड़े और लकड़ी का टुकड़ा अथवा कुछ पवित्र बाल रखे हों, चूमने से रोगियों के रोग दूर हो जाते थे, शर्त यह कि चुम्बन से पहले या बाद उस पेटी में 'चर्च' के लिए कुछ डाल अवश्य दिया जाए।

किसी रहस्यपूर्ण ढंग से हड्डी, चीथड़े अथवा लकड़ी के टुकड़े का गुण बक्से में से निकलकर श्रद्धावान रोगी के शरीर में पहुंच जाता था और भगवान के नाम पर भूत-प्रेतों को भगा देता था जो कि वास्तविक बीमारी थे।

यह हड्डियों, चीथड़ों और पवित्र बालों के सामर्थ्य में विश्वास एक-दूसरे विश्वास में से पैदा हुआ था-भूत-प्रेतों को ही तमाम रोगों का जनक मानने के विश्वास में से। पागलों के सिर भूत-प्रेत आए हैं, ऐसा समझा जाता था और दिमाग के रोगियों के सिर पर शैतान चढ़ा है। संक्षेप में हर मानवी-रोग नरक की शक्तियों के द्वेष का परिणाम था। यह विश्वास लगभग सर्व-व्यापक था। हमारे समय में भी करोड़ों आदमी पवित्र हड्डियों में विश्वास करते हैं।

लेकिन आज कोई भी समझदार आदमी भूत-प्रेत के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता और कोई समझदार आदमी यह नहीं मानता कि भूत-प्रेत बीमारी ला सकते हैं। इसी के परिणामस्वरूप कोई समझदार आदमी यह विश्वास भी नहीं करता कि पवित्र हड्डियां या चीथड़े, पवित्र बाल या लकड़ी के टुकड़े रोग को भगा सकते हैं अथवा रोगी के पीले चेहरे पर स्वास्थ्य की सुर्खी ला सकते हैं।

आज का समझदार आदमी जानता है कि एक महात्मा की हड्डी में एक पशु की हड्डी की अपेक्षा कुछ विशेषता नहीं होती, एक भीख मांगने वाले से प्राप्त चीथड़े में और एक महात्मा के वस्त्र-खंड में कुछ अंदर नहीं और एक घोड़े का बाल किसी रोगी के रोग को उतनी ही जल्दी दूर कर सकता है, जितनी जल्दी एक धार्मिक शहीद का बाल। अब हम जानते हैं कि जितने भी धार्मिक-अवशेष हैं, वे सभी धार्मिक बेहूदगियां हैं और जो लोग उनका उपयोग करते हैं। वे प्रायः बेईमान हैं और जो उन पर विश्वास करते हैं, वे लगभग जड़भरत हैं।

यह ताबीजों, मंत्रों-तंत्रों तथा भूत-प्रेतों में विश्वास सीधा-सादा मिथ्या-विश्वास है।

हमारे पूर्वज इन धार्मिक अवशेषों को, रोगों को भगा सकने वाली औषधियां नहीं मानते थे। वे मानते थे कि भूत-प्रेत आदि पवित्र-वस्तुओं से भयभीत रहते हैं। एक महात्मा की हड्डी उन्हें भगा देती है, वास्तविक क्रास का एक टुकड़ा उन्हें डरा देता है और जब किसी आदमी पर पवित्र अभिमंत्रित जल का सिंचन कर दिया जाता है, तो वे तुरंत उसके घर की सीमा से बाहर चले जाते हैं। इस प्रकार ये भूत-प्रेत धार्मिक घंटियों की आवाज से, पवित्र मोमबत्तियों के प्रकाश से और सबसे बढ़कर पवित्र 'क्रास' से भयभीत होते हैं।

उन दिनों पुरोहित-पादरी रुपए के लिए मछुआरे थे और इन 'पवित्र' अवशेषों को वे मछली पकड़ने के कांटे पर लगाए गए मांस के टुकड़े की तरह उपयोग में लाते थे।

2

अब एक कदम आगे चलें-

यह भूत-प्रेत और शैतान के अस्तित्व में विश्वास एक-दूसरे मिथ्या-विश्वास का आधार बन गया-जादू-टोने में विश्वास।

लोगों का यह विश्वास था कि शैतान किसी की जान के बदले में कुछ चीजें दे सकता है-बूढ़े को तरुणाई, शत्रु से बदला, धन और पद। जीवन की सभी अच्छी चीजों पर शैतान का अधिकार है। यदि कोई शैतान के आकर्षण से बचा रहे तो उसे परलोक में लाभ होता था, किंतु शैतान इस लोक में पुरस्कृत करता था। इस जादू-टोने में विश्वास के कारण संसार को कितना कष्ट भुगतना पड़ा, इसे कोई भी अपनी कल्पना द्वारा चित्रित नहीं कर सकता।

जरा उन दिनों की कल्पना करो, जब प्रत्येक घर मिथ्या-विश्वास और भय से भरा था, जब दोषारोपण का मतलब निश्चित रूप से दंडित होना होता था, जब निरपराधी बनने के प्रयत्न का मतलब अपराध की स्वीकृति लिया जाता था और जब ईसाइयत का दिमाग ही खराब था।

अब हम जानते हैं कि जितने भी कष्ट सहे गए, वे सभी मिथ्या-विश्वास का परिणाम थे। अब हम जानते हैं कि जितना भी दुख-दर्द झेला गया वह अज्ञान से ही पैदा हुआ।

एक कदम आगे चलें-

हमारे पूर्वज चमत्कारों में विश्वास करते थे। घटनाओं के कोई प्राकृतिक कारण नहीं होते थे। एक शैतान ने कुछ चाहा और वह हो गया। जिस आदमी ने अपने सिर पर शैतान को उठा लिया, उसके कुछ हाथ-पैर हिलाने से, चंद विचित्र शब्द उच्चारण करने मात्र से ही कोई घटना घट जाती थी। प्राकृतिक कारणों में किसी का विश्वास ही नहीं था। आधार ही नहीं था-तर्क ने तख्त खाली कर दिया था। अंधविश्वास ने झूठ को वाणी और पद दे दिए थे, जब कि गूंगी और लंगड़ी वास्तविक सच्चाइयां पीछे रह गई- न उनकी ओर किसी ने ध्यान दिया, न उनका किसी ने लेखा-जोखा रखा।

चमत्कार क्या है ?

प्रकृति के स्वामी द्वारा प्रकृति-नियम से असंबंधित किसी भी बात का किया जाना। यही चमत्कार की एकमात्र सच्ची परिभाषा है।

यदि कोई आदमी एक ऐसा सम्पूर्ण वृत्त खींच सके, जिसका व्यास उसकी परिधि का ठीक आधा हो तो वह रेखा-गणित शास्त्र का एक चमत्कार होगा। यदि कोई आदमी चार दूना नौ कर सके, तो यह गणित का चमत्कार होगा।

यदि कोई आदमी ऐसा कर सके कि एक पत्थर जब हवा में गिरे तो वह पहले सेकंड में दस फुट, दूसरे सेकंड में पच्चीस फुट और फिर तीसरे सेकंड में पांच फुट गिरे, तो वह भौतिक विज्ञान का चमत्कार होगा। यदि कोई पादरी-पुरोहित अपने मत अथवा सिद्धांत को प्रामाणिक कर सके, तो यह धार्मिकता के संसार में चमत्कार होगा। यदि देश की पार्लियामैंट पचास सेंट चांदी की कीमत कानून के बल पर एक डॉलर घोषित कर दे तो वह एक आर्थिक चमत्कार होगा। एक ऐसा त्रिकोण बनाना, जिसकी चार रेखाएं हों, एक बहुत ही अद्‌भुत चमत्कार होगा। यदि दर्पण के सामने खड़े होने वाले मनुष्यों के चेहरे दर्पण में दिखाई न दें और पीछे खड़े होने वालों के चेहरे दिखाई दें, तो यह भी एक चमत्कार होगा। ऐसा करना कि मनुष्य के प्रतिध्वनि उसके प्रश्न का उत्तर दे दे, तो यह भी एक चमत्कार होगा। दूसरे शब्दों में प्रकृति-नियम के विरुद्ध अथवा उसकी अपेक्षा करके किसी भी बात का करना ण्क चमत्कार दिखाना है।

अब, प्रकृति की एकरूपता में हमारा विश्वास है। सभी चीजों में जो क्रिया या प्रतिक्रिया होती है, वह प्रकृति के नियम के अनुसार होती है। एक ऐसी परिस्थिति के बहुत करके एक जैसे ही परिणाम होते हैं। समान अवस्थाओं ने हमेशा एक ही तरह की चीजों को जन्म दिया है और वे आगे भी जन्म देंगी। हमारा विश्वास है कि सभी घटनाएं प्रकृति की संतान हैं और उनमें से कोई भी संतानरहित नहीं मरतीं।

चमत्कार न केवल असंभव है, किंतु कोई भी विचारवान उनके बारे में विचार तक नहीं कर सकता।

अब कोई भी बुद्धिमान आदमी इस बात में विश्वास नहीं कर सकता कि कभी कोई चमत्कार किया गया है या भविष्य में किया जा सकेगा। चमत्कारों में विश्वास का पौधा अज्ञान की भूमि में ही पनपता है।....

................क्रमशः

बाल काटे जाने की घटनाएं एवं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक ढांचे की उलझनें

-डा. जश्न

बीत चुके जुलाई एवं अगस्त के महीने में पूरे उत्तरी भारत-हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं खासतौर पर पंजाब के मालवा इलाके में किसी अदृश्य शक्ति द्वारा बंद घरों में घुस कर लोगों के बाल काट कर गायब हो जाने की अफवाहों का बाजार गर्म रहा। लोगों के भय में प्रत्येक सुनी सुनाई बात के द्वारा और भी वृद्धि होती चली गई। मुख्य धारा मीडिया एवं सोशल मीडिया ने इन इक्का-दुक्का घटनाओं को मुख्य मुद्दा बनाने, इस समस्या को और भी रहस्यमयी बनाने एवं लोगों के मन में डर को भर देने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। अगस्त महीने के शुरूआती दिनों में कोई इलाका ऐसा नहीं था कि जहां पर 2-4 व्यक्ति बातें कर रहे हों और उनकी बातों का विषय 'चोटी कांड' न बना हो। दरअसल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अफवाह फैलाऊ मशीनरी ने सोशल मीडिया पर अपनी वेबसाइटों के द्वारा चोटी काटे जाने की घटनाओं को पूरे जोर-शोर से प्रचारित किया। संघी लोग चोटी काटे जाने की घटनाओं को महिलाओं को 'भारतीय परंपराओं' से दूर हो जाने के कारण प्राकृतिक, अदृश्य शक्तियों द्वारा दी जा रही सजा के तौर पर प्रचारित कर रहे थे। संघ के अफवाह फैलाऊ तंत्र द्वारा पूरी ताकत लगाए जाने के कारण ही चोटियां काटे जाने की खबरों ने अधिक तूल पकड़ा।

यद्यपि बाल काटे जाने, घरों में ईंट-पत्थर बरसना, खून के छींटे आना, बंद अलमारियों एवं ट्रंकों में कपड़ों का कट जाना, अचानक आग लग जाना, किसी व्यक्ति में माता अथवा देवी का आ जाना, व्यक्ति द्वारा खेलने लग जाना एवं ओपरी कसर का हो जाना इत्यादि घटनाएं प्रायः हमारे घुटन भरे समाज में देखने-सुनने को मिलती हैं, परंतु किस प्रकार से दो महीने पूर्व राजस्थान के एक इलाके में घटित हुई एक घटना पूरे उत्तरी भारत का मुख्य मुद्दा बन गई तथा अगस्त के पूर्वार्ध तक चार राज्यों में बाल काटे जाने के लगभग 200 से अधिक मामले प्रकाश में आए। जिसके चलते उत्तर प्रदेश में एक 60 वर्षीय महिला को बाल काटने वाली समझ कर भीड़ ने मौत के घाट उतार दिया तथा 2 अगस्त को आगरा में एक महिला को लोगों ने 'भूत' समझ कर मार डाला। इस सम्पूर्ण मामले में आम मीडिया का और प्रशासन का रोल अत्यंत नकारात्मक रहा। फिर भी प्रगतिशील सोच के साथ जुड़े हुए लोगों ने तथा संगठनों ने लोगों में इस मसले के बारे में सही एवं वैज्ञानिक चेतना फैलाने का कार्य अपने हाथों में लिया।

आज हम इस लेख के द्वारा बाल काटे जाने जैसी घटनाओं की वैज्ञानिक पड़ताल करेंगे तथा देखेंगे कि किस प्रकार सभी घटनाओं की तार हमारे देश के आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक व्यवस्था की पेचीदगियों के साथ जुड़ती है।

बाल काटे जाने के जितने भी मामले सामने आए। उन सभी का सांझा सूत्र यह था कि लगभग सभी महिलाएं थी तथा सभी की कहानी यह थी कि उनकी बेहोशी की हालत में अथवा सोते समय उनके बाल काटे गए तथा उन्होंने किसी विचित्र चीज को देखा है जो बाद में गायब हो गई। लगभग ये सभी घटनाएं निम्न, मध्य वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के लोगों में ही घटित हुई तथा प्रत्येक घटना एक प्रारंभिक घटना के साथ मेल खाती कहानी लेकर आई।

वास्तव में इन बाल काटे जाने की घटनाओं के पीछे वैज्ञानिक कारण पीड़ित का मानसिक रोगी होना है। एक साधारण पड़ताल के द्वारा यह सामने आ जाता है कि चोटी काटे जाने वाली पीड़ित महिलाएं

उन परिवारों में से थी, जो निम्न मध्यवर्गीय जीवन के अभावों के साथ जूझ रहे थे। वास्तव में यह घर के हालातों के तनाव तथा शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों के तनाव का बाहरी प्रकटावा है जिसको हिस्टीरिया कहा जाता है।

यह हिस्टीरिया रोग असल में है क्या? शब्द हिस्टीरिया पुरातन समय में एक ऐसे रोग के लिए प्रयोग में लाया जाता था, जिस बाबत कहा जाता था कि इसका कारण महिलाओं के गर्भाश्य का हिलना-जुलना है। परन्तु आज यह हिस्टीरिया नाम का प्रयोग करना सही नहीं है, परन्तु फिर भी चिकित्सा क्षेत्र में इस रोग को हिस्टीरिया ही कहा जाता है। पहले यह माना जाता रहा है कि यह रोग केवल महिलाओं में ही होता है, परन्तु ऐसा नहीं है। पुरुषों में भी इस रोग के लक्षण देखने को मिल जाते हैं।

हिस्टीरिया के लक्षणों में आमतौर पर चीखना, हाथ-पैरों का अकड़ जाना, दंतकीड़ भिंच जाना, हाथों-पैरों में कम्पन शुरू हो जाना, कई बार आवाज का निकलना बंद हो जाना अथवा फुसफसाने लग जाना, व्यर्थ में हंसना अथवा बिना किसी कारण के रोने लग जाना, आधा-अधूरा अथवा पूर्णतः बहरे हो जाना, एक दम से धुंधला दिखाई देने लग जाना अथवा बिल्कुल ही दिखाई देना बंद हो जाना, चमड़ी का स्पर्श सामर्थ्य सुस्त हो जाना अथवा बिल्कुल ही खत्म हो जाना इत्यादि हैं।

आमतौर पर यह समझ लिया जाता है कि व्यक्ति जानबूझ कर ऐसा कर रहा है अथवा बहाने बना रहा है, परन्तु वास्तव में मानव का अवचेतन मन मानसिक संघर्षो का प्रकटावा शारीरिक रूप से कर रहा होता है। हिस्टीरिया का कारण ही मानसिक संघर्ष है। प्रायः जब कोई व्यक्ति तंग माहौल में रह रहा हो तथा उसे अपनी समस्याओं का कोई भी हल न निकलता दिखाई देता हो तो इस तनाव को वह अपने अवचेतन मन के द्वारा इन लक्षणों एवं गतिविधियों के द्वारा प्रकट करता है। वास्तव में हिस्टीरिया के पीछे कोई न कोई आर्थिक अथवा सामाजिक अन्याय कार्य करता है। अक्सर ऐसे केसों में एक परिवार के कुछ सदस्य खूब आजादी का आनंद उठा रहे हों और दूसरों की आजादी पर सख्त पाबंदी हो तो इस प्रकार के माहौल में गुलामी एवं हीनता भरा जीवन व्यतीत कर रहे व्यक्तियों का कोई वश नहीं चलता तो उसका सचेत मन सही फैसले नहीं कर पाता तथा अवचेतन मन के द्वारा ऐसी कई प्रकार की हरकतें करता है। उसका अवचेतन मन ऐसी हरकतों के द्वारा दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकता है तथा उनकी हमदर्दी जीत सकता है। इसका प्रारंभिक लाभ यह होता है कि उसको किसी इल्जाम इत्यादि से मुक्त कर दिया जाता है तथा अगला फायदा यह होता है कि वह अपने सगे-संबंधियों की नजरों में निर्दोष बना रह जाता है।

हिस्टीरिया का रोग अधिकतर महिलाओं में होता है तथा पिछड़े एवं निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में अधिक होता है महिलाओं में इस रोग का अधिकतर होने का कारण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक दशा है, क्योंकि महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा दासता की अधिक शिकार होती हैं।

मनोविज्ञानियों द्वारा हिस्टीरिया के लक्षणों को दो वर्गों में बांटा गया है।

1. परिवर्तन प्रतिक्रम
2. गैर समाजी प्रतिक्रम

1. परिवर्तन प्रतिक्रम : इसमें व्यक्ति मानसिक संघर्ष का प्रकटावा शारीरिक क्रियाओं के द्वारा करता है। जैसे कि एकदम से दृष्टि में अंतर आ जाना, बहरापन आ जाना, मांसपेशियों में जकड़न आ जाना और झटके लगना इत्यादि। इसके अतिरिक्त अन्य लक्षण जैसे कि पेट में अल्सर हो जाना, दस्त लग जाना अथवा कब्ज हो जाना और भूख का कम हो जाना इत्यादि।

2. गैर सामाजिक प्रतिक्रम : इसमें व्यक्ति अपनी आम चेतना से अलग होने लगता है तथा उसका प्रतिक्रम कोई गैर सामाजिक कार्य के रूप में निकलता है जैसे कि स्मरण शक्ति का चला जाना, अपने कार्य से भाग हाना अथवा विचित्र प्रकार की हरकतें करना जैसे कि कपड़े फाड़ देना, आग लगा देना अथवा ईंट-पत्थर मारना इत्यादि।

भारत जैसे देश जहां पूंजीवादी विकास बिना किसी बुर्जुवा जनतांत्रिक क्रांति एवं बिना किसी लंबी, क्रमबद्ध एवं गहरी प्रक्रिया से बिना तीव्रता के साथ

आया है। वहां अभी हमारे समाज में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में सामंती और मध ययुगीन नैतिक मूल्य किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। हमारे समाज के दैनिक जीवन में जनतंत्र जैसी चीज की कमी है और हम पितृ सत्ता, उम्र का दबदबा एवं पुरुष प्रधानता वाली विरासत में से लेकर जी रहे हैं। इसीलिए आजादी के 70 साल बाद भी बुरे प्रबंधों के कारण हमारे लोग तनाव से भरा हुआ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसीलिए जीवन जीने की मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित लोग मानसिक दबाव के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं आरंभ से ही भारत के धर्मो ने लोगों में रूढ़िवादी एवं पिछड़ी हुई सोच का प्रसार किया है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में भी सत्ता पर काबिज लोगों के भी यह बात पक्ष में बैठती है कि लोगों की सोच पर ताला लगा रहे हैं। इसीलिए समस्त मीडिया प्रातःकाल से ही लोगों के मन में मिथ्या प्रचार करना शुरू कर देते हैं और अंधविश्वास से लबरेज सीरियल दिन के चौबीसों घंटे धड़ाधड़ नैशनल चैनलों पर प्रसारित होते रहते हैं। दूसरे अर्थो में कहा जाए तो समाज को बीमार बनाया जा रहा है। ऐसे समाज में 'चोटी कांड' जैसा सामूहिक हिस्टीरिया का सामने आ जाना, कोई आश्चर्यचकित करने वाली बात नहीं रहती। जी हां, वास्तव में जो भी बाल काटे जाने की घटनाएं सामने आई। ये हिस्टीरिया की ही एक किस्म सामूहिक हिस्टीरिया थी जो कि लोगों के समूह को प्रभावित करती है। मानसिक तौर पर कमजोर एवं बीमार व्यक्ति इसके प्रभाव में आ जाते हैं बाल काटे जाने का घटनाक्रम हिस्टीरिया की किस्म गैर सामाजिक प्रतिक्रम था। भारत वर्ष में धार्मिक प्रभाव के अधीन बालों को पवित्र माना जाता है और बालों का काटे जाना (बगैर अनुमति के) एक सजा के तौर पर माना जाता है।

सामूहिक हिस्टीरिया के उदाहरण इतिहास में काफी मात्रा में मिलती हैं।

डांसिंग प्लेग (1518) : फ्रांस के एक शहर स्ट्रासबर्ग में कुछ व्यक्तियों ने बिना संगीत से नृत्य कर शुरू किया और बीबीसी के अनुसार इस नृत्य में 400 लोगों ने भाग लिया और महीने तक ये लोग नाचते रहे। इनमें से कुछ लोग थकावट से एवं दिल का दौरा पड़ने के कारण मारे गए, परंतु लोग फिर भी नाचते रहे। पड़ताल से ज्ञात हुआ कि इसके पीछे अत्यधिक तनाव था, जिस कारण भुखमरी एवं भोजन की कमी थी।

तंजानिया अफ्रीका में हंसी की महामारी (1962) : यह हंसी एक डे-बोर्डिंग स्कूल में एक चुटकले के कारण शुरू हुई और लगभग एक महीने तक चलती रही। प्रबंधकों को स्कूल को बंद करना पड़ा। इसके पीछे का कारण भी डे-बोर्डिंग स्कूल में छात्रों में व्याप्त तनाव था।

मंकी मैन (2001) : दिल्ली के इलाकों में किसी मंकी मैन का भय फैल गया और लगभग 15 लोगों को इस विचित्र रहस्यमयी मंकी मैन के नाखूनों का शिकार होना पड़ा। कुछ सप्ताह बाद यह अफवाह एवं लोगों के अंदर का भय खुद ही खत्म हो गया। जांच से पता चला कि पीड़ित व्यक्तियों ने स्वयं ही अपने-आप को चोटें पहुंचाई थी।

मुंबई का मीठा पानी (2006) : अचानक मुंबई के एक इलाके में लोगों को एक दिन गटर का पानी पीने में मीठा लगने लग गया। सैंकड़ों लोगों ने गटर का बदबूदार पानी मीठा मान कर पीया और लोग बोतलों में भरकर अपने घरों को ले जाते रहे। एक-दो दिनों के पश्चात् लोगों को उस पानी में से मिठास को गायब हुआ महसूस किया।

इस प्रकार पूरे विश्व में सामूहिक हिस्टीरिया के अनेक उदाहरण मिलते हैं तथा भारत जैसे पत्थरों को पूजने एवं गाय का मूत्र पीने वाले लोगों में यह समस्या हर बार नया रूप लेकर आता है।

हिस्टीरिया के इलाज के लिए यह बात स्पष्ट करनी बनती है कि हिस्टीरिया का रोगी जानबूझ कर अथवा बहानेबाजी नहीं कर रहा होता तथा उसका अवचेतन मन उससे यह सब करवा रहा होता है। जब उसका मन सचेत होता है तब उसे ये बातें केवल सपना लगती हैं अथवा याद ही नहीं रहती। अतः यह बिल्कुल नहीं मानना चाहिए कि रोगी सब कुछ जानबूझ कर ही कर रहा है। रोगी के साथ कठोर व्यवहार नहीं रखना चाहिए और न ही रोगी के साथ फालतू की

-शेष पृष्ठ 20 पर................

साल में दिन छोटे - बड़े कैसे होते हैं ?

शरद कोकास

कल दिन में निखात के उस अंधेरे से साक्षात्कार करेंगे यह सोच कर हम लोग टीले की ढलान पर बैठ गए । मैंने कमर सीधी करनी चाही । पूरा आसमान मेरी आँखों के सामने था और उसमें चमक रहा था पूर्णिमा का पूरा चांद । चाँद की रौशनी की वजह से सितारे थोड़े मध्म हो गए थे । मैंने उनमें ध्रुव तारा ढूँढना चाहा ताकि मैं उत्तर दिशा का पता लगा सकूं। चाँद को देखते हुए मुझे अचानक ऋतुओं का खयाल आया और फिर ऋतुओं और चाँद सूरज के सम्बन्ध के बारे में। रवीन्द्र ने डॉ. वाकणकर के सान्निध्य में अपने खगोलीय ज्ञान का काफी विस्तार कर लिया था । मैंने रवीन्द्र से सवाल किया 'यार यह बसंत का अयनांत तो नहीं है ?' रवींद्र ने जवाब दिया-'भाई अभी अयनांत कहाँ, पिछला अयनांत 21 दिसंबर को हो चुका है और अगला इक्कीस जून को आएगा । मैंने फिर रवींद्र से सवाल किया ..यार लेकिन यह अयनांत और विषुव निर्धारित तिथि पर कैसे आते हैं ?

रवींद्र ने कहा 'चलो मैं तुम्हें एक सिरे से समझाता हूँ कि अयनांत यानी सोलिस्टीस और विषुव यानी इक्विन क्स क्या होता है । सबसे पहले विषुव यानि इक्विन क्स के बारे में बताता हूँ जब रात और दिन बराबर होते हैं । यह हमारे देश में 21 मार्च और 23 सितम्बर को होता है जब रात और दिन बराबर होते हैं । पहले कुछ बेसिक बातें समझ लो । तुमने ग्लोब में यह देखा होगा कि पृथ्वी अपनी धुरी पर साढ़े तेईस डिग्री झुकी हुई है और वह स्वयं इसी तरह घूमते हुए सूर्य के चक्कर भी लगाती है । उसका यह पथ गोलाकार अथवा लम्बवत नहीं होता बल्कि दीर्घ वृत्ताकार यानि इलेप्टिकल होता है । पृथ्वी के ठीक मध्य से अर्थात उसके पेट से एक काल्पनिक रेखा जाती है जिसे भूमध्य रेखा कहते हैं । पृथ्वी का उपरी हिस्सा जो नासपाती जैसा चपटा है उत्तर ध्रुव तथा दक्षिणी हिस्सा दक्षिण ध्रुव कहलाता है। इस तरह दो गोलार्ध बनते हैं उत्तरी व दक्षिणी । अब होता यह है कि सूर्य के चारों ओर घूमते हुए पृथ्वी की साल में एक बार ऐसी स्थिति आती है जब वह सूर्य की ओर अधिक झुकी होती है और एक बार ऐसी स्थिति आती है जब वह सूर्य के विपरीत झुकी रहती है । पहली स्थिति में दिन बड़ा होता है और दूसरी स्थिति में रात । लेकिन दो बार ऐसी स्थिति आती है जब पृथ्वी का झुकाव न सूर्य की ओर होता है न उसके विपरीत बल्कि वह मध्य में होती है । इन दोनों स्थितियों में रात और दिन बराबर होते हैं और इन्हें विषुव अथवा इक्विन क्स कहते हैं । अगर इक्विनोक्स के समय हम भूमध्य रेखा पर खड़े हों तो सूर्य ठीक हमारे सर के ऊपर होता है । वैसे दिन और रात बराबर होने कि स्थिति सैद्धांतिक है वास्तव में ऐसा होता नहीं है, फिर अलग अलग देशों में तिथियों में भी फर्क होता है ।

मैंने कहा 'इसका अर्थ यह हुआ कि पृथ्वी का एक गोलार्ध छह माह तक सूर्य की ओर झुका रहता है और दूसरा गोलार्ध अगले छह माह तक । इसी वजह से उत्तर व दक्षिण ध्रुव पर छह माह का दिन और छह माह की रात होते हैं । और जब उत्तरी गोलार्ध में गर्मी होती है तो दक्षिणी गोलार्ध में ठण्ड पड़ती है उत्तरी ध्रुव पर रहने वाले लोगों के लिए इक्विन क्स के अगले छह माह दिन वाले होते हैं जबकि दक्षिण ध्रुव पर रहने वालों के लिए अगले छह माह रात के । मतलब इस विशेष दिन दोनों ध्रुव के लोगों को सूर्य का प्रकाश एक जैसा देखने को मिलता है।'

'बिलकुल ठीक' रवींद्र ने कहा 'अब अयनांत या सोलिस्टीस के बारे में बताता हूँ यह भी साल में दो बार आता है 21 जून को जब दिन सबसे बड़ा होता है और 21 दिसंबर को जब दिन सबसे छोटा होता है

शेष पृष्ठ 32 पर

आस्था, बाबावाद, डेरावाद..हल क्या हो ?

-बूटा सिंह सिरसा

लेख के पहले भाग में में हमने आस्था, डेरावाद , बाबावाद के असली कारणों को समझने का प्रयास किया था। इस लेख में हम इस समस्या का समाधान क्या हो, इस पर चर्चा करेंगे। जब तक पत्रिका आपके हाथों में पहुंचेगी तब तक मीडिया चैनलों से डेरा सिरसा वाला मामला खत्म हो चुका होगा क्योंकि उनको अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए कोई नया मुद्दा मिल गया होगा। कई दिनों तक मीडिया की पैनल चर्चाओं में इस विवाद पर सतही विश्लेषण किए जाते रहे। वही मीडिया जो कि अपने एक साथी पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की हत्या के समय मौन रहा था। बड़ी संख्या में लोग भी मीडिया की खबरों की तरह इस मुद्दे को विस्मृत कर चुके होंगे। कुछ लोग अपने बाबा से गुरमीत की तुलना करते हुए अपने बाबा को अच्छा कह रहे होंगे। प्रदेश सरकार द्वारा किस प्रकार बाबा को जेल भेजे जाने के बाद भी कई दिनों तक सिरसा डेरे में कोई सर्च अभियान तक नहीं चलाया गया 10 दिन के बाद कोर्ट के आदेशों के बाद ही 2 दिन तक सर्च अभियान के नाम पर ड्रामा हुआ। मीडिया में छपी खबरों के अनुसार डेरे को अपना सामान ठिकाने लगाने व सबूतों खुर्दबुर्द करने के लिए पूरा समय दिया गया। यह बात इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है कि सत्ता को किस प्रकार से धर्म की, इस प्रकार के डेरों की व इस प्रकार के बाबाओं की जरूरत है। विशेषकर इस दौर में जब लोगों की जिंदगी से जुड़े हुए मुद्दों से उनका ध्यान हटाना ज्यादा जरूरी है व पूंजीवादी व्यवस्था संकट के दौर में है। अब सवाल यह है कि क्या न्यायालय द्वारा सजा सुनाए जाने से जो इस प्रकार के बाबा या बाबाओं को जेल भेजे जाने से ही इस समस्या का हल है ? पदार्थवादी दार्शनिकों का मानना है कि जुर्म की जड़ें समाज में ही होती हैं।

शिक्षा व्यवस्था

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था कैसी होगी यह उस देश की राजनीतिक व्यवस्था ही तय करती है यानि शासक वर्ग ही तय करता है कि शिक्षा कैसी होगी ? पाठ्यक्रम कैसा होगा? हमारे देश में शिक्षा को धीरे-धीरे अब पूरी तरह से बाजार के हवाले कर दिया गया है। साथ ही साथ यहां पर अलग-अलग धर्मो व समुदायों के द्वारा अपने-अपने शिक्षण संस्थान खोले हुए हैं और उन शिक्षण संस्थाओं को आर.टी. ई. 2009 के प्रावधानों से भी बाहर रखा गया है इन धार्मिक शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले बच्चों को बेहतर मानव बनाने की बजाय उनका विशेष धर्म आधारित संकीर्ण दृष्टिकोण बनाया जाता है। वैज्ञानिक विचारों की शिक्षा देने की बजाय नैतिकता के नाम पर अंधविश्वासों की शिक्षा दी जाती है ताकि इन बच्चों को बड़े होकर 'धर्म' की रक्षा के नाम पर पूंजीपतियों की सेवा के काम में लगाया जा सके। ये नौजवान मेहनतकश जनता जो कि अपने हकों के लिए लड़ते हैं, की एकता को तोड़ने का काम करते हैं। इसलिए हमारी यह मांग होनी चाहिए कि सिरसा डेरे के अंदर चल रहे शिक्षण संस्थाओं का सरकार द्वारा अधिग्रहण किया जाए। शिक्षा व्यवस्था के तौर पर यह मांग बनती है कि पूरे देश में 'क मन स्कूल सिस्टम' लागू हो तथा वैज्ञानिक विचारों पर आधारित शिक्षा दी जाए।

दार्शनिक आधार को समझना उसका विकल्प ढूंढना :

इन समस्याओं की जड़ हमारी दार्शनिक परंपराओं में ही ढूंढनी होगी। लेकिन साथ ही साथ हमारी दार्शनिक परंपराओं में अध्यात्मवादी दर्शन के साथ साथ भौतिकवादी दार्शनिक परंपराएं भी रही हैं जैसे की लोकायत, चार्वाक व बौद्ध दर्शन आदि। इन सभी

दर्शनों में बुद्धिवाद व तर्क पर जोर दिया गया है। हमारा दायित्व बनता है कि दर्शनशास्त्र के विद्वानों के विचारों को अभिजात वर्गो के एक छोटे से दायरे तक सीमित न करके आम लोगों तक ले जाया जाए। यह विचार जनता के लिए प्रेरणास्रोत होंगे व आज के दौर के विषाक्त वातावरण को नए प्रकार के बौद्धिक वातावरण में बदलने के लिए सहायक होंगें। इसमें साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों की बहुत बड़ी भूमिका बनती है। जैसे कि कार्ल मार्क्स लिखते हैं कि विभिन्न दार्शनिकों ने दुनिया की अलग अलग तरीकों से व्याख्या की है लेकिन जरूरत इसको बदलने की है।

धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बढ़ावा देना :

हमारे देश के संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता इसलिए जोड़ा गया क्योंकि भारत एक बहुत विविधताओं वाला देश है। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि राज्य का कोई धर्म नहीं होगा अर्थात देश के शासक किसी विशेष धर्म को प्रोत्साहित नहीं करेंगे धर्म प्रत्येक व्यक्ति का निजी मसला होगा लेकिन देश आजाद होने के बाद से सभी राजनीतिक दलों द्वारा धर्म का उपयोग अपनी सरकारें बनाने के लिए किया गया ।धर्म के बारे में लेनिन ने भी कहा है कि ''धर्म लोगों के लिए अफीम है धर्म एक प्रकार आत्मिक शराब है जिसमें पूंजी के गुलाम अपना मानवीय स्वरुप व थोड़ा बहुत मानवीय शान के अनुसार एक जिंदगी की उनकी मांगों को डुबो देते हैं'' हमारे देश में जिस प्रकार से सभी धर्मो को विभिन्न प्रकार की रियायतें, प्रोत्साहन टैक्स छूटें दी जाती हैं ये सब बंद होनी चाहिए। वास्तविक रूप में धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बढ़ावा देने की जरूरत है ।

जनता की राजनीतिक चेतना को बढ़ाना :

पूंजीवादी संसदीय राजनीतिक दलों से ज्यादा उम्मीद न रखते हुए हमारा कार्य बनता है कि लोगों को उनकी जिंदगी से जुड़े हुए मुद्दों को लेकर संघर्षो के मैदान में लाया जाए। इससे उनकी राजनीतिक चेतना बढ़ेगी लेकिन इसके लिए जरूरी है कि नेतृत्व अर्थवाद का शिकार न हो बल्कि वैचारिक काम किया जाये।इस कार्य में ट्रेड यूनियन की महत्वपूर्ण भूमिका है। ट्रेड यूनियन का अब तक ज्यादा जोर आर्थिक संघर्षो पर ही रहा है सांस्कृतिक क्षेत्र में ज्यादा काम नहीं हो पाया। असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के बीच काम करते हुए उनको संगठित करना होगा। मजदूर आन्दोलन को न सिर्फ श्रमिक अधिकारों को बचाने के लिए लड़ना होगा बल्कि जनवादी अधिकारों की रक्षा करने के लिए भी संघर्ष करना होगा। नेतृत्व को वर्ग सहयोग जैसे भटकावों से बचना होगा। लोगों की सम्पति में प्रगतिशील बदलाव के लिए सांस्कृतिक क्षेत्र में काम करने की ज्यादा जरूरत है।

नवजागरण के कार्यक्रम :

पिछले मास के लेख में लिखा था कि भक्ति लहर में जिस प्रकार से समाजिक भेदभाव व कर्मकांडों के खिलाफ आवाज उठाई थी लेकिन अंग्रेजों के आने के कारण उसको पूरी तरह से रोक दिया गया था। उसी प्रकार के नवजागरण आंदोलन व ज्ञान प्रसार का आंदोलन चलाने की हमारे देश में बहुत ज्यादा जरूरत है।जब तक जनता के मनों में से अज्ञान के अँधेरे को ज्ञान की रौशनी से दूर नहीं किया जा सकता तब तक कोई बदलाव नहीं हो सकता। इसके बारे में कार्ल मार्क्स ने एक जगह लिखा है कि 'अज्ञान एक दानव है राक्षस है ज्ञान के कारण व्यक्ति बहुत सारे दुख झेलता है बहुत त्रासदियाँ झेलता है।' अज्ञानता के इस अंधकार को ज्ञान की लौ से खत्म करने में साहित्यकारों बुद्धिजीवियों व अध्यापकों की बहुत बड़ी भूमिका बनती है लेकिन दुःख है कि ज्यादातर बुद्धिजीवी लेखक जनता से कट चुके हैं उनका लेखन इनामों तक सीमित है। बुद्धिजीवियों और लेखकों का वर्तमान दौर में जनता से जुड़ाव बहुत ज्यादा जरूरी है । मध्यकाल में मिस्र में बहुत बड़ा पुस्तकालय था 'अलेक्जेंड्रिया' जिसे वहां के लेखकों बुद्धिजीवियों ने बनाया था लेकिन उनका जनता से कोई संबंध नहीं था जब विदेशी आक्रमणकारी आए तो पुस्तकालय को जला दिया गया और उन लेखकों बुद्धिजीवियों को भी मार दिया गया । लोगों ने उन विद्वानों का साथ नहीं दिया क्योंकि वे जनता के साथ जुड़े ही नहीं थे । नवजागरण के कार्य को चलाने के लिए हमारे देश के चिंतकों बुद्धिजीवियों को इस दौर में ज्ञान प्रसार के कार्य को करना होगा। गरीबों के मोहल्लों में, मजदूरों की बस्तियों में पुस्तकालय

खोलने, विचार गोष्ठियां, सेमिनार करने व पर्चे वितरित करने का कार्य करना होगा।

सामाजिक आर्थिक व्यवस्था :

जिस प्रकार से भारतीय समाज वर्गीय व जातीय आधार पर बंटा हुआ है और भारतीय संस्कृति व दर्शन इन्हीं आधारों को बनाए रखना चाहती है बल्कि मजबूत करना चाहती है क्योंकि मनुस्मृति उनका आदर्श है जो समाज को वर्ण व्यवस्था में बांटती है। जिस प्रकार से पूंजीवादी व्यवस्था आर्थिक संकट में फंसी हुई है वह इन संकटों से निकलने व अपने मुनाफों को और ज्यादा बढ़ाने के लिए लोगों का ध्यान उनके जीवन से जुड़े असली मुद्दों से भटकाने के लिए ही धर्मो डेरों बाबाओं व साम्प्रदायिकता का सहारा लेती है। पूरी दुनिया में ही संकटग्रस्त प्रतिगामी पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा धार्मिक झगड़ों/उन्मादों सांप्रदायिक दंगों को हवा दी जा रही है। हमारा यह फर्ज बनता है की मेहनतकश जनता को यह बताया जाए कि देश के विभिन्न धर्म ग्रंथों में लोगों को जिंदगी के बाद स्वर्ग के जो सपने दिखाए गए हैं उस स्वर्ग को इसी धरती पर यहां मनुष्य ने अपना पूरा जीवन व्यतीत करना है, बनाने की कोशिश करें। मेहनतकश जनता को वर्तमान में इस धरती को बेहतर जिंदगी जीने योग्य बनाने के लिए संघर्ष करने को तैयार किया जाए।

हमारे देश में पिछले वर्ष लागू की गयी नोटबंदी व इस वर्ष जी.एस.टी. लागू किये गये जिससे लघु उद्योग धंधे बंद हो गये। मजदूर वर्ग, गरीब और निम्न मध्यम किसान व शहरी निम्न मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। देश की GDP की वृद्धि दर पिछले तीन वर्षो में सबसे निम्न स्तर पर पहुंच चुकी है। देश में मंदी का दौर होने के कारण लोगों में असंतोष व्याप्त है। सरकार इस असंतोष को आस्था, डेरों व धार्मिक रूप से संवेदनशील मुद्दों को उछालकर लोगों की एकता तोड़ते हुए उनको दूसरी तरफ मोड़ना चाहती है तथा लोगों का असली मुद्दों से ध्यान हटाना चाहती है। अध्यापकों, बुद्धिजीवियों व साहित्यकारों का दायित्व बनता है कि लोगों को असली सच्चाई बताते हुए अनवरत संघर्षो के मैदान में लाया जाये ताकि मुनाफा आधारित इस पूंजीवादी व्यवस्था को बदलकर समतामूलक व न्याय पर आधारित व्यवस्था कायम की जा सके।

***

पृष्ठ 17 का शेष (बाल काटे जाने....)

हमदर्दी प्रकट करनी चाहिए। रोगी के साथ मिला-जुला व्यवहार करना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए कि रोगी को विश्वास में लेकर उसकी समस्या के बारे में जाना जाए तथा किसी मनोचिकित्सक से इसका इलाज करवाना चाहिए।

जैसा कि हमने देखा है कि इस समस्या का कारण हमारे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक ताने-बाने में ही है, जो ढांचा मानव से मानव होने के नैतिक मूल्य छीन लेता है। केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की नाकामी तो इस बात से ही स्पष्ट हो जाती है कि चोटी काटे जाने की घटनाओं में स्वास्थ्य विभाग और सूचना एवं विज्ञापन विभाग द्वारा लोगों को जागरूक करने के लिए एक भी कदम नहीं उठाया गया। मानव स्वास्थ्य का मामला था, परन्तु बाल काटे जाने के केसों को सरकार खाकी वर्दी वालों से हल करवाती रही।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे 2016 के अनुसार प्रत्येक छटे व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य सहायता की आवश्यकता है। मेंटल हैल्थ केयर बिल 2013 के अनुसार भारत में 66,200 दिमागी एवं मानसिक रोग विशेषज्ञों की कमी है तथा केंद्र सरकार कुल जीडीपी का केवल 0.06 भाग ही मानसिक स्वास्थ्य पर खर्च करती है।

वैसे सही अर्थो में कहना हो तो मौजूदा आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक ढांचे में मानव स्वास्थ्य को खास करके मानसिक स्वास्थ्य को सही रखना पूरी तरह से संभव ही नहीं हो सकता। सत्ताधारी वर्ग में लोगों को वैज्ञानिक ढंग से शिक्षित करने में कोई खास रूचि नहीं है। भारत में तर्कशील सोसायटी का लोगों में वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार का कार्य प्रशंसनीय रहा है और तर्कशील सोसायटी को लोगों में कार्य करने का काफी अनुभव है।

अंत में आज आवश्यकता लोगों का वैकल्पिक मीडिया का निर्माण करते हुए ज्ञान प्रसार के कार्य को समूचे आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक ढांचे के क्रांतिकारी विकल्प के एक अंग में रूप में समझने की है तथा यह कार्य विद्यार्थी, नौजवान एवं श्रमिक वर्ग ही सही सैद्धांतिक दिशा द्वारा ही करेंगे और एक स्वस्थ समाज का निर्माण करेंगे।

-हिन्दी अनुवाद-बलवंत सिंह

***

स्वामी अछूतानंद

–डा. माता प्रसाद

आदि हिन्दू आंदोलन के जनक एवं दलितों के प्रेरणास्रोत स्वामी अछूतानंद हरिहर का जन्म ऐसे समय हुआ जिस समय दलित समाज और देश की बड़ी दुर्गति थी। हिन्दू समाज में जाति-पाति, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े की भावना का बड़ा जोर था। धर्मान्धता का बोलबाला था। देश पराधीन था, यहां के लोगों का अधःपतन हो चुका था। ऐसे समय में स्वामी अछूतानंद ने अपने क्रांतिकारी विचारों से दलितों का मार्गदर्शन किया। अछूतों के अंदर से हीनभावना निकालकर उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

स्वामी अछूतानंद का परिवार गांव-सौरिख, तहसील-छिबरामऊ, जिला फर्रूखाबाद का निवासी था। इनक पिता का नाम मोतीराम, माता का नाम श्रीमती रामप्यारी देवी और चाचा का नाम मथुरा प्रसाद था। इनके माता-पिता, चाचा सभी सन् 1857 ई. के पूर्व ही गांव के ब्राह्मणों के साथ संघर्ष हो जाने के कारण गांव छोड़कर जिला मैनपुरी के सिरसागंज के गांव उमरी में रहने लगे। यहीं पर 6 मई गुरुवार बैसाखी 1879 ई. को स्वामीजी का जन्म हुआ। इनका बचपन का नाम हीरालाल था। इसके बाद इनके पिता ओर चाचा देवली छावनी चले गए, वहां फौज में नौकरी करने लगे। स्वामीजी की शिक्षा इनक बाबा मथुरा प्रसाद के यहां नसीराबाद, अजमेर में हुई। पढ़ने-लिखने का आपको बड़ा शौक था। 14 वर्ष की आयु तक आपने हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, गुरुमुखी का अध्ययन कर लिया था। इसके बाद यह साधुओं के साथ पर्यटन पर निकल गएं हीरालाल से इन्हें हरिहरानन्द कहा जाने लगा। 24 वर्ष की आयु तक आप भ्रमण करते रहे। इस दौरान उन्होंने संस्कृत, बंगला, गुजराती और मराठी का भी ज्ञान प्राप्त किया। उस समय आर्य समाज का बड़ा जोर था। उसके जलसे जगह-जगह होते थे, शास्त्रार्थ होते थे। आपने आर्य समाज में प्रवेश किया। उसमें उन्हें कई जगह शास्त्रार्थ करने का अवसर मिला।

आपने आगरा के पथवारी और सिरसागंज में अछूत विद्यालय की स्थापना की। सिरसागंज विद्यालय के उद्घाटन के समय कुछ देर से पहुंचे। स्वामीजी ने वहां देखा कि आर्यसमाजी अध्यापकों द्वारा अभिजात बालकों को टाट पर आगे और दलित जाति के छात्रों को पीछे जमीन पर बैठाया गया है। स्वामी को यह देखकर क्लेश हुआ और आर्यसमाज के दलितों के प्रति भेदभाव को देखकर उन्होंने आर्य समाज से अपना पिण्ड छुड़ा लिया।

स्वामीजी ने अछूतों के हित के लिए संघर्ष करना निश्चित किया। 1905 ई. में दिल्ली में जाकर अछूत आंदोलन की शुरुआत की। यहां पर वीर रतन, देवीदास जटिया, जगत राम जटिया का स्वामीजी को पूरा सहयोग मिला। यहां पर अखिल भारत अछूत महासभा हुई और 'अछूत पत्रिका' का सम्पादन किया। दिल्ली में अछूत वर्ग का उन्हें पूरा सहयोग मिला।

1923 ई. में स्वामीजी ने आल इंडिया आदि हिन्दू महासभा की स्थापना हुई। कई कान्फ्रेंसें हुई। इनमें सभी अछूतों को संगठित कर जाति-जाति का विरोध, धर्म-भेद की बुराई की जाती थी। स्वामीजी हिन्दू दासता की जंजीरों से मुक्त होने का संदेश देते थे। 1925 ई. में बेनाझावर, कानपुर को उन्होंने स्थायी निवास बनाया। स्वामीजी के लिए गिरधारी भगत ने जगह दी। यहीं से उन्होंने आदि हिन्दू अखबार निकाला।

सन् 1922 ई. में इंग्लैंड के सम्राट जॉर्ज पंचम के पुत्र प्रिंस आफ वेल्स का दिल्ली आगमन हुआ। उनके स्वागत के लिए अछूत सम्मेलन का आयोजन हुआ। उसमें वह पधारे। इस अवसर पर उनके स्वागत के साथ ही उनको एक 17 सूत्रीय मांग-पत्र दिया गया, जो इस प्रकार था-

1. आदि हिन्दुओं का पृथक् से चुनाव हो तथा पृथक से प्रतिनिधित्व दिया जाए।
2. अछूतों की प्रगति हेतु (स्कूल) विद्यालय खोले जाएं।
3. अस्पृश्यता निवारा हेतु कड़ा कानून बनाया जाए।
4. शिक्षित अछूतों को शासकीय सेवा में लिया जाए।
5. स्थानीय संस्थाओं जैसे नगरपालिका, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ग्राम पंचायत, टाउन एरिया, नोटीफाइड एरिया आदि में अछूत सदस्य नामजद किए जाएं।
6. अछूतों को व्यापार एवं दुकानदारी का कार्य करने की

स्वतंत्रता दी जाए।

7. बेगार प्रथा का समूल नाश किया जाए।
8. अछूतों को सवर्ण हिन्दुओं के समान सामाजिक अधिकार प्राप्त हों।
9. प्रत्येक शासकीय, अशासकीय कमेटियों में संख्या के अनुपात में अछूतों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए।
10. अछूत छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए।
11. अछूत बहुल गांवो में अछूत विद्यालय स्थापित किए जाएं।
12. पुलिस तथा फौज में अछूतों को भी प्रवेश दिया जाए।
13. मजदूरी में वृद्धि की जाए।
14. ग्रामीण चौकीदार पद पर अछूत रखे जाएं।
15. अछूत कृषकों को परती भूमि के पट्टे दिए जाएं।
16. प्रांतीय विधान सभाओं में अछूत भी लिए जाएं।
17. उपर्युक्त 16 मांगों को देशी राज्यों में भी लागू किया जाए।

प्रिंस आफ वेल्स के इंग्लैंड जाने पर लंदन के सेक्रेटरी आफ स्टेट इंडिया का भारत के वायसराय के नाम सख्त आदेश आया कि अछूतोंको प्रत्येक नगरपालिका, नोटीफाइड एरिया, टाऊन एरिया में एक-एक सदस्य के रूप में नामजद किया जाए। इस आदेश का कड़ाई से पालन हुआ। इससे अछूतों के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त हुआ।

1927 ई. में स्वामीजी ने आदि हिन्दू महासभा के मंच से पूर्ण स्वराज की मांग की। अछूतों की आजादी का दावा प्रस्तुत किया। बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ, इलाहाबाद, अमरावती, अलमोड़ा, जयपुर में अखिल भारतीय स्तर और जिला स्तर के अनेक सम्मेलन हुए। भारत में अछूतों क आंखें खुल गईं। दलितों का सहयोग मिलने लगा।

1928 ई. में स्वामी अछूतानन्द की भेट डा. आम्बेडकर से बम्बई में आदि हिन्दू सम्मेलन में हुई। डा. आम्बेडकर स्वामीजी को अपने घर ले गए। वहां पर दोनों ने मिलकर दलितों के हक के लिए संघर्ष करने का निश्चय किया। सन् 1932 ई. में जब इंग्लैंड में गोलमेज कान्फ्रेंस चल रही थी, तब स्वामी अछूतानंद ने भारत से हजारों की संख्या में तार, रजिस्टर्ड लेटर यहां भिजवाए थे। जिनमें लिखा होता था-भारत के अछूतों के एकमात्र नेता डा. आम्बेडकर हैं, गांधी अथवा अन्य कोई नहीं। स्वामी अछूतानंद के उस समय के सहयोगी कनौजी लाल का नाम सम्मान से लिया जा सकता था, जो स्वामीजी के बड़े निकट के सहयोगी थे। उन्होंने स्वामीजी के न रहने पर भी उनकी मशाल को आपने जीवन-पर्यन्त जलाए रखा।

भारत में साइमन कमीशन के आने पर उसके समक्ष आदि हिन्दू सभा के नेताओं ने दलितों को पृथक प्रतिनिधित्व देने तथा अन्य समस्याओं को निर्भीकतापूवक रखा। लखनऊ के आदि हिन्दू सम्मेलन में जब बाबा साहेब पधारे तो सभासदों ने डा. आम्बेडकर का जयघोष के साथ स्वागत किया।

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने सामाजिक वर्ण-भेद की परंपरा को समाप्त करने के लिए धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, पूर्वजन्म, देवी-देवता, भाग्य-भगवान्, कथा-भागवत, यज्ञ-जागरण की मान्यताओं का खंडन किया।

स्वामीजी कोरे उपदेशक ही नहीं, वे कवि भी थे। अछूत और आदि हिन्दू अखबारों का सम्पादन तो उन्होंने किया ही, कई छोटी-बड़ी इनकी रचनाएं भी हैं, जिनमें शम्बूक बलिदान (नाटक) मायानाद बलिदान (जीवनी), अछूत पुकार (भजनावली), पाखंड खंडिनी (मीमांसा) आदि वंश का डंका (कवितावली), रामराजय न्याय (नाटक) प्रमुख हैं। इस दृष्टि से स्वामीजी को दलित साहित्य का प्रथम रचनाकार कहा जा सकता है।

अखिल भारतीय अछूत कांग्रेस को संबोधित करते हुए स्वामीजी ने कहा था-

सभ्य सबसे हिन्द के प्राचीन हैं हकदार हम।
है बनाया शूद्र हमको थे कभी सरदार हम।।
नीचे गिराये पर अछूते, छूत से हम हैं बरी।
आदि हिन्दू हैं न शंकर, वर्ण में हम हैं हरी।।
अब नहीं है वह जमाना, जुल्म हरिहर मत सहो।
तोड़ दो जंजीर, जकड़े क्यों गुलामी में रहो।।

आदि वंश डंका में वे कहते हैं-
जुल्म पापी ने किया, हमको मिटाने के लिए।
वर्ण-संकर लिख दिया है, दिल दुखाने के लिए।।
कूप का मेंढक बना, जकड़ा हमें दासत्व में।
कानून था हमको नहीं, विद्या पढ़ाने के लिए।।

मनुस्मृति को दलितों का दुश्मन कहकर उन्होंने लिखा-

.शेष अगले पृष्ठ पर

विज्ञान में क्यों पिछड़ता भारत

–अमलेश प्रसाद

बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में लिखा है कि भारत के लोगों को नई चीजों में कोई दिलचस्पी ही नहीं है। यानी भारत के लोग यथास्थितिवादी हैं। शायद यही कारण है कि भारत में विज्ञान का विकास नहीं हो पाया और आज भी दूसरे देशों के मुकाबले भारत में इस दिशा में कुछ खास होता हुआ नजर नहीं आ रहा। भारतीय ज्योतिष शास्त्र आज भी सूर्य को ग्रह मानता है, जबकि विज्ञान सूर्य को तारा मानता है। यहां का अध्यात्म देहिक व दैविक 'सुंदरता' में ही सीमित होकर रह गया है। यही कारण है कि भारत के लोगों का मानसिक विकास विकसित देशों की तुलना में कम हो पाया है। और कहीं न कहीं यही कारण है कि हिंदी मीडिया में विज्ञान की खबरें लगभग नदारद रहती हैं। इसीलिए गूगल भी हिंदी में विज्ञान की खबरें नहीं दिखाता है, जबकि अंग्रेजी मीडिया में विज्ञान की खबरें प्रकाशित होती हैं और गूगल न्यूज इन खबरों को साईंस की श्रेणी में दिखाता है।

बाबर ने पंद्रहवीं शताब्दी में भारतीय लोगों के बारे में जो अनुमान लगाया था, वह इक्कीसवीं शताब्दी में भी नहीं बदला है, क्योंकि आईआईटी जैसे संस्थानों में सीटें खाली रह जा रही हैं। आईआईटी, एनआईटी और जीएफटीआई के देशभर में 97 संस्थान हैं और इनमें 36,208 सीटें हैं। इनमें से आईआईटी में 10,988 सीटें हैं। यह संख्या देश की आबादी के अनुपात में एक प्रतिशत से भी कम हैं।

फिर भी इन संस्थानों में पढ़ने वालों की कमी है। इस साल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में 421 सीटें खाली रह गई थीं पिछले साल तकरीबन 76 सीटें खाली थीं। उच्च शिक्षा पर जारी फिक्की की रिपोर्ट 2015 के अनुसार भारत में विश्व स्तर का एक भी शोध संस्थान नहीं है। इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च के सभी संस्थानों ने मिलकर पिछले दो साल में सिर्फ 43 पेटेंट हासिल किए हैं और वहां से महज 1,685 शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। 27 सितंबर 2016 को एक कार्यक्रम में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा था कि आज विश्व के सभी बड़े शोधों में शामिल टीमों में भारतीय हैं, लेकिन भारत के नाम पेटेंट नहीं हो रहे हैं। नोबेल पुरस्कार के एक सौ सोलह साल के इतिहास में विज्ञान के क्षेत्र में अब तक मात्र चार भारतीयों को ही नोबेल पुरस्कार मिला है। इनमें एकमात्र भौतिक शास्त्री चंद्रशेखर वेंकटरमन भारत के नागरिक हैं। अन्य तीन हरगोविंद खुराना, सुब्रमण्यम चंद्रशेखर, वेंकटरमन रामकृष्णन अमेरिकी नागरिक हैं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष जी. माधवन नायर ने एक बार कहा था कि भारत में प्रशिक्षित वैज्ञानिकों की कमी है। युवाओं का तो विज्ञान जगत में आना एकदम ठप्प सा हो गया है। वहीं नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकटरमणन रामकृष्णन ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन 2016 को सर्कस बताते हुए इसमें भाग लेने से इन्कार कर दिया था। ग्रेट ब्रिटेन की तर्ज पर हम लाख 'मेरा भारत महान' कह लें, लेकिन 'शून्य' के अलावा हम और कुछ और खास नहीं खोज पाए।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

पिछले पृष्ठ से शेष

निसदिन मनुस्मृति हमको जला रही है।
ऊपर न उठने देती, नीचे गिरा रही है।।
ब्राह्मण व क्षत्रियों को सबका बनाया अफसर।
हमको पुराने उतरन पहनो बता रही है।

जो काम डा. आम्बेडकर ने महाराष्ट्र में किया, वही कार्य उत्तर भारत में स्वामी अछूतानंद हरिहर ने भी किया।

आदि वंश के आंदोलन के प्रवर्त्तक, दलित क्रांति के जनक स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' जी का निधन 20 जुलाई, 1933 ई. को 54 वर्ष की आयु में कई दिनों की अस्वस्थता के बाद बेनाझावर, कानपुर में हुआ। उनके समाधि-स्थल पर एक स्मारक बन गया है।

–डा. रणजीत की पुस्तक 'भारत के प्रख्याल नास्तिक' में से

पॉवर ऑफ ब्रेन

-अंशुमन कुमार (अमन)

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति सिर्फ संयोग है। मानव जीवन प्रकृति का एक हिस्सा है। यह सुख और दुख का नहीं, जीवन को रचनात्मक काम में लगाना चाहिए। जीवन में वास्तविकता को सामने लाना चाहिए। परिश्रम करने के बाद फल की चिंता करनी चाहिए। शरीर का नाश होने पर यह पुनः प्रकृति में मिल जाता है। जीवन में आत्मा नाम की कोई चीज होती ही नहीं है। स्वर्ग और नरक के बारे में सोचना एक मानसिक बिमारी है, जो दिमाग की सिर्फ उपज है, जो खुद परा भरोसा न करते हुए दूसरों पर आश्रित रहते हैं। डर ही है जो ईश्वर, आत्मा-परमात्मा जैसे आलौकिक शक्ति की उपज का कारण बनता है।

देश के अधिकतर वैज्ञानिक यह जानने के पीछे हैं कि सोने के बाद हमारा दिमाग किस प्रकार से कार्य करता है। हम जो सोचते हैं, उसे जानकारी कहा जाता है। सपने हमें क्यों आते हैं? भूत, प्रेत ईश्वर जैसी भी कोई चीज होती है। हम यह जानते हैं कि हमारा शरीर का पूरा कंट्रोल हमारा मस्तिष्क करता है। यदि इसमें कोई गड़बड़ी हो जाए तो प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है।

हमारा हर फैसला हमारे दिमाग से ही होता है। यहां तक कि हमारे खाने की चाहत हमारे दिमाग में ही होती है। हमारे दिमाग के बीच में अखरोट के बराबर का उत्तकों का एक गोला दिमाग में चाहत का केंद्र है। इसकी सबसे बड़ी चाहत होती है खाने की। हमारे शरीर का सबसे मुख्य भूखा अंग दिमाग ही है। हम जो भी खाते हैं, उसका 20 प्रतिशत हिस्सा दिमाग ले लेता है, मगर ये चाहत का केंद्र हमारे पूरे शरीर का ध्यान रखता है। यही विटामिन या दूसरे खनिज तत्वों की मांग करता है। कोई चीज जो हमें पसंद नहीं है और हमारे शरीर को उसकी जरूरत है तो दिमाग की वह चाहत का केंद्र किसी भी हद तक पार कर उसे वह खाने पर मजबूर करता है। इसी वजह से हमारे पूर्व जिंदा रहने के लिए कुछ भी खाते थे और स्वाद को भूलकर अपनी खुराक में संतुलन बनाते थे। लाल मिर्च कोई नहीं खाता था। मगर उससे एक ऐसी खुशबू निकलने लगी, जिसे जानकार बहुत पसंद करते थे। वह खुशबू थी एक रसायन की जिसके कारण मिर्ची तीखी लगती है। फिर भी हम उसे खाते हैं, क्योंकि हमारा दिमाग जानता है कि हम हद पार कर ही जिंदा रह सकते हैं। एक लाल मिर्च में एक संतरे के मुकाबले चार गुणा ज्यादा विटामिन 'सी' होता है। हमें वो जरूरी रसायन मिल पाएं, इसलिए हमारे दिमाग ने उस तीखेपन को भूलना सीख लिया। मिर्च खाने पर दिमाग में दर्द के संकेतों की बौछार होने लगती है। फिर दिमाग में कुदरती Pain Killers Anddifin निकलने लगता है जो दर्द को मजे में बदल देता है। मिर्ची के तीखेपन से दिमाग का लर्निंग सैंटर Activate हो जाता है, जो ये याद रखता है कि मिर्ची में तीखेपन के अलावा एक अलग ही मजा होता है। अगर हम मिर्ची के खाने से पहले इसमो बर्दाश्त कर ले तो Andolfin के कारण हमें मजा आने लगता है। इसी प्रकार हम लहसून, प्याज जैसी चीजों को खाने की आदत डाल लेते हैं।

जब हमारा शरीर आराम करता है, तब हमारा दिमाग अधिक सक्रिय रहता है। जब हम सोते हैं, तब हमारा दिमाग कुछ बड़े अहम् कार्य करता है। जब हम ज्यादा देर तक नहीं सोते, तब दिमाग हमारे शरीर को बंद कर देता है और तब भी जब हमें जान पे खतरा हो। यह एक बड़ा रहस्य है। जब हम सोते

हैं, तब हमारे दिमाग में क्या चलता है? यह बड़ी हैरानी की बात है कि हमारा दिमाग आराम में भी उतना ही व्यस्त रहता है जितना कि दिन में। दिमाग का पहला काम है, हमें सुलाना, रात होते ही दिमाग में मौजूद एक छोटा सा ग्लैंड सुलाने के लिए मेलेटोनियन नाम की एक कुदरती नींद की गोली देता है। इसका असर हमारे नर्वस सिस्टम (Nurvous System) पर होता है और हमें नींद आने लगती है, पर जब हम शरीर सुस्त पड़ता है तब हमारा दिमाग काम करता है। रोज शाम को ये ट्यून अप करता है। दिन भर काम करने वाली कोशिकाओं की रात में मुरम्मत होती है। दिमाग से निकली चीजों को रसायन साफ कर देती है और कुछ हिस्सों में नई कोशिकाएं बनती हैं। इस Internal Dioxy Repair के बिना हमारा दिमाग अच्छी तरह काम नहीं कर सकता। अगर हम ज्यादा देर तक जागते हैं तो दिमाग हमें सुला देता है। चाहे अंजाम कुछ भी हो। जब भी हम सोते हैं तब भी हमारे दिमाग में सुनने वाले हिस्से काम करते हैं। तभी तो अलार्म की या दूसरी चीजें सुनकर जाग जाते हैं। गहरी नींद में सोने के बावजूद भी हम बाहरी दुनिया के प्रति सतर्क रहते हैं और हमें पता होता है कि बाहर क्या चल रहा हैं

नींद में हमारा दिमाग हमें आकर्षण चीजें भी दिखाता है। सपना एक ऐसा पहलू है जिसे हर कोई पाना चाहता है। ऐसे ही हमारे कुछ करीबी दोस्तों ने हमें बातें बताई, जो निम्न प्रकार से हैंः

1. नाम रितिका, उम्र-14, खाने की चाहत फास्ट फूड, इनके सपनों में घटित घटना के अनुसार ये वो चीजें देखती हैं, जो अपने व्यवहारिक जीवन में नहीं कर सकती। इनके साथ भी कुछ ऐसी ही घटना घटी है, जैसे मानो पहले घट चुकी है। कुछ ऐसा पल जिनमें इन्होंने तकलीफ झेली।

2. नाम पिंकी देवी, उम्र-28, सामान्य खुराक, परिवार के प्रति विकास का सपना और कुछ बच्चों के प्रति कुछ बनने की चाहत रखना।

3. नाम सावन, उम्र-14, कोई अपना, जो ज्यादा ही अपना हो। मछली-भात पसंदीदा भोजन।

4. कुछ घटना जो आमतौर पर मनुष्य के साथ घटती है। पसंदीदा चीजों को पाना और खुद को उसमें ढालना।-उम्र-13

हम कोई भी सपना देखते हैं, उसका प्रथम भाग यानी सपने की शुरूआत कहां से हुई। ये याद नहीं रहता। हम सपने से पहले 20 मिनट या सोने के सात घंटे बाद देखना शुरू करते हैं। ऊपर किए गए शोध से पता चला कि हम सपने अपने दिनचर्या को जोड़ कर या फिर जो हम अपने व्यवहारिक जीवन में नहीं कर पाते, वो सपनों में पूरा कर लेते हैं। हम सपनों में एक न एक बार किसी न किसी कारण मृत्यु को प्राप्त करते हैं या डर से सामना होताहै या दूसरी वजह कोई चीज के तौर पर हम अधिक सोचें, पढ़ें या देखें तो वह हमारे जीवन से जुड़ पाती है।

जैसे मानो कोई लड़का डरावनी फिल्म देखता है और फिर वह अंधेरी रात में सड़क पर अकेला चल रहा है। उस लड़के को अपने ही पैरों की आहट से डर लगता है। उसे कुछ ऐसा लगताहै जैसे मानों कोई उसका पीछा कर रहा है और यही डर भूत-प्रेत को जन्म देता है।

चीन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा डिवाइज बनाया है, जो आपके सपने को पढ़ सकता है। Brain Hemlate आपके सिर पर लगा दिया जाएगा, जो आपके दिमाग का एक ग्राफ बनाएगा। जब आप सपना देखना शुरू करेंगे, तब कम्प्यूटर पर कुछ पैट्रन बनाएगा। वैज्ञानिक उस पैट्रन को समझ कर आपको बता सकते हैं कि आपने सपने में क्या देखा। ये शोध अभी चल ही रही है

स्रोत-डिसकवरी जीवन का सच

बहुत छाले हैं उसके पैरों में
वो जरूर असूलों पर चला होगा

श्रद्धा और आस्था

– आर.पी. गांधी

श्रद्धा और आस्था दो ऐसे शब्द हैं, जो मानव बुद्धि को जड़ बना देते हैं। श्रद्धा या आस्था में 'क्योंकि' गुंजाइश नहीं है अगर आप क्यों कहते हो तो नास्तिक कहलाते हैं। नास्तिक का दंड नर्क है। यह मान्यता है, जिसके कितने ही उदाहरण मिलते हैं सोमनाथ के मंदिर पर 17 बार हमला होता है और पुजारीगण तांबे के लोटे में पानी डाल चोटियां खोल और महमूद गजनी की तरफ पानी के छींटे फैंकते हुए कहते हैं कि हमारा देवता तबाह और बर्बाद कर देगा। अगर उन्होंने क्यों कहा होता उनकी बात यह समझ में आ जाती कि एक पत्थर की मूर्ति में किसी प्रकार की कोई शक्ति नहीं होती। इसलिए वह किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं कर सकती है, बल्कि वह शस्त्र उठाते और गजनवी का विरोध करते तो महमूद गजनवी दोबारा मंदिर को लूटने न आता। वह हर बार मूर्ति तोड़ देता और लूटपाट करके चला जाता। यहां तक कि बहू-बेटियां भी उठाकर ले गया। यह सब श्रद्धा के कारण हो रहा था। अगर लोग श्रद्धा से बाहर आते और यह सोचते कि मूर्ति में कोई शक्ति नहीं है और शस्त्र उठाकर महमूद गजनवी का मुकाबला करते और शायद वह दोबारा सोमनाथ का रुख न करता।

ऐसे ही स्वामी दयानंद जिनका बचपन का नाम मूलशंकर था। शिवरात्रि के रोज मूलशंकर ने देखा कि एक चूहा मूर्ति पर चढ़ जाता और वहां पर चढ़े फल को झूठा कर देता है। मूलशंकर ने श्रद्धा से बाहर होकर सोचा कि मूर्ति अपने-आप की एक चूहे से रक्षा नहीं कर सकती, तो वह हमारी रक्षा क्या करेगी और उसके पुजारी को कहा कि यह कैसा है तुम्हारा शिव जी चूहे से तुम्हारी रक्षा न कर सका तो हमारी रक्षा क्या करेगा। पुजारी ने जवाब दिया कि यह पत्थर की मूर्ति सच्चा शिव नहीं है। तब वह वहां से उठकर चल दिया और अपने-आप से कहा कि मैं सच्चे शिव की तलाश करूंगा। वापिस घर आकर बहुत विचलित हुआ। जिससे उसके माता-पिता को परेशानी होने लगी। अब उसके माता-पिता ने उसकी शादी करनी चाही, परंतु वह घर छोड़कर भाग गया। उसके बाद कई जगह भटकता रहा। अंत में स्वामी विर्जानद से मिला और उससे शिक्षा ग्रहण की।

शिक्षा के बाद जब उसने गुरु के दक्षिणा की शक्ल में लौंग की थाली को भेंट करना चाहा तो गुरु का उत्तर था, जो कुछ आपने मुझसे सीखा है, उसका समाज में प्रचार करो और मूलशंकर को स्वामी दयानंद का नाम दिया।

स्वामी दयानंद जीवन भर मूर्ति पूजा के विरुध्द प्रचार करता रहा। सत्रह बार उसे मारने के लिए जहर दिया गया, परन्तु उसने सच्चाई का रास्ता नहीं छोड़ा, उसकी यह शिक्षा थी कि पत्थर की मूर्ति जड़ है, बेजान है कि वह हमारे लिए अच्छा या बुरा नहीं कर सकती। अंत में जहर से ही दयानंद की मौत हुई।

ऐसी ही एक घटना मोहम्मद गौरी की है। राजा जयचंद ने पृथ्वी राज को सबक सिखाने के लिए मोहम्मद गौरी को निमंत्रण दिया कि तुम भारत पर हमला करो, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। मोहम्मद गौरी ने गऊओं को कतार में खड़ी कर दिया, जिससे भारतीय फौजों ने श्रद्धा के अंतर्गत तीर नहीं चलाए कि सामने गऊ माता है, जिसका नतीजा यह निकला कि गौरी ने पृथ्वी राज को अपना बंदी बना लिया। यह भी श्रद्धा का ही नतीजा था। श्रद्धा और आस्था के कारण ही भारत ने लंबे समय तक दास्ता सहन की है। इसलिए हमें क्यों का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

वर्तमान की कहानी बाबा राम रहीम जिसको लोग अपना भगवान मानते रहे और श्रद्धा के अंतर्गत उसकी पूजा करते हैं औदर उसकी बुराइयों की तरफ नहीं देखा, जबकि उसने बलात्कार भी किए। अब जब कानून ने अपना काम किया। उसने भक्ति में उपद्रव मचाया,

जिससे 37 लोगों का कत्ल हुआ। सैंकड़ों गाड़ियां जलाई गई। भवनों को नुक्सान पहुंचाया गया और तीन-चार राज्यों में उपद्रव होता रहा, जिससे हरियाणा सरकार की बहुत बदनामी भी हुई। यह श्रद्धा का ही नतीजा है कि एक बदमाश की पूजा होती रही और मनचाही बदमाशी करता रहा। कानून की सख्ती के कारण अंत में उसे जेल जाना पड़ा। सैंकड़ों गाड़ियां रद्द की गई। बसों को बंद किया गया। लोगों को इसी श्रद्धा की वजह से बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा।

ऐसे ही आसाराम जोकि अजमेर की सड़कों पर तांगा चलाता था। साढे चार सौ आश्रमों का मालिक बना और करोड़ों की गिनती में लोग भक्त बने और यह अपनी लूट मचाता रहा और अंत में अपनी पोती की उम्र के साथ बलात्कार करता रहा और अब पिछली चार साल से जोधपुर की जेल में पड़ा है। और आसाराम के जन्म दिन के अवसर पर इसके श्रद्धालु जेल के बाहर आरती उतार रहे थे और दीवारों को ही दंडवत प्रणाम कर रहे थे।

ऐसे ही बाबा रामपाल सिंचाई विभाग में एक जेई था। लोगों को श्रद्धालु बनाने में सफल हुआ, जिसके पास एक स्कूटर हुआ करता था, वह कितनी ही गाड़ियों का मालिक बना। कई दिन तक पुलिस के साथ गोलीबारी होती रही। उसके डेरे से बहुत मात्रा में हथियार बरामद हुए। आज जेल में बंद है।

दक्षिण में शंकराचार्य जिसने अपने मैनेजर का कत्ल करवा दिया था। कई महीने तक उसकी जमानत नहीं हो पायी थी। श्रद्धा के अंतर्गत अपने भक्तों को बेवकूफ बनाते हुए धन इक्ट्ठा करते रहे और अपने भक्तों की मेहनत की कमाई लूटते रहे। जब भी कानून ने अपना काम किया, इनको मुंह की खानी पड़ गई और अज्ञानता और अनपढ़ता के कारण कितने ही लोग मूर्ख बनाए जाते हैं।

इलाहाबाद कुंभ के मेले पर 7 करोड़ लोग गंगा के गंदे जल में डुबकी लगाकर पाप उतारने का प्रयास किया। सूर्य ग्रहण के अवसर पर हरियाणा के मंत्री कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर पर श्रद्धा के कारण डुबकियां लगाते रहे।

एक बार कुछ श्रद्धालुओं ने मछलियों को गुड़ दिया तो मछलियां मर गई और बदबू फैल गई।

कुरुक्षेत्र में चंडी यज्ञ के अवसर पर कितने ही यज्ञ किए गए, जिससे वायुमंडल दूषित हुआ।

श्रद्धा बिमारियों का कारण बनती है। जनता को श्रद्धा से बाहर क्यों और कैसे का प्रयोग कर श्रद्धा से बाहर होना पड़ेगा और अगर वह देश का विकास चाहते हैं और देश को उन्नत करना चाहते हैं तो क्यों और कैसे का उपयोग जरूरी है।

आज जितनी भी उपलब्धियां मनुष्य के पास हैं, उसमें क्यों और कैसे का ही हाथ है। एक छोटा सा यंत्र मोबाइल जिसकी सहायता से हम पूरे विश्व से जुड़ जाते हैं, वीडियो कॉल के कारण, जिससे हमारा चित्र सामने वाले के पास पहुंच जाता है।

चौकीदारी के लिए ड्रोन की खोज बहुत काम की चीज है। ऊंचाइयों पर जाकर आसपास के सारे चित्र धरती पर भेजता है, जिससे हम अपने दुश्मन की गतिविधि पर नजर रखते हैं और हर प्रकार के रास्ते ढूंढे जा सकते हैं।

एक जमाना था देश की महिलाएं लकड़ी से चुल्हा जलाती थी। धुएं से सांस लेना दुभर हो जाता।

आज विज्ञान के कारण खाना गैस पर पकने लगा और महिलाओं को सुविधा मिलने लगी।

एलसीडी पर दुनिया के समाचार देखे जा सकते हैं। विश्व में जो कुछ भी घट रहा है, उसको जानने में बहुत बड़ी सहायता मिलती है। इसलिए हमें हर प्रकार की श्रद्धा से बाहर वैज्ञानिक सोच का सहारा लेना है, ताकि लूट-खसूट करने वाले बाबाओं से गरीब जनता का शोषण न हो। यह लोग स्वर्ग का लालच और नर्क का डर दिखाकर भोली-भाली जनता को लूटा जाता है। इसलिए हम सबका दायित्व बनता है कि हम ठगों के चक्कर में न पड़ें, जो अंधविश्वास श्रद्धा के सहारे आस्था की बात करते हैं और समाज का शोषण करते हैं। हमें हमेशा क्यों और कैसे का प्रयोग कर अंधश्रद्धा को त्यागना होगा।

मो. 93154-46140

★★★

डर का हथियार

–देशबंधु

आदमी के द्वारा आविष्कृत सबसे बड़े हथियार का नाम है, डर। आदिम काल से ही इंसान ने दूसरों पर काबू पाने के लिए डर का इस्तेमाल किया। जब विज्ञान की समझ विकसित नही हुई थी तो प्रकृति का डर लोगों में भरा था, जिसका परिणाम यह हुआ कि पेड़-पौधों से लेकर सूर्य-चंद्रमा, ग्रहों और नदी-तालाबों की पूजा होने लगी। शुरु में इसमें आदर भाव था, बाद में केवल अंधविश्वास का भाव स्थायी हो गया। प्रकृति का विज्ञान समझ में आ गया, लेकिन अंधविश्वास दूर नहीं हुआ। शायद इसी मनोवृत्ति को कुछ चतुर-सुजान लोगों ने समझकर सदियों तक अपना वर्चस्व स्थापित करने की चाल चली और देश में जातिप्रथा की जड़ें फैलती गई।

एक जाति, दूसरी जाति से डरती रहे, एक धर्म, दूसरे धर्म से खौफ खाता रहे, इसी में कुछ लोगों की स्वार्थपूर्ति होती है और शेष समाज उसका खामियाजा भुगतता है। जब ऐसा लगता है कि समाज आगे बढ़ रहा है, या उसमें चेतना फैल रही है या लोग अपने हक के लिए जागरूक हो रहे हैं, या उनका ध्यान सत्ता, धन की शक्ति से संपन्न लोगों की चालाकियों पर जा रहा है, फौरन डर के प्रसार की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। सवालों के जवाब देने से बचने की सुविधा के लिए डर नाम का हथियार बड़े काम आता है। विद्यार्थी को असफल होने का डर दिखाया जाता है, व्यापारी को घाटे का, महिलाओं को इज्जत का, सेहतमंद को बीमार होने का और बीमार को मरने का डर दिखाया जाता है। जिनके पास डरने का कोई कारण नहीं होता, उन्हें परलोक बिगड़ने से डराया जाता है। जितने तरह के डर होंगे, बाजार में दुकानें भी उतनी तरह की खड़ी होंगी। भारतीय बाजार में हम देखते ही हैं कि नींबू-मिर्ची से लेकर काली चोटी बुरी नजर से बचने के लिए खूब बिकती हैं। लेकिन तरह-तरह के कोचिंग संस्थान, निजी बीमा कंपनियों का व्यापार, महंगे अस्पताल, ओझाओं, तांत्रिकों, बाबाओं के आश्रम इनका धंधा भी डर नामक हथियार के दम पर ही चलता और फलता-फूलता है। बाजार को शायद इस वक्त फिर अधिक मुनाफा देने वाले व्यापार की जरूरत पड़ गई है, या समाज में किसी किस्म की जागरूकता की सुगबुगाहट नजर आ रही है, तो एक नया डर खड़ा कर दिया गया, चोटीकटवा का। डर की सवारी अफवाह होती है, जिसकी गति शायद कवि के मन से भी अधिक होती है। हाल ही में उत्तर भारत के बड़े हिस्से में अफवाह फैली कि कोई अज्ञात शक्ति महिलाओं की चोटी काट रही है। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा, दिल्ली के कई हिस्सों से चोटी कटने-काटने की खबरें आ रही हैं, जिनके कारण 24 घंटे चलने वाले चौनलों की व्यस्तता और बढ़ गई है। चोटी काटने इंसान आता है या पक्षी अभी इस पर खबरों का बाजार गर्म है। यह देखना रोचक है कि ऐसा करने वाले को केवल लड़कियों की चोटी दिख रही है, लड़कों के बाल नहीं।

बहरहाल, इस नए डर का असर यह हो रहा है कि कहीं हेलमेट पहन कर लड़कियां सो रही हैं, कहीं कपड़ा बांध कर। आगरा में तो एक वृद्धा को चोटी काटने के शक में पीट-पीट कर मार दिया गया। मारने वाले यही मानते होंगे कि ऐसा काम कोई महिला ही कर सकती है। इस पूरे प्रकरण में यह नजर आ रहा है कि इस अफवाह का निशाना महिलाएं ही हैं। महिलाओं का आगे बढना, जागरूक होना पुरुषप्रधान समाज को कई बार खटकता है। क्या इस बार तकलीफ इतनी बढ़ गई है कि उन्हें चोटी काटने के नाम पर आतंकित किया जाए? वैसे भारत में अफवाहों का धंधा पहले से जमा-जमाया है

और इसका लाभ उठाने वाले जानते हैं कि कब, कौन सी अफवाह से फायदा मिलेगा।

याद करें 21 सितम्बर 1995 का दिन, जब गणेश की मूर्ति को अफवाहों के दम पर दूध पिला कर दिखा दिया गया था। बिना सोशल साइट्स के, पूरे देश में एक ही दिन ऐसी अफवाह फैल गई, तो अनुमान लगा लीजिए कि अफवाहखोरों का सूचना और प्रसार विभाग कितना ताकतवर है। उस दिन गणेश जी को इतना दूध पिला दिया गया कि आज 22 साल हो गए, उन्हें फिर दूध पीने की जरूरत नहींहुई। मूर्ति को दूध पिलाने की अफवाह के सफल प्रयोग से फिर मुंह नोचवा, मंकी मैन आदि का सृजन हुआ। कुछ रातों तक लोगों को डरा कर ये न जाने किस बिल में छिप गए।

अब चोटीकटवा नामक नए जीव के बारे में बातें फैलाई जा रही हैं। जब तक लोग इसके आतंक में रहेंगे और बचने के लिए नए-नए उपायों के बारे में सोचते रहेंगे, तब तक शायद देश में कोई बड़ा काम चुपके-चुपके कर लिया जाएगा और समाज को इसकी भनक भी नहींलगेगी। जब अफवाह के बूते डर फैलाने वालों का मकसद पूरा हो जाएगा तो चोटीकटवा भी विलुप्त प्राणी हो जाएगा। याद रखें कि अफवाहें नफरत करने वालों द्वारा गढ़ी जाती हैं, मूर्खो के द्वारा फैलाई जाती हैं और बेवकूफों के द्वारा स्वीकार की जाती हैं। नरेन्द्र दाभोलकर, गोविंद पानसरे, एम एम कलबुर्गी जैसे लोगों ने इन्हीं बुरी ताकतों से समाज को बचाना चाहा था। लेकिन उन्हें मार दिया गया। अब यह समाज को तय करना है कि उनकी मौत को व्यर्थ जाने दे या बिना सिर-पैर की अफवाहों से डर कर डराने वालों को सफल होने दे। ✶

हरियाणवी गीत

बेटी हिन्दुस्तान की

रामधारी खटकड़

सुण बेटी हिन्दुस्तान की तू बहोत घणी होशियार
जगत म्हं हो नाम...है तेरी चाहूं जय-जयकार...।

समाज म्हं प्रदूषण बढग्या, इसनै दूर हटाईये बेटी
नशीली इस संस्कृति म्हं बिल्कुल खो ना जाईये बेटी
विज्ञापन की चमक-दमक तै अपणा गात बचाईये बेटी
गुण्डागर्दी छीन्नाझपटी जगह - जगह इब दीक्खै हे
बाजार गर्म है नंगेपण का, हर चौनल पै चीखै हे
माडल आला सपना लेकै , नया ऐब ना सीखै हे
बुराई तै टकरा...और नया माहौल कर त्यार...
जगत म्हं हो नाम...

भगतसिंह की दुर्गा भाभी, तनै बणाणा चाहूँ सूं
शहीदां नै इस देश के अन्दर फेर बुलाणा चाहूँ सूं
भ्रष्टाचारी इस सिस्टम तै पिण्ड छुड़ाणा चाहूँ सूं
कमरे म्हं फिल्मी चित्र , बिल्कुल ना चिपकाईये हे
बिगड़ी जा रही शान देश की , इसनै ईब बचाईये हे
चन्द्रशेखर राजगुरू सुखदेव का फोटू लाईये हे
चाहिए सै हथियार...हे ले ज्ञान हथियार....
जगत म्हं हो नाम...

काला चश्मा तार आंख तै , आंख खुलैगी तेरी हे
नन्हीं - नन्हीं जान देश की ढाब्यां पै दुख खे री हे
बर्तन मलमल जिन्दगी को ये मुश्किल धक्का दे री हे
किते-किते गोदाम सड़ैं , किते भूखे बच्चे रोते हैं
टूक मिलै ना पेट भराई, सुबक - सुबक कै सोते हैं
लाल किले पै झण्डे नीचौ, नेता नाव डुबोते हैं
मिलकै इसे बचा...ना तै डुब्बैगी मझधार...
जगत म्हं हो नाम...

स्वाभिमान तै जीणा सीख, बात मेरी ले मान लाडली
हर क्षेत्र म्हं आगै बढकै, हिन्द की बणज्या शान लाडली
तेरे लबों से सुणना चाहूं, जागृति का गान लाडली
दुनियां म्हं म्हारी इज्जत बढज्या, ऐसे करिये काम हे
तेरा पिता मैं न्यूं चाहूं , तू म्हारा कर दे नाम हे
हम जीन्द जिले के रहणे ओ, खटकड़ सै म्हारा गाम हे
रामधारी नै तू गा...फेर नया बसै संसार...
जगत म्हं हो नाम...

ओझा के कहने पर पिता ने आठ साल की बेटी को दो टुकड़ों में काट डाला

भास्कर न्यूज नेटवर्क। जमशेदपुर : अंधविश्वास में पड़कर एक पिता ने अपनी ही 8 साल की बेटी यमुना की हत्या कर बलि चढ़ा दी। पहली पत्नी के छोड़कर चले जाने के बाद दूसरी पत्नी भी कहीं छोड़ न दे, इस भय से पिता अपनी 8 साल बेटी को जंगल के बीच खेत में ले गया और बलि चढ़ा दी।

घटना 26 अक्तूबर की है। घटना के दो दिन बाद 28 अक्तूबर को पुलिस ने हत्यारे पिता को गिरफ्तार कर लिया। हत्यारे पिता की निशानदेही पर पुलिस ने दो टुकड़ों में बंटे राम बचन की बेटी का सिर व धड़ भी जंगल से बरामद कर लिया है।

राम बचन को जेल भेजने के बाद पुलिस अब ओझा की तलाश में जुट गई है। पुलिस के अनुसार कोमना थाना अंतर्गत सुनबेड़ा अभयारण्य स्थित ढकूंपाणी गांव के राम बचन पहाड़िया ने 20 वर्ष पूर्व शादी की थी। विवाह के कुछ ही माह बाद पत्नी उसे छोड़ कर भाग गई थी। एक साल बाद उसने दूसरी शादी कर ली। दूसरी पत्नी से उसे एक बेटी और दो बेटे हैं। राम बचन ने ओझा को बताया था कि उसकी पहली पत्नी शादी के कुछ ही माह बाद छोड़ कर चली गई थी। साथ ही आशंका जताई की कहीं दूसरी पत्नी भी तो छोड़ कर नहीं भाग जाएगी। ओझा ने रामबचन से कहा था कि अगर उसने नर बलि नहीं दी, तो दूसरी पत्नी भी छोड़ कर भाग जाएगी। ओझा की यह बात सुनकर रामबचन डर गया। उसने सोचा कि पहली पत्नी की तरह दूसरी भी न छोड़ कर चली जाए। लिहाजा, उसने ओझा की बात मान ली व अपनी बेटी की बलि चढ़ा दी।

इस संबंध में परिवार या गांव के किसी भी व्यक्ति ने थाने में कोई सूचना नहीं दी। घटना की खबर सुनकर पुलिस को स्वतः संज्ञान लेकर मामला दर्ज कर अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया है।–दैनिक भास्कर ✶

बाबाओं के काले कारनामें

दुष्कर्म मामले में जैन मुनि शांति सागर गिरफ्तार

सूरत –जैन मुनि शांति सागर महाराज को शानिवार देर रात दुष्कर्म के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया गया। मूल रूप से मध्य प्रदेश कीनिवासी 19 साल की लड़की ने उन पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। गुजरात के सूरत में पुलिस ने शुक्रवार के उनके खिलाफ केस दर्ज किया। शनिवार को मेडिकल जांच में दुष्कर्म की पुष्टि होने के बाद जैन मुनि को गिरफ़्तार कर लिया गया। सूरत पुलिस के आयुक्त सतीष शर्मा ने बताया कि लड़की वडोदरा में कॉलेज में पढ़ती है। लड़की ने सूरत के पुलिस आयुक्त को पत्र लिख कर जैन मुनि पर दुष्कर्म का आरोप लगाया था। आरोप है कि जैन मुनि ने एक अक्टूबर को शहर के नानपुरा टीमलियावाड जैन मंदिर में उससे दुष्कर्म किया। अपने परिजनों के वह धार्मिक कार्यक्रम के सिलसिले में वहां गई थी। जैन मुनि इस दौरान सूरत में चातुर्मास के लिए रह रहे थे। आरोपों की पुष्टि होने के बाद शुक्रवार को केस दर्ज किया गया।

लड़की ने बताया कि अपने माता पिता के सारथ मंदिर गई थी मुनि ने माता पिता को मंत्र जप के लिए भेज दिया तथा दूसरे कमरे में उससे दुष्कर्म किया। मुनि ने धमकाया कि विरोध करने या शाोर मचाने पर मां–बाप मर जाएंगे। वह डर गई और विरोध नहीं किया।

–भास्कर–15–10–2017

✶

तांत्रिक बनकर गिरोह ने वृद्ध से ठगे 80 लाख रुपए

रोहतक, 6 दिसम्बर (सोमनाथ शर्मा)-तांत्रिक बनकर खेत में दबे हुए खजाने को दिलवाने का लालच देकर वृद्ध व्यक्ति से करीब 80 लाख रुपए ठगने का मामला सामने आने पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए जांच शुरू कर दी।

जांच पड़ताल में पुलिस ने गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां उसे 5 दिन के रिमांड पर भेज दिया। गांव बलियाना निवासी बीरभान ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि उसकी 12 एकड़ कृषि योग्य भूमि सन् 2009 में हरियाणा सरकार द्वाा आईएमटी के लिए अधिग्रहण की गई थी। जो उसे मुआवजे के लगभग 2 करोड़ 75 लाख रुपए मिले थे।

2 करोड़ रुपए में उसने 10 एकड़ भूमि व दो प्लाट खरीदे थे। बाकी रकम उसके खाते मेंथी। नामालुम तांत्रिकों ने उसे बहला-फुसलाकर अपने झांसे में लेकर उसके खेत में दबा हुआ खजाना दिलवाने के लिए उससे करीब 80 लाख रुपए अलग-अलग समय में पिछले 3 साल से लेते रहे। तांत्रिकों द्वारा बताया गया कि पूरी कार्रवाई गोपनीय रखनी है तथा किसी को कुछ नहीं बताना। 24 नवंबर को उसे अलग-अलग मोबाइल नंबर से और पैसे देने बारे कहा गया।

जो उसके द्वारा इन्कार करने पर उसे व उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई।

पुलिस अधीक्षक पंकज नैन ने मामले की गहनता देखते हुए मामले की जांच निरीक्षक नवीन कुमार के नेतृत्व में सीआईए-1 को सौंपी है। स.उप.नि. नरेन्द्र ने छापेमारी करते हुए 2 दिसम्बर को गिरोह में शामिल गांव कैरू जिला भिवानी निवासी अनिल को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां उसे पांच दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया है। -दैनिक सवेरा

अभिनेत्री के साथ बंगलूरू के बाबा का वीडियो वायरल

बंगलूरू-एक अभिनेत्री के साथ आपत्तिजनक हालत में एक मठ के बाबा का वीडियो वायरल होने पर विवाद हो गया है। इस वीडियो के सोशल मीडिया पर जारी होने के बाद लोगों ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया। एक स्थानीय चैनल ने गुरू नंजेश्वर शिवाचार्य स्वामी ऊर्फ दयानंद का एक अभिनेत्री के साथ वीडियो चलाया। हालांकि चैनल ने अभिनेत्री का चेहरा धुंधला कर दिया था। वीडियो में दिख रहा है कि अभिनेत्री बाबा के साथ आपत्तिजनक हालत में है। वीडियो के सामने आने के बाद से ही बाबा फरार है। घटना के सामने आते ही पुलिस किसी भी प्रकार की कानून एवं व्यवस्था की समस्या न पैदा हो इसलिए मठ पहुंच गई। वहीं जनता के आक्रोश को देखते हुए लिंगायत समुदाय के कुछ बाबाओं ने उसकी निंदा की और उसे पद से हट जाने की मांग की। एजेंसी

अमर उजाला 27-10-17

✶

प्रदीप मिश्र की कविता

घर्षण

बहुत सारी उर्जा संचित होती है जड़ता में
जिसे तोड़ने के लिए चाहिए होती है
बहुत बड़ी ईच्छाशक्ति

जड़ता के टूटते ही
गति में बदल जाती है सारी ऊर्जा
जीवन संगीत बजने लगता है

गति की यात्रा मृत्यु की तरफ होती है
मृत्यु अंततः जड़ता
भला हो घर्षण का जो
जड़ता और गति के बीच पिसता रहता है
और बचाता रहता है जीवन।

✶

आश्रम में सेक्स रैकेट आरोपी बाबा वीरेंद्र दीक्षित फरार

दिल्ली में स्पिरिचुअल यूनिवर्सिटी नाम की संस्था में हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त सीबीआई टीम ने गुरुवार को कार्रवाई को उत्तर दिल्ली के रोहिणी इलाके स्थित बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित के आश्रम में 9 घंटे तक कार्रवाई कर 41 लड़कियों को छुड़ाया। इनमें से से ज्यादातर लड़कियां नाबालिग थीं। दिल्ली, पंजाब, यूपी, हरियाणा और राजस्थान व नेपाल में वीरेंद्र देव के आश्रम हैं।

महिला आयोग व चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के ज्वाइंट रेस्क्यू ऑपरेशन में आश्रम में मौजूद 170 से ज्यादा महिला और लड़कियों में से 41 नाबालिग लड़कियों को निकाल कर शेल्टर होम पहुंचाया गया है। एक पीड़ित की मां ने बताया कि उसकी 4 बेटियां बाबा के चंगुल में हैं। उनमें एक नाबालिग है। यह कोई आश्रम नहीं कैदखाना है, जहां लड़कियों को ब्रेनव वाश करके रखा जाता है। उनसे कहा जाता है कि वे अगर खुद को बाबा को समर्पित कर देंगी तो उनको मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। प्रसाद देने के नाम पर वह लड़कियों से गलत काम करता था।

-एक पूर्व सेविका ने बताया कि पहले इस आश्रम का नाम आध्यात्मिक स्पिरिचुअल यूनिवर्सिटी था और यह माउंट आबू के ब्रह्मकुमारी से जुड़ा था, लेकिन बाद में दीक्षित बाबा उससे अलग हो गया।

बाबा की मदद के लिए यहां इसकी भरोसेमंद शिष्याओं की एक टीम है, चार चेले भी हैं। ये बाबा के इशारे पर बाबा की बात न मानने वाली लड़कियों को न सिर्फ मारते- पीटते थे, बल्कि उनके साथ गंदा काम करते है। कई लड़कियां आश्रम में मर जाती थीं, उन्हें रात 12 बजे बाद कहीं ले जाकर जला दिया जाता था और फिर जमीन में दफना देते थे। -समाचारपत्रों व चैनलों स ेसंकलित

पृष्ठ 17 का शेष..(रात दिन कैसे,,).

। ग्रेगोरियन वर्ष आरम्भ होने के समय अर्थात जनवरी में सूरज दक्षिणी गोलार्ध में होता है फिर वह उत्तरी गोलार्ध में जाना शुरू करता है मकर संक्रांत से। लेकिन दिसंबर आते आते फिर दक्षिणी गोलार्ध में पहुँच जाता है । इस तरह आते जाते सूर्य वर्ष में दो बार भूमध्य रेखा पर होता है । असल में सूर्य कहीं नहीं जाता वस्तुतः यह भी पृथ्वी के घूमने के कारण ही होता है । अयनांत को कुछ इस तरह भी समझ सकते हैं कि जून में यदि उत्तर ध्रुव से देखा जाए तो सूर्य सर्वोच्च ऊंचाई पर होता है इसे ग्रीष्म अयनांत कहते है उसी तरह दिसंबर में यह सूर्य दक्षिण ध्रुव से देखा जाए तो यह वहाँ से सर्वोच्च ऊंचाई पर होता है ऐसा दिसम्बर में होता है इसलिए उसे शीत अयनांत कहते हैं । जो एक ध्रुव के लिए ग्रीष्म अयनांत होता है वह दुसरे ध्रुव के लिए शीत अयनांत होता है

मतलब यह कि अभी फरवरी का महीना है और दिन बड़े होते जा रहे हैं' मैंने निष्कर्ष दिया । इस वक्त चाँद हमारे सामने था और हमारी यह गुस्ताखी थी कि हम चाँद की बात न करके सूरज की बात कर रहे थे । चाँद हमसे नाराज न हो जाए इसलिए मैंने अपने भीतर के वैज्ञानिक, खगोलज्ञ और पुरातत्ववेत्ता से कहा, 'तुम अभी चुप रहो' और कवि से कहा .. 'कोई कविता सुनाओ' मैंने गुनगुनाना शुरू किया .. और बेसाख्ता मेरे मुँह से एक गीत फूट पड़ा..“ये पीला बासंतिया चांद संघर्षो का, ये दिया चांद। चंदा ने कभी रातें पी थीं, रातों ने कभी पी लिया चांद ।” कभी 'क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल' में अध्ययन के दौरान कवि रमेश यादव से यह गीत सुना था।” बस कर यार “इतनी ठण्ड में तुझे बासंतिया चांद कहाँ से दिखाई दे रहा है ?'' रवीन्द्र भारद्वाज ने मेरे भीतर के कवि और गायक से पुरातत्ववेत्ता की तरह सवाल किया । मेरा रूमानियत का किला उसके इस डायनामाईट से ध्वस्त हो चुका था ..मैं भौंचक होकर उसकी ओर देखता रहा कि अचानक मुझे चुप कर वह खुद शुरू हो गया 'शरद रैन मदमात विकल भई, पिउ के टेरत भामिनी कैसी, कैसी निकसी चांदनी कैसी..चांदनी चांदनी चांदनी....। उसके बाद हम लोग बसंत और शीतऋतु के कालखंड और अयनांत पर बहस करते हुए अपने तम्बू में वापस आ गये।

-000-

खोज खबर

हड्डी टूटने पर न प्लास्टर होगा, न प्लेट डलेगी

भारत और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने तैयार किया सस्ता बायो मैटीरियल, दर्द से भी मिलेगा छुटकारा

अगर हादसे में आपके हाथ-पैर की कोई हड्डी टूट जाती है तो अब महीना भर प्लास्टर चढ़ाने या प्लेट्स डालने की जरूरत नहीं होगी।

भारत और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने संयुक्त शोध कर एक ऐसा बायो मैटीरियल तैयार किया है जो जल्द ही टूटी हड्डी को जाड़ देगा। प्लास्टर या प्लेट्स की तरह इस बायो मैटीरियल को ऑपरेशन से निकालने की जरूरत नहीं होगी। हड्डी जोड़ने के बाद यह मैटीरियल अपने आप ही शरीर में खत्म हो जाएगा। इससे मरीज को दर्द से भी जल्द ही छुटकारा मिलेगा। प्लेट्स के मुकाबले बायो मैटीरियल काफी सस्ता होगा। इस मैटीरियल पर अंतिम शोध का कार्य चल रहा है। अमेरिका की लैब में टेस्टिंग के बाद हेल्थ एसोसिएशन यूएसए की अंतिम स्वीकृत के बाद इसे बाजार में उतारने की तैयारी है।

मंडी (हिमाचल प्रदेश) के धर्मपुर उपमंडल के भरोरी निवासी डॉ विजय कुमार शर्मा, उनकी पत्नी डॉ. क्षमा शर्मा, आआईटी कानपर के डॉ. राजू कुमार गुप्ता, डॉ कार्तिकेय वर्मा और अमेरिका के युवा वैज्ञानिक प्रो, अली खदमोसेसीनी इस प्रोजेक्ट पर शोध कर रहे हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सस में कार्यरत डॉ.अखिलेश भी इस प्रोजेक्ट में सहयोगी हैं।

कुछ बिमारियां में उपवास रखना होता है खतरनाक

सावन के दिनों में कई लोग उपवास रखते हैं। उपवास रखने के सेहत से जुड़े कई तरह के फायदे भी होते हैं। लेकिन कुछ बिमारियों या हेल्थ प्रॉब्लम में डाक्टर उपवास रखने को मना करते हैं, क्योंकि इससे कई तरह की समस्याएं बढ़ सकती हैं। आगे की तस्वीरों में पढ़ें कि कौन सी बीमारी होने पर आपको उपवास नहीं रखना चाहिए.... अनीमिया-जिन लोगों में खून की कमी है यानी जो लोग अनीमिक हैं, उन्हें व्रत रखने से बचना चाहिए क्योंकि इससे शरीर में कमजोरी और थकान बढ़ सकती है।

डायबीटिज-डायबीटिज के पेशंट्स के लिए सही समय पर खाना और दवाइयां दोनों जरूरी होते हैं। अगर वे उपवास रखते हैं तो समस्या बढ़ सकती है। हाई बीपी-हाई बीपी के पेशंट्स अगर उपवास रखते हैं तो उनका बॉडी सिस्टम बिगड़ सकता है। इससे सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

हार्ट पेशंट्स- हार्ट के पेशंट्स को खाने-पीने पर काफी ध्यान देने की जरूरत होती है। अगेर वे लंबे समय तक भूखे रहते हैं, तो इससे शरीर के फंक्शन पर बुरा असर पड़ सकता है। किडनी पेशंट्स-जिन लोगों की किडनी में किसी तरह की कोई समस्या है, वे व्रत न करें। इससे किडनी फेल होने का खतरा बढ़ सकता है। लंग्स और लीवर- जिन लोगों के फेफड़े में गंभीर बीमारी है या फिर जिनका लीवर डैमेज्ड है, उन्हें भी उपवास नहीं रखना चाहिए। इससे समस्या और भी बढ़ सकती है।

गर्भवती-वैसे तो प्रेग्नेंसी कोई बीमारी नहीं है, लेकिन इस दौरान मां और बच्चे दोनों को ज्यादा पोषण की आवश्यकता होती है। ऐसे में अगर गर्भवती महिला व्रत रखती है, तो इससे महिला और शिशु दोनों पर बुरा असर पड़ सकता है।

✶

एक कर सकता है, पर सौ नहीं!

मेले, हाट आदि में, कांटों की शैया पर लेटकर, अपनी अलौकिक शक्ति (?) का प्रदर्शन करते हुए साधुओं को आपने देखा ही होगा। एक सरल प्रयोग से यह मालूम करने की कोशिश करते हैं कि इसके पीछे का विज्ञान क्या है?

जरूरी सामान :

- लगभग 100 टूथपिक और गुबारे।

इस तरह से करें :

- एक गुब्बारा फुलाएं और उसमें टूथपिक चुभो दें। गुब्बारा तुरंत फूट जाता है।
- टूथपिक का बंडल रबर बैंड से बांध लें और टेबल पर थपथपाकर नुकीले सिरे एक लेवल में ले आएं। अब इस बंडल को किसी फूले हुए गुब्बारे पर रखकर दबाएं। धीरे-धीरे दबाव बढ़ाकर देखें। गुब्बारा आसानी से नहीं फूटता।

कुछ चर्चा :

- जब हमने एक टूथपिक चुभोई, तब सारा बल एक ही बिन्दू पर केंद्रित था। लेकिन जब टूथपिक का बंडल लिया, बल कई बिन्दुओं पर बंट गया। हालांकि, आप बल तो काफी ज्यादा लगाते हैं, लेकिन बंटवारे के कारण, गुब्बारे के हर बिन्दु पर, काफी कम बल लगता है।
- अब इस बात पर भी विचार करें कि किसी सख्त सतह के मुकाबले बिस्तर पर सोना क्यों सुखद या आरामदेह लगता है?

क्या भारी वस्तु तेज गति से गिरती है?

यह सामान्य समझ है कि भारी वस्तु हल्की वस्तु के मुकाबले जल्दी नीचे गिरती है। रोजमर्रा के अनुभव भी इस समझ को पुख्ता करते हैं। हम हमेशा देखते हैं कि कागज, सूखी पत्तियां धीरे-धीरे गिरती हैं, जबकि पत्थर जल्दी गिरता है। लेकिन क्या हमारी सामान्य समझ हमेशा सही होती है? इस बात की जांच के लिए आपको चाहिए सिर्फ एक किताब और एक कागज।

इस तरह से करें:

- एक हाथ में किताब और दूसरे हाथ में कागज, दोनों को आड़ा रखते हुए, समान ऊंचाई से छोड़ दें। किताब तेजी से गिरती है और कागज धीरे-धीरे।
- अब कागज को किताब के ऊपर रखकर पहले की तरह ही छोड़ना है। इस बात का ध्यान रखें कि कागज किताब से बाहर न निकले। क्या इस बार भी कागज और किताब की गिरने की गति अलग-अलग है?

कुछ चर्चा :

- कागज हल्का होने के कारण, हवा का प्रतिरोध उसकी गति को काफी धीमा कर देता है। जब हम कागज किताब पर रखते हैं तो हवा के प्रतिरोध का सामना सिर्फ किताब से ही होता है। इसलिए किताब और कागज दोनों साथ-साथ गिरते हैं।
- महान वैज्ञानिक गैलीलियो (इटली) पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रयोग द्वारा साबित किया कि अलग-अलग वजन की वस्तुएं भी (निर्वात में) समान गति से ही गिरती हैं।

★★★

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी की ओर से अंधविश्वास के खिलाफ आयोजित अलग-अलग कार्यक्रम

1. श्री आर.पी. गांधी ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय यमुनागनर में एक प्रोग्राम का आयोजन किया, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल दिया गया। शशि गुप्ता ने इस कार्य में सहयोग किया।
2. राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रेलवे वर्कशाप, जगाधरी में भी श्री आर.पी. गांधी ने खगोल शास्त्र पर प्रकाश डाला। खगोल शास्त्र एक विज्ञान है, परंतु ज्योतिष इसको मानव भाग्य के साथ जोड़ता है, जिसका कोई आधार नहीं। अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के गांधी जी ने संतोषजनक उत्तर दिए। यह एक सफल प्रोग्राम रहा।
3. स्पिरिंग डेल पब्लिक स्कूल जगाधरी वर्कशाप में भी आर.पी. गांधी द्वारा वैज्ञानिक सोच पर एक सैमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने गहरी दिलचस्पी ली और प्रश्नों द्वारा अपनी शंकाओंका निवारण किया। स्कूल की प्रिंसीपल अनीता सरदाना प्रोग्राम से बहुत प्रभावित हुई और प्रोग्राम की सराहना की। श्री रामनाथ बंसल, सेवानिवृत प्राध्यापक ने इस कार्यक्रम में अपना भरपूर योगदान दिया।
4. राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बूड़िया (यमुनानगर) में कुमारी सुमन शर्मा, रसायन प्राध्यापिका के सहयोग से एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में श्री आर.पी. गांधी ने ब्रह्माण्ड उत्पत्ति के विषय में विस्तार से जानकारी दी। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के विषय में भी विस्तार से अपनी बात कही। अंत में विद्यार्थियों ने जो प्रश्न किए, उनका संतोषजनक उत्तर दिया। स्कूल के प्रिंसीपल ने गांधी जी का धन्यवाद किया।
5. बाल भवन उच्च विद्यालय कांसापुर रोड यमुनानगर में भी श्री रामनाथ बंसल के सहयोग से श्री आर.पी. गांधी ने वैज्ञानिक चिंतन पर अपने विचार रखे और विद्यार्थियों को समझाते हुए कहा कि विवेक और तर्क के सहारे अंधविश्वास से बचा जा सकता है। श्री रामनाथ ने बताया कि अंधविश्वास ने समाज को बहुत नुक्सान पहुंचाया है।
6. 5 सितम्बर 2017 को अध्यापक दिवस के अवसर पर श्री रामाकृष्णा हाई स्कूल, बैंक कालोनी, यमुनानगर में भी अध्यापकों के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री आर.पी. गांधी ने इस आयोजन में अध्यापकों को अपना नवीनीकरण करने का परामर्श दिया। पुरानी पद्धति अब अव्यवहारिक हो गई है। अध्यापकों को समय के अनुसार अपने अध्यापन के तौर तरीकों में आवश्यक बदलाव लाना होगा। नई-नई वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करने के साथ-साथ अध्यापक को अपने व्यवहार में भी बदलाव लाना होगा। इस कार्यक्रम में श्री शशि गुप्ता ने भी सहयोग दिया। स्कूल की प्रिंसीपल मीरा दाबड़ा और निर्देशक श्री मुकेश दाबड़ा ने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए श्री गांधी जी का धन्यवाद किया।
7. बूड़िया (यमुनानगर) मे किसी औरत की रात को चोटी कटने की खबर समाचार पत्र में आई थी। गांव के कुछ लोगों के अनुरोध पर श्री आर.पी. गांधी जी, श्री इंद्रजीत कमल, हरभजन सिंह लट्ठा और गौतम शर्मा, चार सदस्यीय तर्कशील टीम बूड़िया पहुंची। लोगों को समझाया गया कि यह कार्य किसी जिन्न-भूत का नहीं है, क्योंकि इनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। इकसे पीछे मनोवैज्ञानिक कारण होता है। संबंधित स्त्री ने माना कि उसने अपने परिवार के सदस्यों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ऐसा किया थ। बाकी तीन केसों में भी कोई ऐसा ही कारण था। देखने पर पता चला कि इसके पीछे अनपढ़ता और पिछड़ापन भी एक मुख्य कारण था। गांव के लोगों में एक भय व्यापत था जिससे उनको राहत मिली। ✶

आर.पी. गांधी, 50, लक्ष्मीनगर, यमुनानगर, मो. 93154-46140

गांव बुढाखेड़ा (सफीदों) में तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 12 नवम्बर 2017 को सौरभ स्कूल बुढाखेड़ा में चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम के तहत एक तर्कशील प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में ग्लोबल ह्यूमैन अवेयरनैस सोसायटी हरियाणा के तत्वाधान में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत चल रहे स्वयं रोजगार सिलाई सैंटर का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में श्री सत्यवान सैनी, वरिष्ठ अधिकारी रेल मंत्रालय, भारत सरकार ने मुख्यातिथि के तौर पर शिरकत की।

कार्यक्रम में राम प्रसाद व वेद प्रकाश सनियाणा ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाकर सभा में शामिल लोगों का मनोरंजन किया तथा अंधविश्वासों से जागरूक रहने का संदेश दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह लेक्चरार ने चमत्कारों का पर्दाफाश करते हुए कुछ ट्रिक दिखाए और उनके पीछे छुपे हुए रहस्यों के बारे में समझाया। श्री बलवंत सिंह ने अपने संबोधन में तर्कशील सोसायटी के उद्देश्यों एवं सोसायटी द्वारा रखी गई चुनौती के विषय में बात करते हुए जनता को ढोंगी बाबाओं से सावधान रहने की अपील की। साथ ही उन्होंने जनता को वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक चिंतन को अपनाने की अपील की।

इस कार्यक्रम में श्री रामेश्वर दास, कृष्ण राजौंद एवं ईश्वर सिंह सफीदों ने भी अपने विचार रखे। सोसायटी के प्रचार सचिव सुभाष तितरम ने तर्कशील एवं प्रगतिशील साहित्य की स्टाल लगाई। कार्यक्रम के आयोजन में कालवा बारहा के प्रधान दिलबाग कुंडू, सरपंच सुरेश कुमार फौजी, ज्ञानी राम, मा. कर्म सिंह, डा. नसीब सिंह, ईश्वर सिंह, परविन्द्र सिंह सफीदों, जसबीर सिंह इत्यादि ने विशेष सहयोग दिया।

✶

नरबलि

–डॉ. दिनेश मिश्र

रायपुर– डॉ. दिनेश मिश्र, अध्यक्ष अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति ने कहा ग्रामीण अंचल में आज भी अंधविश्वास के कारण ऐसी घटनाएं घटित होती हैं जिसमें लोग बैगा गुनिया की सलाह पर अंधविश्वास कर अपराधिक हत्या कर बैठते है। पलारी के पास भी ऐसा ही हुआ रामगोपाल पटेल नामक व्यक्ति को राजेश यादव नामक बैगा ने घर की समस्त समस्याओं का कारण घर में कथित रूप से भूत बाधा बताया और उसके निवारण के लिये नरबलि देने का उपाय बताया। राम गोपाल ने अंधविश्वास में पड़ कर अपने ही बेटे रूपेश की बलि दे दी और उसका रक्त भगवान की मूर्ति पर चढ़ा दिया। जो कि अत्यंत शर्मनाक और दुखद है। डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा भूत-प्रेत, जादू-टोना जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व नही होता ।इस लिए भूत प्रेत, जादू टोने-टोटके के निवारण के लिए बताए जाने वाले ऐसे उपाय भी अंधविश्वास के अलावा कुछ नही है। मनुष्य और पशुओं में होने वाली विभिन्न बीमारियां भी अलग अलग कारणों से होती है जिनका उसके कारण के हिसाब से ही उपचार सम्भव है। ग्रामीणों को बैगाओं और तांत्रिको के ऐसे चमत्कारिक उपचार और समाधान वाले दावों पर भरोसा नहीं करना चाहिए और विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र सम्मत सलाह लेना चाहिए। यदि हर बीमारी का भीड़भाड़ भरे शिविरों, झाड़फूंक, से ही चमत्कारिक इलाज हो पाता तो सरकारों को न ही देश भर में एम्स प्रादेशिक, मेडिकल कॉलेज, कैंसर अस्पताल, विकलांगो के लिए पुनर्वास केंद्र खोलने पड़ते, न ही केंद्र और राज्य सरकारों को स्वास्थ्य योजनाएं लागू करनी पड़ती। डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा है नागरिकों को किसी भी बैगा गुनिया तांत्रिकों, के बहकावे में नहीं आना चाहिये और कोई भी गलत कदम नही उठाना चाहिये जिससे उनके स्वास्थ्य और आर्थिक, शारीरिक सुरक्षा को नुकसान पहुंचे।

✶

जब तर्क और पाखंड का आमना सामना हुआ

संत लाल जिला कुरूक्षेत्र का निवासी है। उनकी पत्नी पिछले कुछ सालों से बीमार चल रही थी। उसका डाक्टरी इलाज चल रहा था। डाक्टरों ने कई प्रकार के टेस्ट करवाने के बाद उसे प्रथम स्टेज का कैंसर का रोग डिक्लेयर किया था। चंडीगढ के बडे अस्पताल से उसका इलाज चल रहा था। इलाज काफी महंगा था और उस पर काफी खर्च आ रहा था।

उसके गांव से कुछ लोग चढूनी जाटान गांव की एक तथाकथित देवी की चौकी पर जाया करते थे। उनके मुंह से उक्त देवी का गुणगान सुन कर संत लाल की माता भी प्रभावित हो गई और वह भी वहां चौकी पर जाने लग गई। वहां पर उक्त 'देवी' के चाटूकारों की बातों के प्रभाव मे आकर उसने भी अपने बेटे और बहू को 'देवी' की चौकियां भरने के लिए सहमत कर लिया। इस प्रकार वे लगभग 8-10 महीनों तक उस तथाकथित देवी की चौकियों पर जाते रहे। इस दौरान उन्होंने 'देवी' के निर्देश के अनुसार डाक्टरी इलाज बिलकुल बंद कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप उसका देहांत हो गया। अपनी पत्नी के निधन के पश्चात संत लाल ने इस बारे में कुछ कुछ सोचना शुरू किया। इसी दौरान उसके एक रिश्तेदार ने उसकी मुलाकात तर्कशील सोसायटी वालों से करवा दी।

उसकी दुखभरी कहानी सुनकर हमनें संत लाल से एक शपथपत्र लिया और फिर उक्त 'देवी' के ढोंग का पर्दाफाश करने के लिए जिला कुरूक्षेत्र के एस.पी. महोदय के कार्यालय में एक दरख्वास्त दे दी।

एसपी कार्यालय से वह दरख्वास्त थाना शाहबाद में आगामी कारवाई के लिए भेज दी गई। कुछ दिन तक तो वह थाने मे आने मे टालमटोल करती रही। अंत मे उसे सामने आना ही पड़ा और फिर तर्कशीलों के प्रभाव से और पुलिस वालों के दबाव में उक्त 'देवी' को संत लाल से ढोंग फैला कर ठगे हुए सारे पैसे वापिस लौटाने पड़े।

इस सारी कारवाई के दौरान बलवंत सिंह लेक्चरर तथा शाहबाद इकाई से मनजीत सिंह व बूटा सिंह का सराहनीय योगदान रहा। इसके साथ साथ गांव हरियापुर के सरपंच व अन्य पंचायत मैंबर तथा ईश्वर राणा ज्योतिसर व धर्मवीर का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

रिपोर्ट-बलवंत सिंह लेक्चरर

शोक समाचार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के कार्यकर्त्ता व हमारे पुराने साथी डा. राजेन्द्र तर्कशील, नरवाना, का दिनांक 17-12-2017 को हृदय गति रुकने के कारण असामयिक निधन हो गया। डा. राजेंद्र तर्कशील सोसायटी के निष्ठावान सदस्य थे। उनके निधन से सोसायटी को अपूर्णीय क्षति हुई है। अभी परिवार का दुख कम भी न हुआ था कि छः दिन पश्चात् ही उनके पिता जी चौ. धन सिंह, सेवा निवृत्त अध्यापक का लम्बी बिमारी के कारण देहान्त हो गया । तर्कशील सोसायटी इस दुखद घड़ी में शाोकाकुल परिवार के लिये संवेदना प्रकट करती है।

कोचिंग का कुरूप चेहरा

—बलवंत सिंह लैक्चरार

अभी दो महीने पहले ही सुमन की शादी हुई थी। शादी वाले दिन से ही उसे परेशानियां होने लग गई थी। सुहाग वाली रात को अपने कमरे में बैड पर बैठे हुए सुमन को महसूस होने लगा कि उनके कमरे में तीन-चार औरतें सफेद कपड़े पहने हुए उसके सामने खड़ी है और उसे अपने साथ चलने के लिए कह रही हैं। ज्योंहि उसका पति कमरे में दाखिल हुआ तो शोर मचाने लग गई और फिर बड़बड़ाने लग गई कि 'देखो यह भी उनके साथ मिला हुआ है, ये सभी मुझे मार डालेंगे।' उसकी चीख-पुकार सुन कर जब उनके घर की दो-तीन महिलाएं भाग कर उनके कमरे में आ गई तो उन्होंने देखा कि सुमन अत्यंत घबराई हुई है और बदहवास होकर अपने पति की तरफ अत्यंत क्रोध भरी नजरों से देख रही है। उन महिलाओं ने सुमन के पति को कमरे से बाहर भेज दिया और खुद उसके पास बैठ कर उसे दिलासा देने लग गई।

शादी के बाद चार-पांच दिन सुमन अपने ससुराल में रही, परन्तु उसका हाल वैसा ही बना रहां कभी तो वह बेहोश सी होकर बिस्तर पर गिर पड़ती और कभी वह चीखने-चिल्लाने लग जाती। कभी-कभी वह अत्यंत क्रोधित हो जाती और कभी वह खुद को ही मारने लग जाती। ऐसी ही हालत में सुमन को उसके मायके में भेज दिया गया।

मायके में जाकर वह गुमसुम सी ही बनी रही, परन्तु उसका चीखना-चिल्लाना बंद ही रहा। कुछ दिनों के बाद जब उसका व्यवहार सामान्य सा होने लगा तो फिर उसे उसके ससुराल में भेज दिया गया। परन्तु अपने ससुराल में जाकर सुमन का फिर से पहले जैसा ही हाल हो गया। बात-बात पर वह चीखने-चिल्लाने लग जाती या फिर बेसुध होकर बिस्तर पर गिर पड़ती। घंटों तक फिर वह बेहोश ही पड़ी रहतीं

उसकी हालत से दुखी होकर उसके ससुराल वालों ने गांव के ही एक भगत से उसका झाड़ा लगवाया। जब भगत झगड़ा लगाने लगा तो सुमन को जोश सा आने लग गया और उसने उसी अवस्था में भगत की पिटाई कर दी। भगत अपना पल्ला छुड़ा कर तो भाग गया, परन्तु जाते-जाते घर वालों से कह गया कि इस पर बहुत बड़ी-बड़ी प्रेतात्माओं का साया है। यह सुनकर सुमन के ससुराल वाले बहुत अधिक डर गए। इसी डर के चलते उन्होंने सुमन को उसके मायके में भेज दिया और साथ ही यह भी कह दिया कि अब जब यह बिल्कुल ठीक हो जाएगी, तभी वे इसे लेकर जाएंगे।

अब मायके में भी सुमन की हालत बिगड़ने लग गई। उसके मायके वालों ने एक के बाद अनेक बाबाओं, तांत्रिकों व ओझाओं इत्यादि से उसका इलाज करवाने का प्रयत्न किया, परन्तु सब व्यर्थ। ज्यों-ज्यों सुमन की हालत और भी अधिक बिगड़ती चली गई। अब वह सिर घुमाकर खेलने लग जाती और खेलते-खेलते कई बार अत्यधिक क्रोध में आ जाती। कभी-कभी तो वह बाबाओं पर हाथ भी उठा देती। सुमन को अपने मायके में बैठे हुए तीन-चार महीने बीत चुके थे, परन्तु उसकी हालत बद से बदतर होती चली जा रही थी।

ऐसे में उनका एक रिश्तेदार जो कि तर्कशील सोसायटी के जनहित कार्यो के बारे में परिचित था, उन्हें लेकर रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में आ गया।

मैंने सुमन के घर वालों से उसकी हालत के बारे में मोटे तौर पर जानकारी लेकर उसके साथ बातचीत करनी शुरू की तो उसमें उसे ले जाने वाली तथाकथित 'प्रेतात्मा प्रवेश कर गई'। और उसने जोश में आकर मुझ पर भी हमला करने की कोशिश की। मैं चौकस था, अतः मैंने तेजी के साथ उसकी एक बाजू को पकड़ कर उसे मरोड़ दिया तो वह एकदम छटपटाने लग गई और उसे छोड़ देने की गुहार लगाने लग गई। फिर मैंने उसकी बाजू को छोड़कर उसे धैर्य से अपनी सारी समस्या को विस्तार से बताने का निर्देश दिया। उसकी सारी समस्या को समझने के पश्चात् मैंने मनोवैज्ञानिक ढंग से उसके अवचेतन मन पर पड़े हुए बोझ को हल्का कर दिया और नये सिरे से अपना नया जीवन शुरू करने के सुझाव दिए। उसने मेरे सुझावों पर

चलने का आश्वासन दिया और अब लगभग सात-आठ महीने हो चुके हैं, वह अपने ससुराल में प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है।

कारण क्या था :

सुमन एक अच्छी पढ़ी-लिखी लड़की थी। उसने गणित विषय के साथ बीए की थी। बीए करते समय वह एक कोचिंग सैंटर से गणित विषय की कोचिंग लेती रही थी। कोचिंग लेते समय कोचिंग सैंटर के संचालक दयाशंकर के साथ सुमन की काफी निकटता बढ़ती चली गई। दयाशंकर उसे प्रेरित करता रहा और वह उसकी हर बात मानने लग गई। दोनों में काफी लगाव बढ़ता चला गया। इसी दौरान सुमन की बीए की परीक्षाएं आ गई। परीक्षाओं से पूर्व दयाशंकर ने सुमन को प्रोत्साहित किया कि वह परीक्षाओं के पश्चात् उसके कोचिंग सैंटर में छात्रों को गणित की कोचिंग दे दिया करे तो गणित विषय में प्रैक्टिस करने से उसकी पकड़ भी अच्छी बन जाएगी और साथ ही साथ छात्रों को पढ़ाने से मिलने वाली फीस से उसकी कमाई भी हो जाया करेगी। गणित विषय में मुहारत मिलने के साथ-साथ आर्थिक लाभ मिलने के लालच में सुमन ने परीक्षाओं के पश्चात् कोचिंग सैंटर में छात्रों को गणित विषय पढ़ाने की दयाशंकर की बात मान ली।

अतः परीक्षाओं के पश्चात् सुमन ने दयाशंकर के कोचिंग सैंटर में छात्रों को गणित विषय की कोचिंग देना शुरू कर दिया। इसी दौरान दयाशंकर ने सुमन पर अपने इश्क के डोरे डालने शुरू कर दिए। जब भी मौका मिलता दयाशंकर सुमन की सुंदरता की और उसके पढ़ाने के ढंग की तारीफ करने से न चूकता। काफी समय तक यह सिलसिला चलता रहा और धीरे-धीरे सुमन दयाशंकर की की तरफ आकर्षित होती चली गई। अंत में उन्होंने मर्यादा की सभी सीमाएं लांघ दी और दोनों में नाजायज संबंध कायम हो गए। जब एक बार मर्यादा की सीमाएं लांघी तो उन्हें चोरी का गुड़ रोज-रोज मीठा लगने लगा।

फिर एक दिन जब सुमन सैंटर में आई तो दयाशंकर ने उसे अपने कमरे में बुलाया। जब वह उस उसके कमरे में पहुंची तो दयाशंकर का चेहरा उतरा हुआ था। घबराए हुए दयाशंकर ने सुमन को बताया कि 'हमारे साथी सतीश ने उन दोनों को अवैध संबंध बनाते हुए देख लिया है। अब वह कहता है कि या तो उसका भी काम करवाओ अन्यथा वह सभी को बता देगा।' यह सुनकर सुमन के पांवों के नीचे से जमीन सरक गई। वह करे तो क्या करे। घबराकर उसने रोना शुरू कर दिया। धीरे-ध ीरे अपनी बातों लगाकर दयाशंकर ने उसे सतीश के साथ भी संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया। उसने साफ तौर पर कह दिया कि 'हमें सतीश की बात माननी ही पड़ेगी, अन्यथा वह हम दोनों को सभी जगह पर बदनाम कर देगा।'

सुमन के पास इनके सामने समर्पण करने के अलावा अब कोई चारा भी नहीं था। अतः उसने उनकी बात मानने में ही अपनी भलाई समझी। अब बारी-बारी से तीनों में ही नाजायज संबंधों का सिलसिला काफी समय तक चलता रहा।

तब तक सुमन को नहीं पता था कि दयाशंकर विवाहित है। वह तो उसे अभी तक कुंवारा ही समझती थी। एक दिन सैंटर में छुट्टी हो जाने पर सुमन ने बातों-बातों में दयाशंकर से आग्रह किया कि अब हम दोनों को अपने परिवार की सहमति लेकर आपस में शादी कर लेनी चाहिए। इस पर दयाशंकर ने बताया कि वह तो एक बच्चे का बाप है और सतीश भी शादीशुदा है। यह सुन कर सुमन का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह उन दोनों को गालियां देने लग गई और वे दोनों जल्दी-जल्द सैंटर को ताला लगाकर नौ दो ग्यारह हो गए।

उस दिन के बाद सुमन कोचिंग सैंटर में कभी नहीं गई। घर वालों के सामने उसने कोई अन्य बहाना बना दिया। धीरे-धीरे उसने अपने मन को समझा लिया और वह घर के कार्यो में व्यस्त रहने लग गई। इसी दौरान उसके लिए एक अच्छे रिश्ते की बात चली। उसकी सहमति से घर वालों ने वह रिश्ता पक्का कर दिया और कुछ समय के बाद उसकी शादी हो गई। शादी तक तो सब कुछ ठीक-ठाक रहा, परन्तु जब उसकी डोली उसके ससुराल पहुंची तो उसके अवचेतन मन में बसी हुई पुरानी घातक बातें उसके दिमाग पर हावी होना शुरू हो गई और वह आपे से बाहर होती चली गई। उसके मन को बोझ उसके लिए भयंकर समस्या बन चुका था। बाबाओं के व्यवहार ने उसकी समस्या में आग में घी का कार्य किया तथा वह और भी अधिक परेशान होती चली गई।

मेरे द्वारा उसका मनोविश्लेषण करने के पश्चात मनोवैज्ञानिक ढंग से उसके मन का बोझ उतार देने के पश्चात् वह अब अपने ससुराल में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है।

नोटः ***यह एक सत्यकथा है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं।*** ✶

आसमान से गंदगी टपकने का रहस्य सुलझाया

– अजायब जलालआना

तर्कशील सोसाइटी इकाई कालांवाली के सदस्यों के पास एक ऐसा केस आया जिसे पढ़कर शायद आप अपना नाक चढ़ाने लग जाएं ?

मानसिक समस्याओं से सबंधित बहुत सारे ऐसे केस जो सबंधित डाक्टरों,मैडीकल कालेजों तक हल नहीं हो पा रहे होते।क्योंकि हमारे यहां मानसिक समस्याओं वाले केसों को काउंसलिंग से कम और मैडिसन से ज्यादा हल करने की कोशिश की जाती है।

और इसी प्रकार कभी,कभी हमारी पुलिस भी कुछ अन्धविश्वासी केसों को तथ्यों पर आधारित न होकर गैर वैज्ञानिक ढंग से हल करती दिख रही होती है। कुछ वर्ष पहले स्थानीय मंडी में एक ऐसा केस पुलिस के पास आया जिसे वो पूरी तरह से हल नहीं कर पा रही थी। पुलिस थाने में इसी केस को लेकर भारी इकट्ठ हो रहा था।पुलिस कर्मचारियों के कमेंट और समस्या का हल न होता देख परिवार वालों ने हमारे से सहयोग मांगा। जब हम तीन साथी पुलिस थाने में गए और इस केस से सबंधित बातचीत की तो उनमें दो महिला पुलिस कर्मचारी परिवार को किसी दूर वाले बाबा से समस्या हल करवाने की सलाह दे रहे थे।हम हैरान!हमारी ये आधुनिक पुलिस!! हमने उन कर्मचारियों को किसी दैवीय शक्ति के सिद्ध) करवा देने पर लाखों रुपये देने की शर्त रखी तो वो हमारे से दूर जाते दिखे।

खैर हमने परिवार वालों से समस्या की पूरी कहानी जाननी चाही,उन्होंने बताया कि हमारे घर इंसानी मलमूत्र (गन्दगी) आसमान से टपकती है।हमारी एक तरफ की दीवारों पर ज्यादा लगे होने के कारण,हमारी शंका एक तरफ के पड़ोसियों पर है।

उन पड़ोसियों को भी पुलिस थाने बुला रखा था।दोनों पक्षों के बीच बचाव करने वालों ने हमें पड़ोसियों से भी बात करने को कहा।

जब हमने उन पड़ोसियों से बात की तो उन्होंने हमें अपनी कहानी सुनाते हुए खुद भी पीड़ित बताया।वो कहते हमारे घर में भी इंसानी मलमूत्र गिरता तो है ही साथ में जब हमारी औरत चूल्हे पर रखी कड़ाही में सब्जी बनाने लगती है,तो उसमें इंसानी मलमूत्र एक दम आकर गिर जाता है।खाना बनाने वाले बर्तनों में इंसानी मलमूत्र!!

इन पड़ोसियों का परिवार बड़ा होने के कारण घर में छोटे-छोटे कमरों में अलग-अलग रहता था।उस परिवार की खास बात यह थी कि उस परिवार का मुखिया भी लोगों की ओपरी पराई, भूत-प्रेतों की समस्याओं का हल करता था।

और वह मुखिया इन घटनाओं को भी किसी ओपरी-पराई का किया कराया हुआ मान रहा था।वह लोगों के मसले तो हल करने का दावा करता था।परन्तु अपने घर की इस समस्या को हल करने के लिए अपने हाथ खड़े कर रहा था।

हमारी तीन सदस्यों की टीम ने दोनों परिवारों की सहमति से उन दोनों घरों में जाकर सही आंकलन किया।और मकानों,घटित घटनाओं के स्थानों को निश्चित करते हुए उसी पड़ोसी घर के सदस्यों से लम्बी बात-चीत की गई।मकानों के ऊपरी हिस्से पर बने एकल कमरे चौबारे पर रह रहे परिवार की औरत छत्त पर खुले में खाना बनाती तब कड़ाही में मलमूत्र गिरता था।इसी को आधार बनाकर हमने समस्या को हल करने के लिए प्लान बनाया।क्योंकि हम परस्थितियों और बातचीत के माध्यम से घटना को अंजाम देने वाले को चिन्हित कर चुके थे।और सबंधित को पुनः ऐसा न करने की अपील की गई।और उसकी मानसिक समस्या को देखते हुए उसके साथ सहानुभूति जताई गई।

उस परिवार में ओझागिरी करने वाला और लोगों की समस्याओं का हल करने वाले को भी हमने खूब खरी,खरी सुनाई!!

आखिर में हमने दोनों परिवारों को धैर्य रखने के लिए अपील की तथा पुलिस,थाने न जाने और न ही किसी बाबा,चेले के पास भी न जाने की बात रखी।और उसके बाद ऐसी घटना कभी दोबारा नहीं घटित हुई।

★★★

स्त्री-विरोधी सोच और पद्मावती

-सुभाषिनी सहगल अली

यह लेख पद्मावती पर नहीं है। न उस पद्मावती पर है, जो जायसी के मन में चित्तौड़ की महारानी थीं और न ही यह भंसाली की पद्मावती पर है। पद्मावती के जीवन और मृत्यु पर बड़ा विवाद छिड़ा हुआ है, पर उसके बारे में एक तथ्य निर्विवाद है। वह आज जिंदा नहीं हैं। मेरा यह लेख राजस्थान में जिंदा रहने के लिए जूझती महिलाओं और बच्चियों के बारे में है। उनके बारे में भी है, जो जन्म लेने की कोशिश कर रही हैं।

मुझे शुरुआत एक ऐसी महिला की दास्तान के साथ करनी पड़ रही है, जो जिंदा नहीं है। उसकी मौत पांच सौ साल पहले नहीं, एक साल पहले हुई थी। उसका जन्म महल में नहीं, बीकानेर जिले के एक छोटे-से गांव में एक दलित परिवार में हुआ था। उसके पिता महेंद्र राम मेघवाल सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं। वह घर-घर जाकर लोगों को अपनी बेटियों को पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनकी बेटी डेल्टा शिक्षिका बनना चाहती थी। उसका प्रवेश एक निजी बी.एड. कॉलेज में हो गया था। वह होस्टल में रहती थी, जहां अधिकारी उससे अपने कमरों में झाड़ू लगवाते थे। छुट्टियों में भी वह वहीं रहती थी। एक दिन उसे कमरे में सफाई के लिए बुलाया गया। उसके साथ बलात्कार हुआ और उसका शव कॉलेज के प्रांगण के कुएं में मिला।

एक साल बाद, उसकी बरसी में उसके रिश्तेदार तक नहीं आए। महेंद्र राम मेघवाल का सब कुछ बदल गया है। उसके दोनों बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी है। महेंद्र पहले सोचते थे कि शिक्षा से दृष्टि स्पष्ट हो जाती है, पर जब उसकी एक आंख ही इतनी बेरहमी से निकाल ली गई है, तो उसकी सोच बदल गई है। वह कहते हैं, 'मैं बेटियों के मां-बाप से कहता हूं कि मरते वक्त अपनी बच्चियों का मुंह देखना चाहते हो, तो उन्हें पढ़ाने मत भेजना।' डेल्टा की जब मौत हुई, तब उसकी उम्र सत्तरह साल थी। उसके नाम से कोई फिल्म नहीं बनेगी। उसकी हत्या के खिलाफ कोई तलवार नहीं उठेगी। उसका पिता अकेले इंसाफ के पथरीली मार्ग पर, धीरे- धीरे आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है।

राजस्थान में सबसे अधिक बाल विवाह होते हैं। अक्षय तृतीया पर नदियों के किनारे मेले लगते हैं और हजारों बच्चों का विवाह वहीं रचा दिया जाता है। पहले अक्षय तृतीया से पहले वहां बाल विवाह के खिलाफ अभियान चलाया जाता था। भंवरी देवी तो इस अभियान की शिकार भी बनाई गई। जब उन्होंने बाल विवाह रुकवाने का प्रयास किया, तो सामूहिक बलात्कार कर उन्हें 'सबक सिखाने' का काम किया गया। लगता है कि भंवरी ने नहीं, सरकार ने सबक सीखा और इस पूरे अभियान को समाप्त ही कर दिया।

राजस्थान में मातृ मृत्यु दर प्रति एक लाख पर 244 है, जिसकी बड़ी वजह बाल विवाह है। मातृ मृत्यु दर के मामले में राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में है। महिला शिक्षा के क्षेत्र में यह राज्य सबसे पीछे है। पंद्रह से सत्तरह वर्ष की आयु वर्ग की लड़कियों में केवल 72 फीसदी पढ़ने जाती है। वहां आज भी खाना पकाने के लिए लकड़ी का इस्तेमाल होता है। लकड़ियां बीनने के लिए महिलाओं को मीलों की दूरी तय करनी पड़ती है। लकड़ी जलने से जो धुआं उठता है, उससे उनके फेफड़े बर्बाद हो जाते हैं। वहां प्रति 1,000 लड़कों पर लड़कियों का अनुपात 888 है। ठीक भी है। पैदा होने के बाद लड़कियां करेंगी भी, तो क्या? राजस्थान में तो रानियों के जीने-मरने का महत्व है। इनके जीने पर जब खुशी नहीं होती, इनके मरने पर जब कोई बरसी पर नहीं आता, तो फिर पैदा होने से फायदा भी क्या?

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य है

साभार - अमर उजाला

***

नये क्षितिज

ब्रह्माण्ड के रहस्यों को सुलझाने की दिशा में बढ़ा इन्सान का एक और कदम'

–सत्यम

मनुष्य हमेशा ही ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझने की कोशिश करता रहा है। 'हजारों साल पहले जब मनुष्य जंगलों में रहता था तब उसे प्रकृति के रहस्य जादू-टोने की तरह लगते थे और वह मौसम बदलने, बिजली गिरने, जीवन और मृत्यु जैसी प्राकृतिक घटनाओं को अवश्य और जादुई शक्तियों के कारनामे के रूप में देखता था।' जिन चीजों को वह समझ नहीं पाता था और जिनसे उसे डर लगता था उनकी वह पूजा करने लगता था। बाद में मनुष्यता जैसे-जैसे ज्ञान-विज्ञान की राह पर आगे बढ़ती गयी, वैसे-वैसे कुदरत की किताब के पन्ने उसके आगे खुलते चले गये और अपने आसपास होने वाली घटनाओं के कारणों को मनुष्य समझने लगा। खासतौर पर पिछले 200-300 वर्ष के दौरान तो विज्ञान का जबर्दस्त विकास हुआ है और मनुष्य अपनी धरती और पूरे ब्रह्माण्ड के बारे में अधिकाधिक ज्ञान हासिल करता गया है। 'प्रकृति के इन रहस्यों की समझदारी से मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाने वाले बहुत-से आविष्कार भी हुए और साथ ही समाज व्यवस्था को ज्यादा न्यायपूर्ण बनाने के संघर्ष में भी इस ज्ञान ने मनुष्य को राह दिखायी। इसीलिए शासक वर्ग हमेशा ही यह कोशिश करते रहे हैं कि आम लोगों तक विज्ञान की समझदारी और जीवन को देखने की वैज्ञानिक दृष्टि न पहुँच सके।'

चार जुलाई 2012 विज्ञान की अनवरत यात्रा में एक यादगार दिन था। इस दिन वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि उन्होंने '**हिग्स बोसोन**' नाम के एक ऐसे सूक्ष्म कण को ढूँढ़ निकाला है जिसकी खोज में पिछले कई दशक से वैज्ञानिक लगे हुए थे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि इस खोज से ब्रह्माण्ड के बहुत से रहस्यों पर से पर्दा उठने का रास्ता खुल जायेगा। अब इस बात को समझा जा सकेगा कि यह पूरा ब्रह्माण्ड, जिसका एक बहुत छोटा-सा हिस्सा हमारी धरती और सौरमण्डल है, पैदा कैसे हुआ।

आखिर क्या है यह 'हिग्स बोसोन'?

भारत के कई अखबारों और टीवी चौनलों ने इस घटना की रिपोर्टिंग इस ढंग से की मानो यह कोई वैज्ञानिक खोज नहीं बल्कि दैवी चमत्कार हो। जिस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में विज्ञान की खबरों के लिए कभी जगह नहीं होती थी, उस पर पूरे दिन यह खबर छायी रही और अखबारों के पहले पन्ने पर पहली खबर के रूप में इसे छापा गया। ज्यादातर ने इसे "ईश्वरीय कण" की खोज घोषित कर दिया। कुछ ने तो यह दावा भी कर दिया कि इस खोज के साथ ही मनुष्य ईश्वर के बिल्कुल करीब पहुँच गया है! मगर इस 'हिग्स बोसोन' की असलियत क्या है? आखिर ये है क्या बला?

वास्तव में इस कण का ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी में इसे 'गॉड पार्टिकल' कहा गया था क्योंकि इसका पता ही नहीं चल रहा था। यह कोई सटीक वैज्ञानिक शब्द नहीं है। ज्यादातर वैज्ञानिक तो इस नाम का इस्तेमाल करने के विरोधी हैं क्योंकि इससे लोगों में गलत सन्देश जाता है और भ्रम पैदा होता है। लेकिन भारत में मीडिया इसी शब्द को क्यों ले उड़ा इसे समझना मुश्किल नहीं है। जो मीडिया लोगों के बीच वैज्ञानिक चेतना और समझदारी का प्रचार-प्रसार करने के बजाय दिनो-रात पोंगापन्थ और अन्धविश्वास फैलाने में लगा रहता है उससे कुछ और उम्मीद करना ही बेकार है।

'हिग्स बोसोन' को वह कण माना जाता है जिसके कारण ब्रह्माण्ड के तमाम कणों में आकार और भार होता है। जैसाकि हम जानते हैं, हमारा

ब्रह्माण्ड, चाँद-सूरज-सितारे, आकाशगंगाएँ, सौरमण्डल, यह धरती और इस पर बसने वाले जीव, यह सबकुछ सूक्ष्म कणों से मिलकर बना है। पहले माना जाता था कि पदार्थ का सबसे छोटा कण परमाणु है लेकिन फिर पता चला कि इसके भीतर इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और क्वार्क नाम के और भी छोटे-छोटे कण होते हैं। ये कितने छोटे होते हैं इसका अन्दाजा इस बात से लगाइये कि एक महीन सुई की नोक पर लाखों परमाणु समा सकते हैं। 1964 में पीटर हिग्स नाम के वैज्ञानिक ने बताया कि इन कणों को आकार और भार देने वाला एक और कण है जिसे उन्हीं के नाम पर 'हिग्स बोसोन' कहा गया। बोसोन कणों का यह नाम प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्रनाथ बोस के नाम पर रखा गया जिन्होंने 1920 के दशक में महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के साथ काम किया था और बहुत महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक खोजें की थीं। मगर 'हिग्स बोसोन' का पता चलने से दुनिया के बारे में हमारी समझ बेहतर कैसे होगी, इस बात को समझने के लिए पहले कुछ और बातों को जान लेना जरूरी है।

ब्रह्माण्ड को जन्म देने वाला 'महाविस्फोट'

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बारे में तरह-तरह की बातें की जाती हैं। ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने सृष्टि की रचना की। पहले दिन उसने रात और दिन बनाये, दूसरे दिन धरती और आकाश, तीसरे दिन पेड़-पौधे, चौथे दिन चाँद-सूरज और तारे, पाँचवे दिन तमाम पशु और पक्षी बनाये और फिर छठे दिन उसने मनुष्य की रचना की। इतना काम कर लेने के बाद थककर सातवें दिन ईश्वर ने आराम किया और इसीलिए सप्ताह के सातवें दिन छुट्टी का दिन माना गया। हिन्दू धर्म में बताया जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया। खुद ब्रह्मा का जन्म विष्णु की नाभि से हुआ था। कई अन्य धर्मो में सृष्टि की उत्पत्ति की अलग-अलग कहानियाँ मिलती हैं। लेकिन वैज्ञानिकों ने अब यह साबित कर दिया है कि ब्रह्माण्ड की शुरुआत एक 'महाविस्फोट' (बिग बैंग) से हुई थी। लगभग 14 अरब वर्ष पहले एक बिन्दु से ब्रह्माण्ड ने फैलना शुरू किया। इसे ही महाविस्फोट कहा जाता है। विस्फोट के समय पैदा हुई ऊर्जा प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन सहित विभिन्न सूक्ष्म कणों में तब्दील हो गयी। महाविस्फोट के कुछ ही मिनट बाद प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के मिलने से पहले-पहल परमाणु नाभिक अस्तित्व में आये लेकिन उनके साथ इलेक्ट्रानों के जुड़कर परमाणु बनने में हजारों वर्ष का समय लग गया। सबसे पहले बनने वाला तत्व था हाइड्रोजन गैस जिसमें हीलियम और लिथियम की भी कुछ मात्रा थी। इन गैसों से बने विराटकाय बादल अन्तरिक्ष में घूमते रहते थे जो गुरुत्व बल के कारण घने हो-होकर लाखों वर्ष के दौरान तारे और आकाशगंगाएँ बन गये। हमारी धरती भी पहले आग का एक जलता हुआ गोला थी जो धीरे-धीरे करोड़ों वर्ष के दौरान ठण्डी हुई और कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण यहाँ पर पानी और फिर जीवन की उत्पत्ति हुई। बिग बैंग सिद्धांत को अच्छी तरह जाँचा-परखा गया है और दुनिया भर के वैज्ञानिक अब सृष्टि की उत्पत्ति के इसी सिद्धान्त को सही मानते हैं। कई लोग पूछ सकते हैं कि महाविस्फोट के पहले क्या था? इसका सीधा जवाब होगा, कुछ नहीं। वैसे यह सवाल ही अपने आप में गलत है क्योंकि जिस क्षण महाविस्फोट हुआ वास्तव में उसी क्षण से क्या, कब, कहाँ, पहले, बाद में जैसी बातों की शुरुआत हुई। मनुष्य की चेतना काल और दिक् के आयामों से बाहर जाकर कुछ सोच ही नहीं सकती और ये आयाम भी उस क्षण पैदा हुए थे। पदार्थ, ऊर्जा, समय और स्थान की शुरुआत उसी बिन्दु से हुई थी। मगर इस विषय पर अभी इतना ही, वरना बात बहक जायेगी। इस पर हम आगे कभी अलग से चर्चा करेंगे।

आप पूछ सकते हैं, यह सारी कायनात जिस पदार्थ से बनी है वह किन बुनियादी कणों से मिलकर बनता है? उसका सबसे छोटा-से-छोटा रूप क्या है जिसे आगे और छोटे कणों में नहीं तोड़ा जा सकता? इन्सान बहुत पहले से इसके बारे में माथापच्ची करता आया है। लगभग दो हजार वर्ष पहले एक यूनानी दार्शनिक डेमोक्रिटस ने कहा था कि हर चीज

बिल्कुल छोटी-छोटी इकाइयों से मिलकर बनी है। उसने इस कण को 'एटम' का नाम दिया। भारत में कणाद मुनि ने भी ईसा से दो शताब्दी पहले ही इस बात की चर्चा की थी कि हर चीज 'अणु' नाम के छोटे-छोटे कणों से बनी है जिन्हें और छोटे कणों में बाँटा नहीं जा सकता। बाद में वैज्ञानिक भी इसी नतीजे पर पहुँचे। बीसवीं सदी में वैज्ञानिकों ने ऐटम यानी परमाणु के भीतर भी घुसकर इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन की खोज कर ली। बाद में वैज्ञानिकों ने न्यूट्रॉन और प्रोटॉन के भीतर क्वार्क नामक कणों का पता लगाया। 1970 के दशक से वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के जिस सिद्धान्त को मानते रहे हैं उसे 'स्टैण्डर्ड मॉडल' कहा जाता है। इसके अनुसार, प्रकृति में दो तरह के बुनियादी कण हैं। सूक्ष्म कण जिन्हें फर्मियन कहते हैं, जिनसे पदार्थ बनता है। इनमें इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और क्वार्क होते हैं। दूसरी तरह के कण हैं चार बोसोन जो फर्मियनों के बीच अलग-अलग तरह के बल का आदान-प्रदान करते हैं। अलग-अलग कणों के मिलने से कोई पत्थर, या तारा, या मानव शरीर, या फूल बनेगा या वे मिलेंगे ही नहीं, यह प्रकृति की चार मूल शक्तियों विद्युतचुम्बकीय, मजबूत बल, कमजोर बल और गुरुत्वाकर्षण पर निर्भर करता है। गुरुत्वाकर्षण को छोड़कर 'स्टैण्डर्ड मॉडल' की अन्य सभी बातों को वैज्ञानिक प्रमाण सहित साबित कर चुके हैं। लेकिन एक गुत्थी बनी हुई थी, कि इन सभी कणों में भार कहाँ से पैदा होता है। 'हिग्स बोसोन' की परिकल्पना सामने आने के बाद सिद्धान्त रूप में इस बात का जवाब भी मिल गया था। लेकिन इस कण को अब तक न किसी ने देखा था और न ही इसके होने का कोई सबूत मिला था। इसकी खोज के लिए दुनियाभर में प्रयोग जारी थे।

लापता कण की तलाश में सोलह वर्ष से जारी महाप्रयोगः

यूरोप के बीस देशों ने मिलकर 1996 में 'हिग्स बोसोन' की तलाश के लिए एक बहुत बड़े प्रयोग पर काम शुरू किया। यूरोपीय नाभिकीय अनुसन्धान संगठन 'सर्न' की अगुवाई में फ्रांस और स्विट्जरलैण्ड की सीमा पर जमीन से करीब सौ मीटर नीचे लगभग 27 किलोमीटर लम्बी गोलाकार सुरंग बनायी गयी। करीब 500 अरब रुपये की लागत से इसमें 'लार्ज हैड्रॉन कोलाइडर' (एल.एच.सी.) नाम की एक विराटकाय वैज्ञानिक मशीन बनायी गयी है। इसे पार्टिकल एक्सलेरेटर यानी कणों की रफ्तार तेज करने वाली मशीन कहा जाता है। इसका इस्तेमाल करके वैज्ञानिकों ने उन सूक्ष्म कणों का अध्ययन करना शुरू किया जिनसे मिलकर सृष्टि की हर चीज बनती है। इसके जरिए वैज्ञानिक ठीक उसी तरह की परिस्थितियाँ पैदा करना चाहते थे जैसी कि महाविस्फोट के समय हुई थीं। उस महामशीन में अरबों सूक्ष्म कण एक-दूसरे से उल्टी दिशा में जबर्दस्त रफ्तार से चलते हुए आमने-सामने से टकराये जाते हैं जिससे कि जबर्दस्त ऊर्जा पैदा होती है। प्रकृति में प्रकाश की गति सबसे तेज यानी लगभग तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकण्ड होती है। इस मशीन में वैज्ञानिकों ने प्रकाश की गति की 99.99 प्रतिशत रफ्तार से कणों को चलाकर एक-दूसरे से टकराने में कामयाबी हासिल की। इतनी प्रचण्ड गति से हुई टकराहट के कारण कुछ ऐसे कण पैदा होते हैं जो केवल बहुत अधिक ऊर्जा पर ही अस्तित्व में आते हैं। विशेष डिटेक्टर यंत्रों द्वारा इन कणों का अध्ययन किया जाता है। दुनिया के करीब 110 देशों के वैज्ञानिकों की टीमें इस अध्ययन में लगी हुई हैं। इन विस्फोटों से पैदा होने वाले आँकड़ों का अम्बार कितना अधिक है, इसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि एल.एच.सी. मशीन में हर एक सेकण्ड में लगभग 60 करोड़ टक्करें होती हैं।

वर्ष 2008 से वैज्ञानिक लगातार इन प्रयोगों में जुटे हुए थे लेकिन उन्हें सफलता मिलने की सम्भावना कम ही लग रही थी। मगर इस वर्ष अप्रैल से लेकर 18 जून तक लार्ज हैड्र न कोलाइडर मशीन में हुए प्रयोगों के अध्ययन से ऐसा लगने लगा था कि वैज्ञानिक आखिर उस छुपे रुस्तम के आसपास पहुँच गये हैं। 4 जुलाई को यह घोषणा की गयी कि आखिरकार हिग्स बोसोन जैसे कण की मौजूदगी का पता चल गया है। लेकिन अभी इसे पूरी तरह साबित करने के लिए वैज्ञानिकों को कई महीने तक काम करना पड़ेगा। अगर यह वही हिग्स बोसोन है

जिसकी तलाश थी, तो ब्रह्माण्ड के बारे में विज्ञान अब तक जो कहता आया है, उसकी पुष्टि हो जायेगी। और अगर पता चलता है कि यह उससे मिलता-जुलता कोई नया कण है तो भी बहुत बड़ी कामयाबी होगी। इससे फिर बहुत-सी नयी और उत्तेजक वैज्ञानिक खोजों के लिए रास्ता खुल जायेगा। यह कुछ ऐसा ही होगा जैसे आपको थोड़ी दूरी पर एक जाना-पहचाना चेहरा नजर आता है, और आप सोचते हैं कि ये आपका वही गहरा दोस्त है जिसकी आपको काफी समय से तलाश थी। लेकिन पास जाने पर आप देखते हैं कि वह तो आपके दोस्त का जुड़वाँ भाई है जिसके साथ मिलकर आप फिर नयी-नयी यात्राओं पर निकल सकते हैं। इस खोज से मनुष्यता को क्या मिलेगा ?

पहली बात यह कि इस खोज से कुदरत को समझने का इन्सान का सफर खत्म नहीं होता, बल्कि यहाँ से नयी शुरुआत होगी। इस विराट ब्रह्माण्ड में अभी बहुत कुछ खोजने और जानने को पड़ा हुआ है। ब्रह्माण्ड में एक चींटी से लेकर करोड़ों मील दूर स्थित नक्षत्र तक, जो कुछ भी हम देखते हैं वह सामान्य कणों से मिलकर बना है। इन सब कणों को एक साथ पदार्थ (मैटर) कहते हैं, जिससे कि ब्रह्माण्ड का 4 प्रतिशत बना हुआ है। माना जाता है कि बाकी 96 प्रतिशत हिस्सा डार्क मैटर और डार्क एनर्जी से मिलकर बना है, लेकिन उनका पता लगाना और अध्ययन करना वैज्ञानिकों के लिए अब तक एक चुनौती बना हुआ है। इस प्रयोग से आगे चलकर ब्रह्माण्ड के इस अनजान अँधेरे हिस्से पर भी रोशनी पड़ सकती है।

दूसरे, यह नहीं भूलना चाहिए कि बीसवीं सदी की शुरुआत में जब महान वैज्ञानिक अर्नेस्ट रदरफोर्ड ने परमाणु की बुनियादी संरचना का पता लगाया था कि इसमें एक नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाते हुए इलेक्ट्रॉन होते हैं, तो किसी ने भी नहीं सोचा था कि इस खोज से कैसे परिणाम निकलेंगे। जेम्स व टसन और फ्रांसिस क्रिक नाम के दो वैज्ञानिकों ने जब डीएनए की संरचना की खोज की थी तो भी ऐसा ही हुआ था। लेकिन आज हम जानते हैं कि परमाणु विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान के लिए इन दो खोजों का कितना बड़ा महत्व था। निश्चित तौर पर, हिग्स बोसोन जैसे कणों की खोज और सर्न के महाप्रयोग से भी कई व्यावहारिक लाभ सामने आ सकते हैं। लेकिन यहीं पर एक बड़ा सवाल हमारे सामने आकर खड़ा हो जाता है। आज विज्ञान और तकनोलोजी आजाद नहीं हैं। उनसे होने वाली खोजों का किसके फायदे के लिए और क्या इस्तेमाल किया जाये, यह फैसला समूची इन्सानियत के हाथों में नहीं है। विज्ञान और तकनोलोजी भी उन्हीं वर्गों के हाथों बन्धक हैं जिन वर्गों का उत्पादन के सारे साधनों पर कब्जा है। जिस तरह कारखानों में काम करने वाले मजदूर मुनाफा पैदा करने के लिए पूँजीपतियों के गुलाम बना दिये गये हैं, उसी तरह बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में काम करने वाले वैज्ञानिक अपने को आजाद भले ही समझते हों, पर हकीकत में वे भी पूँजी के चाकर ही बनकर रह गये हैं। यही कारण है कि विज्ञान की शानदार तरक्की का लाभ दुनिया के ९० प्रतिशत लोगों तक पहुँचता ही नहीं। आज इन्सान चाँद और मंगल ग्रह पर पानी की खोज कर रहा है लेकिन धरती के बहुत बड़े हिस्से में करोड़ों लोग आज भी गन्दा पीने को मजबूर हैं। यही वजह है कि विज्ञान और तकनीक की हर नयी प्रगति करोड़ों मेहनतकशों की जिन्दगी को आसान बनाने के बजाय उनके लिए और अधिक शोषण, बेरोजगारी और बदहाली लेकर आती है। विज्ञान को समस्त मानवता की सेवा में लगाने के लिए जरूरी है कि इस दुनिया को उलट-पलट दिया जाये। लूट और मुनाफे पर टिकी समाज व्यवस्था का नाश करके एक ऐसी व्यवस्था बनायी जाये जो सबके लिए इंसाफ, भाईचारे और बराबरी पर कायम हो। इसके लिए भी हमें विज्ञान को जानना और समझना होगा। दुनिया को चलाने वाले नियमों को जानना होगा और समाज को चलाने वाले नियमों को भी समझना होगा। हमें सवाल उठाना सीखना होगा और उन सवालों के जवाब ढूँढ़ने की हिम्मत जुटानी होगी।

***

वानर के नर बनने में श्रम की भूमिका

(मनुष्य के हाथ श्रम की उपज हैं)

-फ्रेडरिक एंगेल्स (1876)

(फ्रेडरिक एंगेल्स (28 नवंबर, 1820 -5 अगस्त, 1895 - एक जर्मन समाजशास्त्री एवं दार्शनिक थे। एंगेल्स और उनके साथी साथी कार्ल मार्क्स मार्क्सवादके सिद्धांत के प्रतिपादन का श्रेय प्राप्त है। एंगेल्स ने 1845 में इंग्लैंड के मजदूर वर्ग की स्थिति पर द कंडीशन ऑफ वर्किंग क्लास इन इंग्लैंड नामक पुस्तक लिखी। उन्होंने मार्क्स के साथ मिलकर 1848 में कम्युनिस्ट घोषणापत्र की रचना की और बाद में अभूतपूर्व पुस्तक (पूंजी) दास कैपिटल को लिखने के लिये मार्क्स की आर्थिक तौर पर मदद की। मार्क्स की मौत हो जाने के बाद एंगेल्स ने पूंजी के दूसरे और तीसरे खंड का संपादन भी किया। एंगेल्स ने अतिरिक्त पूंजी के नियम पर मार्क्स के लेखों को जमा करने की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई और अंत में इसे पूंजी के चौथे खंड के तौर पर प्रकाशित किया गया।)

अर्थशास्त्रियों का दावा है कि श्रम समस्त संपदा का स्रोत है। वास्तव में वह स्रोत है, लेकिन प्रकृति के बाद। वही इसे वह सामग्री प्रदान करती है जिसे श्रम संपदा में परिवर्तित करता है। पर वह इस से भी कहीं बड़ी चीज है। वह समूचे मानव-अस्तित्व की प्रथम मौलिक शर्त है, और इस हद तक प्रथम मौलिक शर्त है कि एक अर्थ में हमें यह कहना होगा कि स्वयं मानव का सृजन भी श्रम ने ही किया। लाखों वर्ष पूर्व, पृथ्वी के इतिहास के भू-विज्ञानियों द्वारा तृतीय कहे जाने वाले महाकल्प की एक अवधि में, जिसे अभी ठीक निश्चित नहीं किया जा सकता है, पर जो संभवतः इस तृतीय महाकल्प का युगांत रहा होगा, कहीं ऊष्ण कटिबंध के किसी प्रदेश में -संभवत- एक विशाल महाद्वीप में जो अब हिंद महासागर में समा गया है -मानवाभ वानरों की विशेष रूप से अतिविकसित जाति रहा करती थी। डार्विन ने हमारे इन पूर्वजों का लगभग यथार्थ वर्णन किया है। उन का समूचा शरीर बालों से ढका रहता था, उन के दाढ़ी और नुकीले कान थे, और वे समूहों में पेड़ों पर रहा करते थे। संभवतः उन की जीवन-विधि, जिस में पेड़ों पर चढ़ते समय हाथों और पावों की क्रिया भिन्न होती है, का ही यह तात्कालिक परिणाम था कि समतल भूमि पर चलते समय वे हाथों का सहारा कम लेने लगे और अधिकाधिक सीधे खड़े हो कर चलने लगे। वानर से नर में संक्रमण का यह निर्णायक पग था।

सभी वर्तमान मानवाभ वानर सीधे खड़े हो सकते हैं और पैरों के बल चल सकते हैं, पर तभी जब सख्त जरूरत हो, और बड़े भौंडे ढंग से ही। उन के चलने का स्वाभाविक ढंग आधा खड़े हो कर चलना है, और उस में हाथों का इस्तेमाल शामिल होता है। इन में से अधिकतर मुट्ठी की गिरह को जमीन पर रखते हैं, और पैरों को खींच कर शरीर को लम्बी बाहों के बीच से झुलाते हैं, जिस तरह लंगड़े लोग बैसाखी के सहारे चलते हैं। सामान्यतः वानरों में हम आज भी चौपायों की तरह चलने से ले कर पांवो पर चलने के बीच की सभी क्रमिक मंजिलें देख सकते हैं। पर उन में से किसी के लिए भी पावों के सहारे चलना एक आरजी तदबीर से ज्यादा कुछ नहीं है। हमारे लोमश पूर्वजों में सीदी चाल के पहले नियम बन जाने और उस के बाद अपरिहार्य बन जाने का तात्पर्य यह है कि बीच के काल में हाथों के लिए लगातार नए नए काम निकलते गए होंगे। वानरों तक में हाथों और पांवो के उपयोग में एक विभाजन पाया जाता है। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, चढ़ने में हाथों

का उपयोग पैरों से भिन्न ढंग से किया जाता है। जैसा कि निम्न जातीय स्तनधारी जीवों में आगे के पंजे के इस्तेमाल के बारे में देखा जाता है, हाथ प्रथमतः आहार संग्रह, तता ग्रहण के काम आते हैं। बहुत से वानर वृक्षों में अपने लिए डेरा बनाने के लिए हाथों का इस्तेमाल करते हैं अथवा चिंपाजी की तरह वर्षा-धूप से रक्षा के लिए तरुशाखाओं के बीच छत सी बना लेते हैं। दुश्मन से बचाव के लिए वे अपने हाथों से डण्डा पकड़ते हैं या दुश्मनों पर फलों अथवा पत्थरों की वर्षा करते हैं। बंदी अवस्था में वे मनुष्यों के अनुकरण से सीखी गई सरल क्रियाएँ अपने हाथों से करते हैं। लेकिन ठीक यहीं हम देखते हैं कि मानवाभ से मानवाभ वानरों के अविकसित हाथ और लाखों वर्षों के श्रम द्वारा अति परिनिष्पन्न मानव हाथ सैंकड़ों ऐसी क्रियाएँ संपन्न कर सकते हैं जिन का अनुकरण किसी भी वानर के हाथ नहीं कर सकते। किसी भी वानर के हाथ पत्थर की भोंडी छुरी भी आज तक नहीं गढ़ सके हैं। अतः आरंभ में वे क्रियाएँ अत्यंत सरल रही होंगी, जिन के लिए हमारे पूर्वजों ने वानर से नर में संक्रमण के हजारों वर्षों में अपने हाथों को अनुकूलित करना धीरे-धीरे सीखा होगा। फिर भी निम्नतम प्राकृत मानव भी, वे प्राकृत मानव भी जिन में हम अधिक पशुतुल्य अवस्था में प्रतिगमन तथा उस के साथ ही साथ शारीरिक अपह्रास का घटित होना मान ले सकते हैं, इन अंतर्वर्ती जीवों से कहीं श्रेष्ठ हैं। मानव हाथों द्वारा पत्थर की पहली छुरी बनाए जाने से पहले शायद एक ऐसी अवधि गुजरी होगी जिस की तुलना में ज्ञात ऐतिहासिक अवधि नगण्य सी लगती है। किन्तु निर्णयक पग उठाया जा चुका था। हाथ मुक्त हो गया था और अब से अधिकाधिक दक्षता एवं कुशलता प्राप्त कर सकता था। तथा इस प्रकार प्राप्त उच्चतर नमनीयता वंशागत होती थी और पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती जाती थी। अतः हाथ केवल श्रमेन्द्रिय ही नहीं हैं, वह श्रम की उपज भी है। श्रम के द्वारा ही, नित नयी क्रियाओं के प्रति अनुकूलन के द्वारा ही, इस प्रकार उपार्जित पेशियों, स्नायुओं- और दीर्घतर अवधियों में हड्डियों-के विशेष विकास की वंशागतता के द्वारा ही, तथा इस वंशागत पटुता के नए, अधिकाधिक जटिल क्रियाओं मे नित पुनरावृत्त उपयोग के द्वारा ही मानव हाथ ने वह उच्च परिनिष्पन्नता प्राप्त की है जिस की बदौलत राफायल की सी चित्रकारी, थोर्वाल्दसेन की सी मूर्तिकारी और पागनीनी का सा संगीत आविर्भूत हो सका। मनुष्य के वाक् और मस्तिष्क का विकास परन्तु हाथ अपने आप में ही अस्तित्वमान न था। वह तो एक पूरी अति जटिल शरीर-व्यवस्था का एक अंग मात्र था। और जिस चीज से हाथ लाभान्वित हुआ, उस से वह पूरा शरीर भी लाभान्वित हुआ जिस की हाथ खिदमत करता था। यह दो प्रकार से हुआः

पहली बात यह कि शरीर उस नियम के परिणामस्वरूप लाभान्वित हुआ जिसे डार्विन विकास के अंतःसंबंध का नियम कहते थे। इस नियम के अनुसार किसी जीव के अलग-अलग अंगों के विशेष रूप से उन से असंबद्ध अन्य अंगों के कतिपय रूपों के साथ आवश्यक तौर पर जुड़े हुए होते हैं। जैसे, उन सभी पशुओं में, जिन में कोशिका केंद्रकों के बिना लाल रक्त कोशिकाएँ होती हैं और जिन में सिर का पृष्ठ भाग दुहरी संधि (अस्थिकंद) के द्वारा प्रथम कशेरूक के साथ जुड़ा होता है, निरपवाद रूप में अपने बच्चों को स्तनपान कराने के लिए दुग्ध ग्रंथियाँ भी होती हैं। इसी तरह जिन स्तनधारी जीवों में अलग-अलग खुर पाया जाता है। कतिपय रूपों में परिवर्तन के साथ शरीर के अन्य भागों में भी परिवर्तन होते हैं, यद्यपि इस सह-संबंध की हम कोई व्याख्या नहीं कर सकते। नीली आँखों वाली बिल्कुल सफेद बिल्लियाँ सदा, प्रायः बहरी होती हैं। मानव हाथ के शनैः शनैः अधिकाधिक परिनिष्पन्न होने और उसी अनुपात में पैरों को सीधी चाल के लिए अनुकूलित होने की, इस अंतः सबंध के नियम की बदौलत, निस्संदिग्ध रुप से शरीर के अन्य भागों में प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई, पर इस क्रिया की अभी इतनी कम जाँच पड़ताल की गई है कि हम यहाँ तथ्य को सामान्य शब्दों में प्रस्तुत करने से अधिक कुछ नहीं कर सकते। इस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है शेष शरीर पर हाथ के विकास की प्रत्यक्ष श्यमान प्रतिक्रिया। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, हमारे पूर्वज, मानवाभ वानर, यूथचारी थे। प्रकट है कि सब से अधिक सामाजिक पशु-मनुष्य-का व्युत्पत्ति संबंध किन्हीं अयूथचारी निकटतम पूर्वजों से स्थापित करने की चेष्टा असम्भव

है। हाथ के विकास के साथ, श्रम के साथ आरंभ होने वाली प्रगति पर विजय ने प्रत्येक अग्रगति के साथ मानव के क्षितिज को व्यापक बनाया। मनुष्य को प्राकृतिक वस्तुओं के नए-नए और अब तक अज्ञात गुणधर्मो का लगातार पता लगता जा रहा था। दूसरी ओर, श्रम के विकास ने पारस्परिक सहायता, सम्मिलित कार्यकलाप के उदाहरणों को बढ़ा कर और प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस सम्मिलित कार्य कलाप की लाभप्रदता स्पष्ट कर के समाज के सदस्यों को एक दूसरे के निकटतर लाने में आवश्यक रूप से मदद दी। संक्षेप में, विकसित होते मानव उस बिंदु पर पहुँचे जहाँ उन्हें एक दूसरे से कुछ कहने की जरूरत महसूस होने लगी। इस वाकप्रेरणा से धीरे-धीरे पर निश्चित रूप से काया पलट हुआ, जिस से कि लगातार और भी विकसित मूर्च्छना पैदा हो, और मुख के प्रत्यंग एक-एक कर नयी-नयी संहित ध्वनियों का उच्चारण करना धीरे-धीरे सीखते गए।

पशुओं के साथ तुलना करने से सिद्ध हो जाता है कि यह व्याख्या ही एकमात्र सही व्याख्या है कि श्रम से और श्रम के साथ भाषा की उत्पत्ति हुई। अधिक से अधिक विकसित पशु भी एक दूसरे से बात करने की अपनी अतिस्वल्प आवश्यकता संहित वाणी की सहायता के बिना ही पूरी कर सकते हैं। प्राकृतिक अवस्था में मानव वाणी न बोल सकने अथवा न समझ सकने के कारण कोई पशु दिक्कत नहीं महसूस करता। किन्तु मनुष्य द्वारा पालतू बना लिए जाने पर बात बिल्कुल और ही होती है। मानव संगति के कारण कुत्तों और घोड़ों में संहित वाणी ग्रहण करने की ऐसी शक्ति विकसित हो जाती है कि वे, अपने विचार-वृत्त की सीमा के अंदर किसी भी भाषा को समझ लेना आसानी से सीख लेते हैं। इस के अतिरिक्त उन्हों ने मानव के प्रति प्यार और कृतज्ञता जैसे आवेग-जो पहले उन के लिए एकदम अनजान थे-महसूस करने की क्षमता विकसित कर ली है। ऐसे जानवरों से अधिक लगाव रखनेवाला कोई भी व्यक्ति यह माने बिना शायद ही रह सकता है कि ऐसे कितने ही जानवरों की मिसालें मौजूद हैं जो अब यह महसूस करते हैं कि उन का बोल न सकना एक खामी है, यद्यपि उन के स्वरांगों के खास दिशा में अति विशेषातीत होने के कारण यह खामी दुर्भाग्यवश अब दूर नहीं की जा सकती। पर जहाँ ये अंग मौजूद हैं, वहाँ कुछ सीमाओं के भीतर यह असमर्थता भी मिट जाती है। कहने की जरूरत नहीं कि पक्षियों के मुखांग मनुष्य के मुखांगों से अधिकतम भिन्न होते हैं, फिर भी पक्षी ही एक मात्र जीव हैं जो बोलना सीख लेते हैं। और सब से कर्कश स्वर वाला पक्षी-तोता सब से अच्छा बोल सकता है। यह आपत्ति नहीं की जानी चाहिए कि तोता जो बोलता है, उसे समझता नहीं है। यह सही है कि मानवों के साथ रहने और बोलने के सुख मात्र के लिए तोता लगातार घंटों टाँय-टाँय करता जाएगा और अपना संपूर्ण शब्द भंडार लगातार दुहराता रहेगा। पर अपने विचार-वृत्त की सीमा के अंदर वह जो बोलता है उसे समझना भी सीख सकता है। किसी तोते को इस तरह से गालियाँ बोलना सिखा दीजिए कि उसे इन के अर्थ का थोड़ा आभास हो जाए (उष्ण देशों की यात्रा करने वाले जहाजियों का यह एक प्रिय मनोरंजन का साधन है), इस के बाद उसे छेड़िए। आप देखेंगे कि वह इन गालियों का बर्लिन के कुंजड़ों के समान ही सटीक उपयोग करेगा। ऐसा ही छोटी-मोटी चीजें मांगना सिखा देने पर भी होता है। पहले श्रम, उस के बाद और उस के साथ वाणी-ये ही दो सब से सारभूत उद्दीपनाएँ थीं जिन के प्रभाव से वानर का मस्तिष्क धीरे-धीरे मनुष्य के मस्तिष्क में बदल गया, जो सारी समानता के बावजूद वानर के मस्तिष्क से कहीं बड़ा और अधिक परिनिष्पन्न है। मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ ही उस के सब से निकटस्थ करणों, ज्ञानेन्द्रियों का विकास हुआ। जिस तरह वाणी के क्रमिक विकास के साथ अनिवार्य रूप से श्रवणेंद्रियों का तदनुरूप परिष्कार होता है, ठीक उसी तरह से समग्र रूप में मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ सभी ज्ञानेन्द्रियों का परिष्कार होता है। उकाब मनुष्य से कहीं अधिक दूर तक देख सकता है, परन्तु मनुष्य की आँखें चीजों में बहुत कुछ ऐसा देख सकती हैं कि जो उकाब की आँखें नहीं देख सकतीं। कुत्ते में मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र घ्राणशक्ति होती है, परन्तु वह उन गंधों के सौवें भाग की भी अनुभूति नहीं कर सकता जो मनुष्य के लिए भिन्न-भिन्न वस्तुओं की द्योतक होती हैं। और स्पर्श शक्ति, जो कच्चे से कच्चे आरंभिक रूप में भी वानर

के पास भी मुश्किल से ही होती है, केवल श्रम के माध्यम से स्वयं मानव हाथ के विकास के संग ही विकसित हुई है। मस्तिष्क और उस के सहवर्ती ज्ञानेन्द्रियों के विकास, चेतना की बढ़ती स्पष्टता, विविक्त विचारणा तथा विवेक की शक्ति की प्रतिक्रिया ने श्रम और वाणी दोनों को ही और विकास करते जाने की नित नवीन उद्दीपना प्रदान की। मनुष्य के अंतिम रूप से वानर से भिन्न हो जाने के साथ इस विकास का समाप्त होना तो दूर रहा, वह प्रबल प्रगति ही करता गया। हाँ, विभिन्न जनगण और विभिन्न कालों में इस विकास की मात्रा और दिशा भिन्न-भिन्न रही है। जहाँ-तहाँ स्थानीय अथवा अस्थाई पश्चगमन के कारण उस में व्यवधान भी पड़ा। पूर्ण विकसित मानव के उदय होने के साथ एक नए तत्व, अर्थात समाज के मैदान में आ जाने से इस विकास को एक और अग्रगति की प्रबल प्रेरणा मिली और दूसरी ओर अधिक निश्चित दिशाओं में पथनिर्देशन प्राप्त हुआ।

वानर से नर और लुटेरी अर्थव्यवस्था से पशुपालन तक पेड़ों पर चढ़ने वाले एक वानर-दल से मानव-समाज के उदित होने से निश्चय ही लाखों वर्ष - जिन का पृथ्वी के इतिहास में मनुष्य-जीवन के एक क्षण से अधिक महत्व नहीं है, गुजर गए होंगे। परन्तु उस का उदय हो कर रहा। और यहाँ फिर वानर-दल एवं मानव-समाज में हम क्या विशेष अंतर पाते हैं? अन्तर है, श्रम । वानर-दल अपने लिए भौगोलिक अवस्थाओं द्वारा अथवा पास-पड़ौस के अन्य वानर-दलों के प्रतिरोध द्वारा निर्णीत आहार-क्षेत्र में ही आहार प्राप्त कर के ही संतुष्ट था। वह नए आहार-क्षेत्र प्राप्त करने के लिए नयी जगहों में जाता था और संघर्ष करता था। परन्तु ये आहार क्षेत्र प्राकृतिक अवस्था में उसे जो कुछ प्रदान करते थे, उस से अधिक इन से कुछ प्राप्त करने की उस में क्षमता न थी। हाँ, उस ने अचेतन रूप से अपने मल-मूल द्वारा ही मिट्टी को उर्वर अवश्य बनाया। सभी संभव आहार क्षेत्रों पर वानर-दलों द्वारा कब्जा होते ही वानरों की संख्या अधिक से अधिक यथावत रह सकती थी। परंतु सभी पशु बहुत-सा आहार बरबाद करते हैं, इस के अतिरिक्त वे खाद्य पूर्ति की आगामी पौध को अंकुर रूप में ही नष्ट कर देते हैं। शिकारी अगले वर्ष मृग-शावक देने वाली हिरणी को नहीं मारता, परन्तु भेड़िया उसे मार डालता है। तरु-गुल्मों के बढ़ने से पहले ही उन्हें चर जाने वाली यूनान की बकरियों ने देश की सभी पहाड़ियों की नंगा बना दिया है। पशुओं की यह लुटेरू अर्थव्यवस्था उन्हें सामान्य खाद्यों के अतिरिक्त अन्य खाद्यों को अपनाने को मजबूर कर के पशु-जातियों के क्रमिक रूपांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, क्यों कि उस की बदौलत उन का रक्त भिन्न रासायनिक संरचना प्राप्त करता है और समूचा शारीरिक गठन क्रमशः बदल जाता है। दूसरी ओर पहले कायम हो चुकने वाली जातियाँ धीरे-धीरे विनष्ट हो जाती हैं। इस में कोई संदेह नहीं है कि इस लुटेरू अर्थ व्यवस्था ने वानर से मनुष्य में हमारे पूर्वजों के संक्रमण में प्रबल भूमिका अदा की है।

बुद्धि और अनुकूलन-क्षमता में औरों से कहीं आगे बढ़ी हुई वानर-जाति में इस लुटेरू अर्थव्यवस्था का परिणाम इस के सिवा और कुछ न हो सकता था कि भोजन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वनस्पतियों की संख्या लगातार बढ़ती जाए और पौष्टिक वनस्पतियों के अधिकाधिक भक्ष्य भागों का भक्षण किया जाए। सारांश यह कि इस से भोजन अधिकाधिक विविधतायुक्त होता गया और इस के परिणामस्वरूप शरीर में ऐसे पदार्थ प्रविष्ट हुए, जिन्हों ने वानरों के मनुष्य में संक्रमण के लिए रासायनिक आधार का काम किया। परंतु अभी यह सब इस शब्द के अर्थ में श्रम नहीं था। श्रम औजार बनाने के साथ आरंभ होता है हमें जो प्राचीनतम औजार- वे औजार जिन्हें प्रागैतिहासिक मानव की दाय वस्तुओं के आधार पर तथा इतिहास में ज्ञात प्राचीनतम जनगण एवं आज की जांगल से जांगल जातियों की जीवन पद्यति के आधार पर हम प्राचीनतम् कह सकते हैं -मिले हैं, वे क्या हैं? वे शिकार और मछली मारने के औजार हैं जिन में से शिकार के औजार आयुधों का भी काम देते थे। परंतु शिकार और मछली मारने की वृत्ति के लिए यह पूर्वमान्य है कि शुद्ध शाकाहार से उस के साथ-साथ संक्रमण की प्रक्रिया में यह एक और महत्वपूर्ण कदम है।

-क्रमश

★★★

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा को प्राप्त सहयोग

फरियाद सिंह सनियाणा ने अपनी पुत्री डा.नवप्रीत कौर की शादी डा. गुरविंदर सिंह के साथ होने के उपलक्ष्य में सोसायटी को रु. **2100/-** (दो हज़ार एक सौ रुपये) का सहयोग भेजा। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनका धन्यवाद करती है।

रागणी

दीन धर्म का टीका

-रामेश्वर दास 'गुप्त'

हिंदू, सिख इसाई हो गे, ना रहे गे भाई-भाई हम
जात-पात और दीन-धर्म की, क्यूकर पाट्टैं खाई हम

हिन्दूस्तान हिन्दुओं का, ये ठोक कै बात बतावैं,
पले-बढ़े जो भारत म्हां, वो लोग कड़ै ईब जावैं।
सहनशीलता और धर्म की, पाड़ कै जड़ैं दिखावैं,
जिसके गेल विचार मिलैं ना, गला घेटणा चाहवैं,
हिन्दू-वादी कट्टड़ पण, करें जिसकी कला सवाई हम।

दीन का टीका भर-भर कै, मुल्ला लोगा लगा रे सैं,
हम सैं मुसलमान भारत म्हारा, लोगां ना समझा रे सैं,
आपस के म्हां वैर बढ़ै, ऐसे जाल फैला रेसैं,
मस्जिदकिले बझाा राखे, वें सींगा माओी ठा रे सैं,
ठोक-ठोक कै भर रे, नफरत की करड़ाई हम।

प्रेम के आखर ढाई पढ़ कै, फेल करो इन चालां नै,
मंदिर-मस्जिद म्हं बंद करो, नफरत के दलालां नै,
भारत देश हमारा सब का, उँचा करो ख्यालां नै,
'रामेश्वर' की गेल मिल के, गेर द्यो इन दिवालां नै,
अपणा आपा खो कै नै, क्यूं बणे फिरैं कसाई हम।

-लेखक की पुस्तक 'च्यौंद कसूती(2010) में से

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

सलाम कृष्ण बरगाड़ी

1957-2002

मानव जीवन बेहद कीमती है और अल्पायु भी है। अपने लिए तो प्रत्येक आदमी जीता है परन्तु लोक कल्याण हित्त में जीने वाले विरले ही होते है। समाज हित में एवं खुशहाली के लिए जीने वाले जीवन के असली नायक होते है। ऐसे लोग ही अंधेरे में रोशनी की किरण बन कर समाज को रास्ता दिखाते है। ऐसी ही शखशीयत थे कृष्ण बरगाड़ी, जिन्होने अपना जीवन समाज हित में लगा दिया।

पंजाब में आतंकवाद के दौर के समकालीन ही साल 1984-85 में पंजाब में तर्कशील आन्दोलन की शुरूआत हुई थी, जिसमें अंधविश्वास एवं सदिवाहिता के विरुद्ध एक जबरदस्त सोच होने लगी थी उस समय में जब अपनों आजाद सोच लेकर जीना बेहद मुशिकल था आतंकवाद के विपरीत प्रत्येक व्यक्ति के दहशत के साएं में जीना होता है। इसी समय तर्कशील आंदोलन का एक काफिला बरगाड़ी (जिला फरीदकोट, पंजाब) से निकला, जिसका नेतृत्व देने वाले थे, साथी कृष्ण बरगाड़ी जिसने बाद में पंजाब में आन्दोलन के नेतृत्व किया और उनका जीवन लोक लहर को समर्पित रहा।

तर्कशील काफले वो बुलंदी पर ले जाने के जिए दिन रात एक कर दिया, अपने घर के ही मानसिक रोग मशवरा केन्द्र खोला, जिसमें आस-पास एवं दूर स्थानों के लोग मशवरे के लिए आने लगे। और उस दौर में अंधविश्वास से ग्रस्त लोगों को रोशनी मिली।

उन्होनें अपने अनुभव से सिद्ध किया कि मनुष्य लहर के साथ जुड़ कर ही बड़ा होता है। उन्होनें अपना जीवन तो तर्कशील आन्दोलन में समर्पित किया, साथ ही मृत्योपरांत मृत्क शरीर मैडीकल खोजों के लिए समर्पन करने का संकल्प लिया, जिसे परिवार के एवं तर्कशील साथियों के सहयोग से पूर्ण हुआ और हर प्रकार उत्तर भारत में स्वयं ही इच्छा से शरीर प्रदान करने वाले व्यक्ति बने। और अपने कर्म से तर्कशील आन्दोलन के नायक बनने का गौरव प्राप्त किया, और इनके उपरान्त ही मृत्क शरीर मेडीकल कालेज के दान करने का आन्दोलन चल पड़ा, जो अनवरत जारी है।

कृष्ण बरगाड़ी की स्मृति में तर्कशील समारोह - 2018

तर्कशील आन्दोलन के नायक कृष्ण बरगाड़ी की 16वीं बरसी के अवसर पर राज्य स्तरीय समारोह 10 फरवरी 2018 को सुबह 10:30 बजे तर्कशील भवन बरनाला में होगा। पहले सैशन में कृष्ण बरगाड़ी को आदरांजली अर्पित करने के बाद स्मृति पुरस्कार दिया जायेगा। दूसरा सैशन मानसिक रोगों की जानकारी, मुश्किलों के हल विषय पर चर्चा होगी जिस में मनोचिकित्सक डा. राज कुमार बांसल मुख्य वक्ता शामिल होंगे। सभी के समारोह में आमंत्रय दिया जाता है।

तामिल कवि की सोच को सलाम

इंकलाब के नाम से प्रसिद्ध तामिल कवि एवं लेखक साहुल हमीद के परिवार ने उनकी मृत्यु के उपरांत घोषित किया गया। साहित्य अकादमी पुरस्कार वापिस करने का फैसला किया। परिवार का कहना है कि वह सरकारी पुरस्कारों में विश्वास नहीं है। तमिल कवि का नाम भारतीय भाषाओं के उन 25 नाम में था जो साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुने गए थे। इंकलाब की लडकी आयिना ने कहा कि पहले भी उनका नाम सरकारी पुरस्कारों में शामिल हो चुका है लेकिन उन्होनें अपने जीवन में पहले भी इन्हें लेने से मना कर दिया था।

तर्कशील सम्मेलन कक्ष के उदघाटन एवं सम्मान समारोह के दृश्य

उद्‌घाटन के दृश्य

मंच पर उपस्थित अध्यक्षीय मंडल

समारोह में उपस्थि तर्कशील साथी

साथी भगवन्त यू. के. का सम्मान

शहीद भगत सिंह स्मृति चेतना परीक्षण के जीते हुए विद्यार्थियों का सम्मान

If undelivered please return to :

Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell, 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।